VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

PT 365

संस्कृति

Classroom Study Material

April 2022 - December 2022

8468022022, 9019066066

DELHI | JAIPUR | HYDERABAD | BHOPAL | GUWAHATI | RANCHI | LUCKNOW | PUNE | AHMEDABAD | CHANDIGARH | PRAYAGRAJ

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /Vision_IAS vision_ias www.visionias.in /VisionIAS_UPSC

फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2024

लाइव / ऑनलाइन कक्षाएं भी उपलब्ध

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- मौलिक अवधारणाओं की समझ के विकास एवं विश्लेषणात्मक क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- योजनाबद्ध तैयारी हेतु करेंट ओरिएंटेड अप्रोच
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- सीसैट कक्षाएं
- PT 365 कक्षाएं
- MAINS 365 कक्षाएं
- PT टेस्ट सीरीज
- मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज
- निबंध टेस्ट सीरीज
- सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन - शैली की कक्षाएं
- करेंट अफेयर्स मैगजीन

Scan the QR CODE *to* download **VISION IAS** app

DELHI		JAIPUR	LUCKNOW	BHOPAL
15 मार्च, 1 PM	10 जनवरी, 9 AM	5 अप्रैल, 3 PM	7 जून, 9 AM	5 जुलाई

#PrelimsIsComing
ABHYAAS 2023
ALL INDIA PRELIMS
(GS+CSAT) MOCK TEST SERIES

2 APRIL | 23 APRIL | 7 MAY

- All India ranking & detailed comparison with other students
- Vision IAS Post Test Analysis ™ for corrective measures and continuous performance improvement
- Closely aligned to UPSC pattern
- Available in ENGLISH/ हिन्दी

OFFLINE* IN 170+ CITIES

*SUBJECT TO GOVERNMENT REGULATIONS AND SAFETY OF THE STUDENTS

Register @ www.visionias.in/abhyaas

AGARTALA | AGRA | AHMADNAGAR | AHMEDABAD | AIZAWL | AJMER | ALIGARH | ALMORA | ALWAR | AMARAVATI | AMBALA | AMBIKAPUR | AMRAVATI | AMRITSAR | ANANTHAPURU | ASANSOL AURANGABAD | AYODHYA | BALLIA | BANDA | BAREILLY | BATHINDA | BEGUSARAI | BENGALURU | BHAGALPUR | BHADOHI | BHAVNAGAR | BHILAI | BHILWARA | BHOPAL | BHUBANESWAR | BIKANER | BILASPUR BOKARO | BULANDSHAHR | CHANDIGARH | CHANDRAPUR | CHENNAI | CHHATARPUR | CHITTOOR | COIMBATORE | CUTTACK | DAVANAGERE | DEHRADUN | DELHI-MUKHERJEE NAGAR | DELHI-RAJINDER NAGAR | DHANBAD | DHARAMSHALA | DHARWAD | DHULE | DIBRUGARH | DIMAPUR | DURGAPUR | ETAWAH | FARIDABAD | FATEHPUR | GANGTOK | GAYA | GHAZIABAD | GORAKHPUR GR NOIDA | GUNTUR | GURDASPUR | GURUGRAM | GUWAHATI | GWALIOR | HALDWANI | HARIDWAR | HAZARIBAGH | HISAR | HOWRAH | HYDERABAD | IMPHAL | INDORE | ITANAGAR | JABALPUR JAIPUR | JAISALMER | JALANDHAR | JAMMU | JAMNAGAR | JAMSHEDPUR | JAUNPUR | JHAJJAR | JHANSI | JODHPUR | JORHAT | KAKINADA | KALBURGI | KANNUR | KANPUR | KARIMNAGAR KARNAL | KASHIPUR | KOCHI | KOHIMA | KOLHAPUR | KOLKATA | KORBA | KOTA | KOTTAYAM | KOZHIKODE | KURNOOL | KURUKSHETRA | LATUR | LEH | LUCKNOW | LUDHIANA | MADURAI | MANDI MANGALURU | MATHURA | MEERUT | MIRZAPUR | MORADABAD | MUMBAI | MUNGER | MUZAFFARPUR | MYSURU | NAGPUR | NALANDA | NASIK | NAVI MUMBAI | NELLORE | NIZAMABAD NOIDA | ORAI | PALAKKAD | PANAJI | PANIPAT | PATIALA | PATNA | PRAYAGRAJ | PUDUCHERRY | PUNE | PURNIA | RAIPUR | RAJKOT | RANCHI | RATLAM | REWA | ROHTAK | ROORKEE | ROURKELA RUDRAPUR | SAGAR | SAMBALPUR | SATARA | SAWAI MADHOPUR | SECUNDERABAD | SHILLONG | SHIMLA | SILIGURI | SIWAN | SOLAPUR | SONIPAT | SRINAGAR | SURAT | THANE | THANJAVUR THIRUVANANTHAPURAM | THRISSUR | TIRUCHIRAPALLI | TIRUNELVELI | TIRUPATI | UDAIPUR | UJJAIN | VADODRA | VARANASI | VELLORE | VIJAYAWADA | VISAKHAPATNAM | WARANGAL

संस्कृति (Culture)

विषय-सूची

1. मूर्तिकला और स्थापत्य कला (Sculpture and Architecture) 4
   1.1. ओडिशा मंदिर स्थापत्य कला (Odisha Temple Architecture).... 4
   1.2. होयसल मंदिर (Hoysala Temples) 8
   1.3. चोल-कालीन मूर्तियां (Chola Era Idols) 10
   1.4. कुतुब शाही स्थापत्य कला (Qutb Shahi Architecture) 13
   1.5. महापाषाण स्थल (Megalithic Sites) 16
   1.6. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 17
2. चित्रकला और अन्य कलाएं (Paintings and Other Art Forms) 19
   2.1. पारंपरिक भारतीय वस्त्र (Traditional Indian Textiles).... 19
   2.2. भारतीय खिलौने (Toys of India) 20
   2.3. सुर्ख़ियों में रही कलाकृतियां (Crafts in News) 21
   2.4. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 22
3. सुर्ख़ियों में रहे महत्वपूर्ण स्थल (Important Sites in News)....25
   3.1. साइक्लोपियन वाल (Cyclopean Wall) 25
   3.2. लौह युग (Iron Age).... 26
   3.3. राखीगढ़ी (Rakhigarhi) 27
   3.4. महाकालेश्वर मंदिर (Mahakaleshwar Temple).... 30
   3.5. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अनंतिम सूची (UNESCO's Tentative List of World Heritage Sites).... 31
   3.6. अनंग ताल झील (Anang Tal Lake) 33
   3.7. मानगढ़ पहाड़ी (Mangarh hillock).... 34
   3.8. प्रसाद योजना के अंतर्गत परियोजनाएं (Projects under PRASHAD Scheme).... 34
   3.9. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 37
4. प्रमुख व्यक्ति (Personalities) 38
   4.1. आदि शंकराचार्य (Adi Shankaracharya).... 38
   4.2. स्वामी रामानुजाचार्य (Swami Ramanujacharya).... 39
   4.3. संत तुकाराम (Sant Tukaram) 40
   4.4. लचित बोरफुकन (Lachit Borphukan).... 41
   4.5. राजा राममोहन राय: भारतीय पुनर्जागरण के जनक (Raja Ram Mohan Roy: Father of Indian Renaissance). 42
   4.6. श्री अरबिंदो (Sri Aurobindo) 44
   4.7. छत्रपति शाहू महाराज (Chhatrapati Shahu Maharaj) 45
   4.8. अल्लूरी सीताराम राजू (Alluri Sitarama Raju) 46
   4.9. सुर्ख़ियों में रहे अन्य प्रमुख व्यक्ति (Other Important Personalities in News) 48

VISION IAS

© Vision IAS

5. बौद्ध धर्म और जैन धर्म (Buddhism and Jainism) 51

5.1. बांधवगढ़ वन अभ्यारण्य में पुरातात्विक अवशेष (Archaeological Remains in Bandhavgarh Forest Reserve) 53

5.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 54

6. विविध (Miscellaneous) 57

6.1. भारत में नौसेना की परंपराएं (Naval Traditions in India) 57

6.2. भारत के राजकीय प्रतीक (National Symbols of India) 59

6.3. भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन (Amendments to Flag Code of India) 59

6.4. भारत का राजकीय प्रतीक (State Emblem of India) 60

6.5. भारतीय मुद्राशास्त्र की एतिहासिक पृष्ठभूमि (Numismatic History of India) 61

6.6. पाणिनि कोड (Panini Code) 64

6.7. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सुरक्षा के लिए अभिसमय {Convention for Safeguarding of Intangible Cultural Heritage (ICH)} 65

6.8. स्वदेश दर्शन योजना (Swadesh Darshan Scheme) 67

6.9. भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication: GI) 68

6.10. सुर्ख़ियों में रहे अन्य GI टैग (Other GI tag in News) 71

6.11. त्योहार (Festivals) 72

6.11.1. बाली यात्रा (Baliyatra) 72

6.11.2. न्यू इयर मैप ऑफ़ इंडिया (New Year Map of India) 73

6.11.3. अन्य महत्वपूर्ण त्योहार (Other Important Festivals) 74

6.12. पुरस्कार एवं अवाड्र्स (Prizes and Awards) 76

6.13. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News) 78

6.14. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News) 79

VISION IAS

नोट

प्रिय अभ्यर्थियों,

PT 365 (हिंदी) डॉक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर विगत 1 वर्ष (365) की महत्वपूर्ण समसामयिकी को समेकित रूप से कवर किया गया है, ताकि प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके।

अभ्यर्थियों के हित में PT 365 डॉक्यूमेंट को और बेहतर बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित नवीन विशेषताओं को शामिल किया गया है:

संक्षेप में इन्फोग्राफिक्स: कुछ टॉपिक्स, जैसे–

- मंदिर एवं अन्य स्थापत्य कलाओं के बारे में
- अलग-अलग राजवंशों और सभ्यताओं से जुड़े तथ्य,
- महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में

आदि को सारांश के रूप में प्रस्तुत कर उन्हें इंटरएक्टिव इन्फोग्राफिक्स के रूप में शामिल किया गया है, ताकि उन्हें समझने में आसानी हो, सीखने का सहज अनुभव मिल सके और कंटेंट को बेहतर तरीके से याद रखना सुनिश्चित किया जा सके।

संगठनों से जुड़े इन्फोग्राफिक्स: क्विक रिवीजन को सुविधाजनक बनाने के लिए संबंधित आर्टिकल्स के साथ-साथ प्रमुख संगठनों से संबद्ध प्रीलिम्स ओरिएंटेड जानकारी दी गई है।

थंबनेल: महत्वपूर्ण जानकारी के सचित्र और इंटरैक्टिव थंबनेल जैसे कि "यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल की सूची" आदि को कंटेंट की आसान पहचान और क्विक रिविज़न के लिए जोड़ा गया है।

समेकित मानचित्र: इनका उपयोग GI टैग, त्योहारों, सुर्ख़ियों में रही जनजातियों आदि के बारे में भौगोलिक और प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने के लिए किया गया है।

क्या आप जानते: इन्हें प्रारंभिक परीक्षा से संबंधित अलग-अलग टॉपिक के बारे में अतिरिक्त जानकारी देने के लिए जोड़ा गया है।

क्विज़: अभ्यर्थी ने विषय को कितना बेहतर समझा है, इसके परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।

QUIZ SMART QUIZ	विषय की समझ और अवधारणाओं के स्मरण की अपनी क्षमता के परीक्षण के लिए आप हमारे ओपन टेस्ट ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर स्मार्ट क्विज़ का अभ्यास करने हेतु इस QR कोड को स्कैन कर सकते हैं।

न्यूज़ टुडे

- 4 पृष्ठों में कवर किया जाने वाला दैनिक समसामयिकी समाचार बुलेटिन।
- सुर्खियों के प्राथमिक स्रोत: द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस और पीआईबी (PIB)। अन्य स्रोतों में शामिल हैं. न्यूज ऑन एयर, द मिंट, इकोनॉमिक टाइम्स आदि।
- इसका उद्देश्य प्रचलित विभिन्न घटनाओं के बारे में जानने के लिए प्राथमिक स्तर की जानकारी प्रदान करना है।
- इसमें दो प्रकार के दृष्टिकोणों को शामिल किया गया है यथा:
  - दिवसीय प्राथमिक सुर्खियों – 180 से कम शब्दों में दिन की मुख्य सुर्खियों को शामिल किया गया है।
  - अन्य सुर्खियाँ– ये मूल रूप से समाचारों में आने वाली एक पंक्ति की जानकारियाँ हैं। यहां शब्द सीमा 80 शब्द है।
- यह अंग्रेजी और हिंदी दोनों माध्यमों में उपलब्ध है। हिंदी ऑडियो, विजन आईएएस हिंदी यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है।

1. मूर्तिकला और स्थापत्य कला (Sculpture and Architecture)

1.1. ओडिशा मंदिर स्थापत्य कला (Odisha Temple Architecture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, कलिंग स्थापत्य कला से संबद्ध ओडिशा के मंदिर कई घटनाओं के कारण चर्चा में रहे हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- **लिंगराज मंदिर और इससे संबद्ध आठ मंदिरों को एक विशेष कानून के तहत लाने के लिए** ओडिशा सरकार ने एक **अध्यादेश** जारी किया था। केंद्र सरकार ने ओडिशा सरकार के इस अध्यादेश का विरोध किया है।
- एक अन्य घटना में, ओडिशा सरकार के जगन्नाथ मंदिर के चारों ओर व्यापक पैमाने पर सौंदर्यीकरण परियोजना के निष्पादन में कुप्रबंधन पाए जाने को लेकर आपत्ति उठाई जा रही है।

इतिहास

- यह मंदिर भगवान जगन्नाथ को समर्पित है।
- मंदिर का निर्माण **12वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंश के प्रथम शासक राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव** ने करवाया था।

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

स्थापत्यकला से संबंधित विवरण

- जगन्नाथ का मुख्य मंदिर **कलिंग स्थापत्यकला शैली** में निर्मित है।
- दिन के किसी भी **समय मुख्य मंदिर की छाया जमीन पर नहीं पड़ती है।**
- **पवित्र त्रिमूर्ति** (भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा, और बड़े भाई बलभद्र) की मूर्तियां लकड़ी से बनी हैं।
- **मंदिरों पर नक्काशी मुख्य रूप से देवी–देवताओं की है।**

अन्य मुख्य विशेषताएं

- यहां **जगन्नाथ रथ यात्रा** का आयोजन होता है। **इसे रथ महोत्सव** भी कहा जाता है।
- जगन्नाथ पुरी मंदिर को **"यमनिका तीर्थ"** कहा जाता है।
- प्रवेश द्वार के सामने **अरुणा स्तंभ या सूर्य स्तंभ** है, जो मूल रूप से कोणार्क के सूर्य मंदिर में था।

इतिहास

- यह मंदिर ओडिशा के भुवनेश्वर में स्थित है। यह **भगवान शिव** को समर्पित है। इसे 'स्वयंभू' (स्वयं उत्पन्न शिवलिंग) कहा जाता है।
- **सोमवंशी राजवंश के राजा ययाति केशरी** ने 10वीं शताब्दी ईस्वी में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया था।
- 11वीं शताब्दी ई. में **राजा लालतेंदु केशरी** ने इस मंदिर का निर्माण कार्य संपन्न करवाया था।

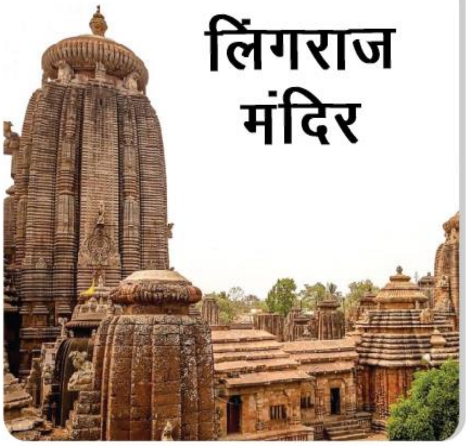

लिंगराज मंदिर

स्थापत्यकला से संबंधित विवरण

- यह विशाल मंदिर **कलिंग स्थापत्यकला की सर्वोत्कृष्टता** का प्रतिनिधित्व करता है।

  यह **मंदिर चार खंडों में विभाजित है**–
  - गर्भगृह (मुख्य मूर्ति स्थल),
  - यज्ञ शाला (प्रार्थना के लिए कक्ष),
  - भोग मंडप (अर्पण के लिए कक्ष) और
  - नाट्य शाला (नृत्य के लिए कक्ष)

अन्य मुख्य विशेषताएं

- यह मंदिर ओडिशा में **शैव और वैष्णव संप्रदायों के समन्वय** का प्रतीक है।
- शिवलिंग को **हरिहर** के नाम से जाना जाता है।
- मंदिर परिसर चारदीवारी से घिरा हुआ है। इसमें लगभग 50 छोटे मंदिर हैं। इनमें से एक **देवी पार्वती** को समर्पित है।

© Vision IAS

कलिंग स्थापत्यकला

स्थापत्यकला की शैली
नागर शैली की एक उप–शैली

इमारती पत्थर
सैंडस्टोन

अद्वितीय विशेषताएं

मंदिर के प्रकारः **रेखा देउल, पीढा देउल और खाखरा देउल।**

- **रेखा देउल, पीढा देउलः विष्णु, सूर्य और शिव मंदिरों से संबंधित हैं,**
- **खाखरा देउलः चामुंडा और दुर्गा मंदिरों से जुड़ा है।**

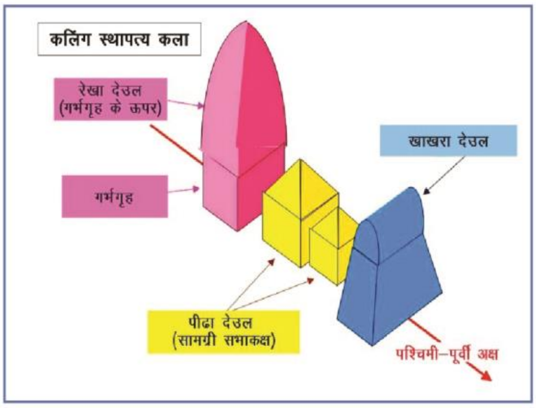

भागः मूल रूप से **एक मंदिर दो भागों** में बना होता है। इसका एक भाग शिखर (देउल) तथा दूसरा भाग सभाकक्ष (जगमोहन) होता है।

नक्काशीः देउल और जगमोहन दोनों संरचनाओं की दीवारों को भव्य रूप से स्थापत्य रूपांकनों और आकृतियों की प्रचुरता के साथ तराशा जाता है।

रेखा देउल और खाखरा देउलः ये गर्भगृह हैं।

पीढा देउलः इसमें नृत्य (नाट्य मंडप) और प्रसाद अर्पण सभाकक्ष (भोग मंडप) शामिल हैं।

प्रमुख स्मारक

सूर्य मंदिर, कोणार्क

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर

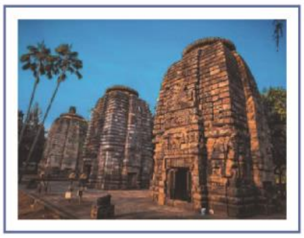
लक्ष्मणेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर

संबंधित सुर्ख़ियां

असुरगढ़ - ओडिशा की सबसे पुरानी किलेबंद बस्ती (नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व)

- इसे **ओडिशा की प्रमुख किलेबंद बस्तियों में सबसे पुरानी** मानी गई है।
  - पुरातत्वविदों ने इसकी तिथि निर्धारित करने के लिए **एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री (AMS) रेडियो कार्बन तकनीक** का उपयोग किया था। यह तकनीक **परमाणु भार (द्रव्यमान) में अंतर के आधार पर** अलग-अलग प्रकार के **परमाणुओं में विभेद करती** है।
- **ओडिशा के अन्य प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
  - **शिशुपालगढ़:** भुवनेश्वर के निकट,
  - **जौगढ़:** रुशिकुल्या घाटी (गंजम जिला) में एक किलेबंद बस्ती,
  - **खलकटपटना:** पुरी,
  - **माणिकपटना:** बंदरगाह स्थल (पुरी) आदि।

मुख्य निष्कर्ष

सांस्कृतिक विकास क्रम के तीन चरण

- **लौह युग**
  नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक,
- **प्रारंभिक ऐतिहासिक या प्राचीर चरण (Rampart phase)**
  दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी तक, तथा
- **उत्तरवर्ती चरण/ बसावट का पतन**
  दूसरी शताब्दी ईस्वी से तीसरी–चौथी शताब्दी ईस्वी तक।

प्राप्त पुरावशेष

- मूंगा, लाजवर्द, कार्नेलियन, कांच, जैस्पर, गार्नेट, सीप, सुलेमानी पत्थर (एगेट), दूधिया क्वार्ट्ज, टेराकोटा, चीनी मिट्टी और सेलखड़ी निर्मित मनके
- तथा ठीकरों एवं पत्थरों से बने गोलाकार डिस्क।

समकालीन स्थलों की तुलना में **जल प्रबंधन की अत्यधिक कुशल अभियांत्रिकी**

अन्य

- उत्खनन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राप्तियां हैं– पंचमार्क सिक्के और टोकन जो चांदी एवं तांबा धातुओं के मिश्रण से निर्मित हैं
- इनके अलावा तांबे से बनी शेर की लघुमूर्ति, सोने की चेन, टेराकोटा की गुहरें भी प्राप्त हुई हैं।

© Vision IAS

1.2. होयसल मंदिर (Hoysala Temples)

सुर्खियों में क्यों?

वर्ष 2022-2023 के लिए विश्व विरासत सूची[1] में शामिल किए जाने हेतु भारत की ओर से आधिकारिक तौर पर **कर्नाटक** के **बेलूर स्थित चन्नाकेशव मंदिर, हलेबिड स्थित होयसलेश्वर मंदिर** और **सोमनाथपुर स्थित केशव मंदिर** को नामांकित किया गया है।

होयसल स्थापत्यकला

स्थापत्यकला की शैली
मिश्रित या वेसर शैली

इमारती पत्थर
सोपस्टोनः अपेक्षाकृत मुलायम पत्थर

काल
10वीं से 14वीं शताब्दी

अद्वितीय विशेषताएं

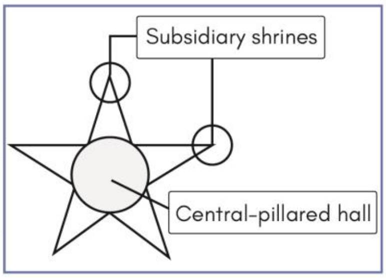

- **तारकीय योजनाः** इन मंदिरों की योजना एक तारे की तरह दिखाई देती है।
- **बारीक नक्काशीः** इसे देवताओं के आभूषणों में देखा जा सकता है, जिसे दीवारों पर सजाया गया है।
- **नक्काशीः** निचले भाग पर जानवरों और अन्य वनवासियों तथा उनके ऊपर देवताओं की विशाल मूर्तियों का उत्कीर्णनन किया गया है।
- **मूर्तियां:** मंदिर के भीतर की मूर्तियां **रामायण, महाभारत और भागवत पुराण के दृश्यों को दर्शाती हैं।**
- **समग्र डिजाइनः एक दोहरा भवन है,** जिसमें मंडप के लिए एक बड़ा कक्ष है। यह कक्ष नृत्य और संगीत का कार्यक्रम करने के लिए था। **प्रत्येक भवन से पहले एक नंदी मंडप है।**
- **मंडपः** खुले और बंद, दोनों मंडप पाए जा सकते हैं। मंडपों में गोलाकार स्तंभ हैं। मंडप की छत पौराणिक आकृतियों और पुष्प आकृतियों से अलंकृत हैं।
- **होयसल मंदिरों में विमान** भीतर से सरल है। हालांकि, बाहर से उन्हें भव्य रूप से अलंकृत किया गया है। विमान वह बिंदु है जहां **सबसे पवित्र स्थल मौजूद होता है।**
- **धार्मिक विषयवस्तुः** यह मंदिर **शैव परंपरा का अनुसरण करता है, किंतु इसमें जैन परंपरा की मूर्तियों के साथ–साथ वैष्णव और शाक्त परंपरा की विषयवस्तु भी मिलती है।**

मुख्य मंदिर

चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर

होयसलेश्वर मंदिर, हलेबिडु

केसव मंदिर, सोमनाथपुरा

होयसल मंदिरों के बारे में

- **होयसल के पवित्र स्मारक** 2014 से ही **यूनेस्को की अस्थाई सूची** में शामिल हैं।
- **ये संरक्षित स्मारक हैं।** इन स्मारकों का संरक्षण और रख-रखाव **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)**[2] द्वारा किया जाता है।

[1] World Heritage List

विश्व धरोहर स्थल सूची के बारे में

- विश्व धरोहर स्थलों का तात्पर्य **ऐसे स्थलों से है, जिन्हें उनके विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के कारण यूनेस्को द्वारा सूचीबद्ध किया गया है।**
- विश्व धरोहर स्थलों की सूची को **अंतर्राष्ट्रीय 'विश्व धरोहर कार्यक्रम[3]'** द्वारा तैयार किया जाता है। यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति इस कार्यक्रम का प्रबंधन या संचालन करती है।
- 1994 में विश्व धरोहर समिति ने एक प्रतिनिधिक, संतुलित और विश्वसनीय विश्व धरोहर सूची तैयार करने के लिए एक वैश्विक रणनीति निर्मित की थी। इस रणनीति का निर्माण **1972 के कन्वेंशन** का अनुपालन करते हुए किया गया था। **यह कन्वेंशन विश्व की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण से संबंधित है।**
- धरोहर स्थल **तीन प्रकार के हैं: सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित।**
    - भारत में **40 विश्व धरोहर स्थल** हैं। इनमें से **32 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित** स्थल है।

उपर्युक्त मंदिरों के बारे में अन्य तथ्य			
	चेन्नाकेशव मंदिर	**होयसलेश्वर मंदिर**	**केशव मंदिर**
समर्पित	• यह **एककूट अर्थात् पवित्र स्थल वाला मंदिर** है और यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।	• यह एक **द्विकूट (दो पवित्र स्थलों वाला) मंदिर है** और यह शिव को समर्पित है। • एक पवित्र स्थल राजा विष्णुवर्धन को और दूसरा उनकी रानी शांताला को समर्पित है। इसलिए इसे **शांतलेश्वर** भी कहा जाता है।.	• यह **तीन रूपों में भगवान कृष्ण** को समर्पित एक त्रिकूट मंदिर है -जनार्दन, केशव और वेणुगोपाल।
निर्माण / स्थापना	• **इसे 1117 ई. में राजा विष्णुवर्धन** द्वारा निर्मित करवाया गया था। • मंदिर उत्तर-पश्चिम में वीर बल्लाल द्वितीय द्वारा **एक सीढ़ीदार जलाशय** का निर्माण कराया गया था।	• **राजा विष्णुवर्धन**	• इसे **राजा नरसिंह तृतीय के संरक्षण में बनवाया गया था और यह विष्णु को समर्पित है।**
स्थापत्य विवरण	• तराशे गए बाहरी भाग में दैनिक जीवन, संगीत और नृत्य के दृश्यों को उत्कीर्ण किया गया है। साथ ही, **विष्णु के जीवन और उनके पुनर्जन्म** एवं महाकाव्यों **(रामायण व महाभारत)** के दृश्यों को भी उकेरा गया है। • इसमें **जैन धर्म और बौद्ध धर्म के चित्र** भी शामिल हैं। • मंदिर के **गर्भगृह में कृष्ण की मूर्ति** है।	• हलेबिड में एक दीवार वाला परिसर है। इसमें होयसल काल के **तीन जैन बसदियां (मंदिर)** के साथ-साथ एक सीढ़ीदार कुआं भी है। • मंदिर के भीतर की मूर्तियां **रामायण, महाभारत और भागवत पुराण के दृश्यों को दर्शाती** हैं।	• यह मंदिर **सेलखड़ी से बना है और खराद (Lathe) से बनाए गए स्तंभों,** संतुलित स्थापत्य कला एवं जटिल मूर्तिकला के लिए जाना जाता है। • केशव मंदिर में मिली मूर्तियां **भगवान विष्णु, भगवान गणेश, देवी लक्ष्मी और सरस्वती** की हैं।
जल निकाय/ नदी	• यह बेलूर में **यागची नदी** के तट पर निर्मित है।	• मूल रूप से **हलेबिड** को **द्वारसमुद्र** कहा जाता था, जिसका आशय एक बड़ा जल भंडार है।	• **कावेरी नदी के तट पर निर्मित है।**
अन्य	• **मौलवी द्वारा कुरान के अंश (पाठ) पढ़ने के बाद मंदिर में रथोत्सव या रथ उत्सव शुरू** हुआ।		• यह **अब पूजा स्थल के रूप में उपयोग नहीं किया जाता** है, क्योंकि यहां की मूर्तियों को खंडित कर दिया गया है और मुस्लिम सल्तनत की हमलावर सेनाओं द्वारा मंदिर को अपवित्र कर दिया गया था।

[2] Archaeological Survey of India

[3] World Heritage Programme

© Vision IAS

संस्थापकः नृप काम द्वितीय	होयसल राजवंश — 10वीं से 14वीं शताब्दी ईस्वी
प्रमुख शासक	• **विष्णुवर्धन रायः** आरंभ में **जैन धर्म** का अनुयायी था। बाद में **रामानुजाचार्य** से प्रभावित होकर **वैष्णव धर्म** अपना लिया था। • **वीर बल्लाल द्वितीयः** होयसलों को चालुक्यों की अधीनता से मुक्त कराया और एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की थी। • **नरसिम्हा तृतीयः** अंतिम शासक।
प्रमुख नगर	• **राजधानी नगरः बेलूर**, जिसे बाद में **द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेबिड)** स्थानांतरित कर दिया गया था।
आय के स्रोत/ संस्कृति	• आय का प्रमुख स्रोत **कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था से प्राप्त राजस्व** था। • स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा **किए गए खर्च पर निर्मित और अनुरक्षित तालाबों, जलाशयों, नहरों एवं कुओं सहित सिंचाई प्रणालियों पर कर एकत्र** किया जाता था। • इस दौरान **कन्नड़ और संस्कृत साहित्य** का विकास हुआ था।
भाषा	• **कन्नड़ और संस्कृत भाषा** का व्यापक स्तर पर प्रयोग होता था।
प्रशासन	• प्रशासन में **महिलाओं को महत्त्व** दिया गया था। • **वरिष्ठ मंत्रियों को पंच–प्रधान** कहा जाता था। **विदेश मामलों के जिम्मेदार मंत्री को संधिविग्रही** कहा जाता था। **प्रमुख खजांची को महाभंडारी या हिरण्यभंडारी** कहा जाता था। ये सभी मिलकर उच्च–स्तर का प्रशासन संभालते थे। • **सेना प्रमुख दंडनायक और होयसल राजदरबार में मुख्य न्यायाधीश धर्माधिकारी** कहलाता था।
सामाजिक–धार्मिक परिस्थितियां	• अलग–अलग **धर्मों के प्रति उदार व्यवहार** किया जाता था। • शिक्षा के कई केंद्र स्थापित किये गए थे। • होयसल शासन काल के दौरान लोग **शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्म का पालन** करते थे। वे तीन दार्शनिकों **बासवन्ना, माधवाचार्य और रामानुजाचार्य से प्रभावित थे।** • **भारतीय जाति प्रथा, देवदासी प्रथा और स्वैच्छिक रूप से सती होने की प्रथा** प्रचलित थी।
	होयसल वंश को विजयनगर वंश ने पराजित किया था।

1.3. चोल-कालीन मूर्तियां (Chola Era Idols)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्र सरकार की अनुमति के बाद **तमिलनाडु** ने **चोल-कालीन कांस्य की छह उत्कृष्ट मूर्तियों** को वापस लाने के लिए अमेरिकी अधिकारियों को दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं।

राजेंद्र चोल प्रथम (1014-44 ई.) के बारे में

- राजेंद्र चोल प्रथम, **राजराज चोल (985-1014 ई.) का पुत्र** था। उसने **गंगईकोंड चोल** की उपाधि धारण की थी।
- उसने **कला, धर्म और साहित्य** में अमूल्य योगदान दिया था। पाल राजा **महिपाल** पर विजय के बाद उसने **गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर का निर्माण** करवाया था।
    - उसने **परकेसरी और युद्धमल्ल** की उपाधि धारण की थी।

अन्य संबंधित तथ्य

- ये मूर्तियां **कल्लाकुरिची जिले के वीरचोलपुरम के नरेश्वर सिवन मंदिर** की हैं। इस मंदिर का निर्माण चोल राजवंश के शासक **राजेंद्र चोल प्रथम** ने करवाया था। इन मूर्तियों को 1960 के दशक में भारत से चोरी कर लिया गया था।
- चोरी की गई छह मूर्तियों में **त्रिपुरंतकम, त्रिपुरसुंदरी, नटराज, दक्षिणामूर्ति वीणाधारा, संत सुंदरार तथा उनकी पत्नी परवई नचियार की प्राचीन पंचलौह मूर्तियां** शामिल हैं।

  - **पंचलौह शिल्प शास्त्रों** द्वारा निर्धारित पारंपरिक पांच धातुओं का मिश्रण है।
  - इन मूर्तियों का निर्माण **लुप्त मोम की ढलाई तकनीक** का उपयोग करके किया गया था।
- **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972**[4] बिना लाइसेंस के ऐसी कलाकृतियों के निर्यात को एक आपराधिक कृत्य मानता है।
  - भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच **आपराधिक मामलों पर पारस्परिक कानूनी सहायता संधि** ऐसे मामलों पर पारस्परिक सहायता की अनुमति प्रदान करती है।

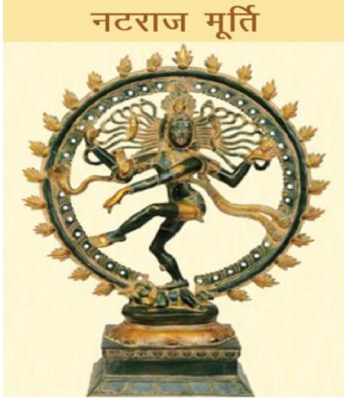

चोल मूर्तिकला के बारे में

- चोल काल अपनी **धातु मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध** है।
- इस काल की कांस्य प्रतिमाओं का निर्माण **सेरे परड्यू (cire perdue) या लुप्त मोम की ढलाई तकनीक का उपयोग** करके किया गया था। यह विधि आज भी भारत में प्रचलित है।
  - **यह धातु ढलाई की एक विधि है। इसके तहत एक पिघली हुई धातु को मोम मॉडल के माध्यम से बनाये गए एक सांचे अथवा आकार में डाला जाता है।**
  - एक बार जब यह सांचा बन जाता है, तो उसके बाद मोम मॉडल को अग्नि की सहायता से पिघला कर बाहर निकाल दिया जाता है।

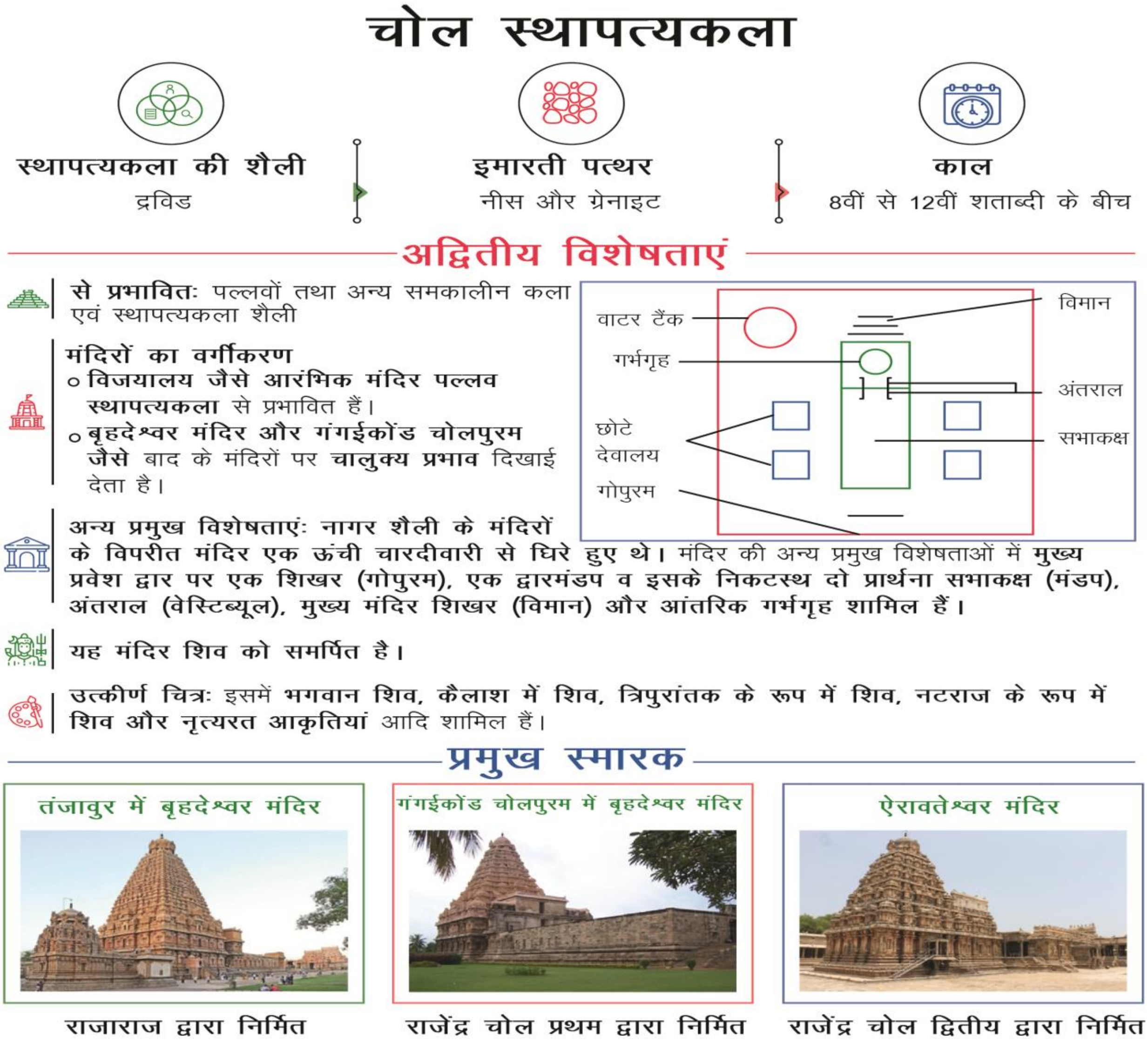

- **चोल कालीन कांस्य निर्मित नटराज प्रतिमा में चोलों के मुख्य देवता शिव को नृत्य मुद्रा** में दिखाया गया है। यह प्रतिमा अपनी सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस प्रतिमा की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

[4] Antiquities and Art Treasures Act, 1972

© Vision IAS

- इसमें शिव अपने **ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू (डमरू की ध्वनि सृष्टि के सृजन का प्रतीक है) धारण किए हुए हैं।**
- उनके **ऊपरी बाएं हाथ में शाश्वत अग्नि है (यह अग्नि ब्रह्मांड के विनाश का प्रतीक है)।**
- उनका **निचला दाहिना हाथ 'अभयहस्त मुद्रा' में है। यह भय को दूर करने का प्रतीक है।**
- इस **प्रतिमा में एक बौने जैसी आकृति को शिव के दाहिने पैर के नीचे दबा हुआ** दिखाया गया है। यह बौने जैसी आकृति **अज्ञानता व भ्रम का प्रतीक दैत्य 'अप्समार'** है। यह दैत्य मानव के पथभ्रष्ट होने का कारण है।
- शिव का **आगे वाला बायां हाथ उनके उठे हुए बाएं पैर को इंगित** करता है। **यह मोक्ष मार्ग का प्रतीक है।**

संस्थापकः विजयालय

चोल राजवंशः पल्लव राजवंश का उत्तराधिकारी

8वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी

प्रमुख शासक	• **परांतक प्रथमः** इसे मदुरै **(पांड्यों की राजधानी) को नष्ट करने वाला** कहा जाता था। सिंहली आक्रमणकारियों को पराजित किया तथा पांड्य राज्य पर भी अधिकार कर लिया था। • **राजराज चोल (985–1014 ई.):** इसने **उत्तरी श्रीलंका, लक्षद्वीप और मालदीव द्वीपों** पर अधिकार कर लिया था। • **राजेंद्र चोल-I (1014–1044 ई.):** इसने **गंगैकोंडचोल** की उपाधि धारण की थी। इसने मलय प्रायद्वीप और **मलय द्वीपसमूह के कुछ भागों को विजित** कर लिया था। • **कुलोत्तुंग प्रथमः** पूर्वी तट को चोल साम्राज्य में मिला लिया था। 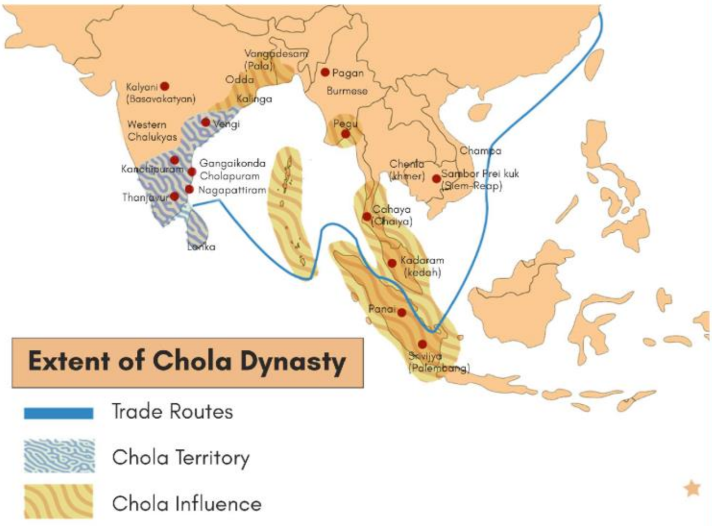
प्रमुख नगर	• **राजधानीः** तंजावुर (तंजौर) और बाद में **गंगैकोंडचोलपुरम।** • **क्षेत्रीय राजधानीः कांचीपुरम और मदुरै;** जिनमें कभी–कभी दरबार लगता था। • **वर्तमान क्षेत्रः** तमिलनाडु के पेरम्बलुर, अरियालुर, नागपट्टिनम, पुडुकोट्टई, वृद्धाचलम तथा पिचावरम जिले।
संस्कृति	• उन्होंने उत्कृष्ट **कांस्य मूर्तियों** की ढलाई की थी। मुख्य रूप से हिंदू देवताओं (**नटराज की कांस्य प्रतिमा**) की मूर्तियां बनाई जाती थी। • भूमि कर आय का सबसे बड़ा एकल स्रोत था। • **पुरावु–वरितिनैक–कटम** नामक भू–राजस्व की प्रणाली अस्तित्व में थी। • अधिकारियों को **जीविता** नाम से वेतन के रूप में भूखंड दिया जाता था।
भाषा	• राजभाषा **तमिल** थी। यह जनता के लिए **शिक्षा का माध्यम** भी थी। • **संस्कृत भाषा पूजा–पाठ के लिए प्रयोग** की जाने वाली भाषा थी।
प्रशासन	• चोलों ने एक कई वर्षों तक शासन किया था। • साम्राज्य को **प्रांतों** में विभाजित किया गया था, जिन्हें **मंडलम** के रूप में जाना जाता था। • प्रत्येक गाँव ने **स्वशासी इकाई** के रूप में कार्य किया था। • **राजा प्रमुख निर्णय लेने वाला केंद्रीय प्राधिकारी था।**
सामाजिक–धार्मिक परिस्थितियां	• चोल शासकों ने **बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैववाद और वैष्णववाद** सभी को संरक्षण प्रदान किया था। • समाज में उच्च स्तर की **साक्षरता और शिक्षा** की उपस्थिति थी। **संस्कृत शिक्षा ब्राह्मणों तक ही सीमित** थी। धार्मिक मठ (या गतिका) शिक्षा के केंद्र थे। • जाति का **'इडंगै' और 'वलंगै'** में विभाजन था। शाही परिवारों में **सती व देवदासी प्रथा जैसी प्रथाएं** प्रचलित थीं।
	चोल वंश को पांड्य वंश ने पराजित किया था।

PT 365 - संस्कृति

1.4. कुतुब शाही स्थापत्य कला (Qutb Shahi Architecture)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **गोलकोंडा या गोलकुंडा किले के कुतुब शाही मकबरे में स्थित बावड़ी को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को के एशिया-प्रशांत पुरस्कार (2022) से सम्मानित** किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **गोलकोंडा किले (तेलंगाना) की बावड़ी** 16वीं सदी में निर्मित एक कुआं है।
  - यह संरचना **फारसी शैली** में निर्मित है।
- इस स्मारक को **विशिष्टता (Distinction) का पुरस्कार** दिया गया है।
  - **यह पुरस्कार निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत दिया जाता है:** उत्कृष्टता पुरस्कार, विशिष्टता पुरस्कार, मेरिट पुरस्कार, विरासत के संदर्भ में नए डिजाइन के लिए पुरस्कार और सतत विकास के लिए विशेष मान्यता का पुरस्कार।

गोलकुंडा किले की बावड़ी

क्या आप जानते हैं?

- **यूनेस्को एशिया–प्रशांत पुरस्कार** की शुरुआत वर्ष 2000 में **सांस्कृतिक विरासत संरक्षण कार्यक्रम** के लिए की गई थी।
- यह एशिया–प्रशांत क्षेत्र में मौजूद विरासत की दृष्टि से महत्वपूर्ण संरचनाओं और इमारतों के पुनर्निर्माण, संरक्षण और रूपांतरण जैसे कार्यों में लगे **निजी व्यक्तियों और संगठनों के प्रयासों** को मान्यता देता है।

भारत के अन्य पुरस्कार विजेता स्मारक (2022)

उत्कृष्टता पुरस्कार	मेरिट पुरस्कार	
छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय मुंबई (महाराष्ट्र)	डोमकोंडा किला, कम्मारेड्डी, (तेलंगाना)	भायखला स्टेशन, मुंबई (महाराष्ट्र)
• यह संग्रहालय मुंबई की विश्व विरासत 'विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको' समूह का एक हिस्सा है। • पहले इसे **पश्चिमी भारत के 'प्रिंस ऑफ वेल्स' संग्रहालय के रूप में जाना** जाता था।	• इसे **18वीं शताब्दी** के दौरान बनाया गया था। • इसमें **ग्रेनाइट चट्टानों का एक ऊंचा परिसर है, जो किले की दीवार** का निर्माण करता है।	• यह **एशिया का सबसे पुराना रेलवे स्टेशन** है। यह **1853 ई.** से परिचालन में है।
	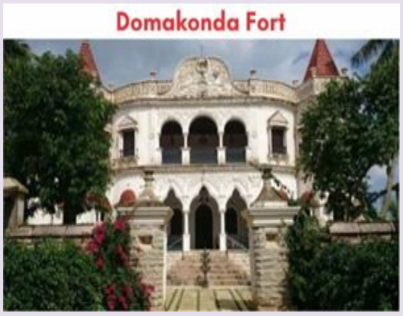	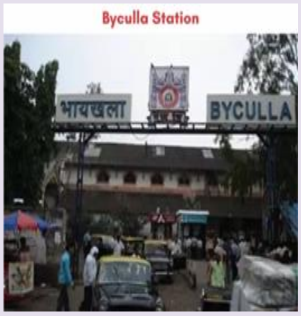

© Vision IAS

कुतुब शाही स्थापत्यकला

स्थापत्यकला की शैली
इंडो–इस्लामिक

इमारती पत्थर
ब्लैक बेसाल्ट का उपयोग

काल
1518-1687 AD

अद्वितीय विशेषताएं

- **इमारतों में गुंबदों के स्थान पर मीनारों** का प्रयोग किया गया है।
- इमारतों पर किया गया **अलंकरण और सजावट उत्कृष्ट है।** विशेष रूप से इमारतों की **मुंडेरों (Parapets) को अधिक अलंकृत** किया गया है।
- टाइल्स के उपयोग के साथ कहीं–कहीं स्टुको या कट प्लास्टर का भी उपयोग किया गया है।

प्रमुख स्मारक

गोलकुंडा किला

चारमिनार

कुतुब शाही सुल्तानों के मकबरे

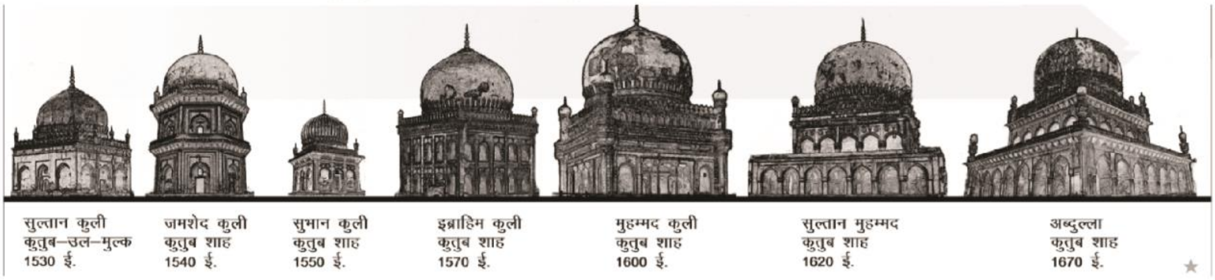

कुतुब शाही राजवंश के प्रमुख स्मारक	
गोलकोंडा किला • गोलकोंडा एक **किलेबंद दुर्ग** है। यह कुतुब शाही राजवंश की प्रारंभिक राजधानी थी। • इसके परिसर में स्थित स्मारक **फारसी, पठान और हिंदू स्थापत्य शैली** का मिश्रित रूप हैं। इनके निर्माण कार्य में **स्थानीय ग्रेनाइट का इस्तेमाल** किया गया है। • इन ऐतिहासिक इमारतों की सतह **जटिल नक्काशीदार प्लास्टरवर्क से सुसज्जित** है। इसके अलावा, कुछ **स्मारकों पर पॉलिशदार टाइल्स** का काम भी किया गया है। • इन मकबरों की स्थापत्य कला **बीदर के आरंभिक बहमनी मकबरों के ज्यामितीय डिजाइनों** से व्युत्पन्न है। हालांकि यहां किया गया **स्टुको अलंकरण** बहमनी मकबरों की तुलना में अधिक जटिल और व्यापक है।	**चारमीनार** • यह स्मारक ग्रेनाइट के मनमोहक चौकोर खम्भों से बना है जिन्हें उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम दिशाओं में स्थित चार विशाल मेहराबों पर निर्मित किया गया है। यह प्रभावशाली दृश्यों (झांकियों) की एक श्रृंखला के साथ, चार प्रमुख मार्गों के प्रतिच्छेदन (Intersection) को दर्शाती है। • इसका निर्माण **16वीं शताब्दी** में कराया गया था। • यह **दुनिया का पहला ऐसा स्मारक है, जिसका निर्माण चूने के गारे और ग्रेनाइट** का इस्तेमाल करके किया गया है। • चारमीनार और चार कमान का नगरीय स्थापत्य **द्वितीय इस्लामी सहस्राब्दी** की शुरुआत के प्रतीकात्मक और औपचारिक अर्थ के साथ गहराई से जुड़ा है। यह **शिया नगर नियोजन** का एक उल्लेखनीय उदाहरण भी है।

कुतुब शाही मकबरे

- कुतुब शाही मकबरों में **कुतुब शाही राजवंश के शासकों के प्रमुख सात मकबरे** शामिल हैं। समग्र परिसर में 30 मकबरे, मस्जिदें और एक शव स्नानागार शामिल है।
- **उपयोग की गई सामग्रियां:** प्लास्टर अलंकरण के साथ अलंकृत भूरे रंग के ग्रेनाइट का उपयोग किया गया था।
- यहां मौजूद **अधिकतर संरचनाएं मकबरों** के रूप में हैं जिनका निर्माण **एक ऊंचे चबूतरे पर** किया गया है। मकबरे वस्तुतः नुकीले मेहराबों से घिरे वर्गाकार आधारों पर बनी गुंबदाकार संरचनाएं हैं।

कुतुब शाही स्थापत्य कला के अन्य प्रमुख स्मारक:

स्मारक	बारे में
चार कमान (या चार मेहराब)	• इसका निर्माण 1592 ई. में करवाया गया था। • इसकी **उत्तरी मेहराब को मछली कमान** (मछली मेहराब) कहा जाता है। **दक्षिणी मेहराब को चार मीनार** कहा जाता है। **पूर्वी मेहराब को शंभु प्रसाद (काला मेहराब) या काली कमान** तथा **पश्चिमी मेहराब को शेर दिल या सिहर बातिल** कहा जाता है। 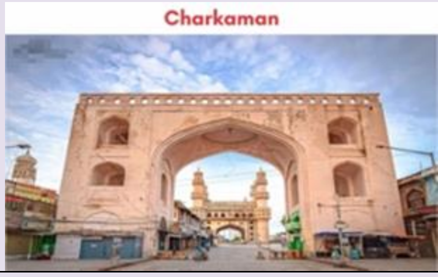
मक्का मस्जिद	• इस मस्जिद को दो भागों अर्थात् **बड़ी मस्जिद (दजामी) और छोटी मस्जिद (मस्जिद)** में विभाजित किया जा सकता है। • एक बड़ा **आयताकार दरबार (साहन) तोरणों (रिवाक)** से घिरा हुआ है। इसकी सपाट **छत (सक्फ) मेहराबों (ताक)** पर टिकी हुई है। इन मेहराबों को **पत्थर (हजर) के स्तंभों (अमुद) या ईंट (लिबन) के स्तंभों (रुकन)** द्वारा सहारा दिया गया है।
दार-उल-शफा	• इस दो मंजिला इमारत को 1595 ई. में बनाया गया था। • यह **यूनानी चिकित्सा** का एक अस्पताल तथा साथ ही साथ एक महाविद्यालय भी था।
बादशाही आशूर खाना	• यहाँ **आलमों अर्थात् इमाम हुसैन द्वारा प्रयोग किए गए रूपांकनों को सहेज कर रखा गया है।** • इस पूरे सभागार को **सुंदर फूलों की सजावट वाली टाइलों से सजाया गया है।** • इसकी पश्चिमी दीवार पर **तुघरा शैली** में एक अभिलेख अंकित है। 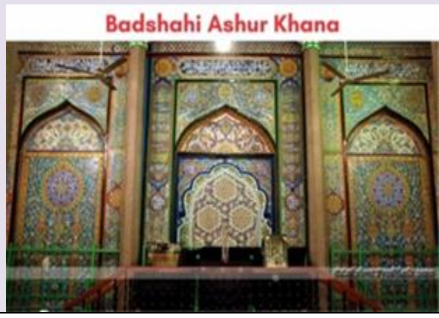

संस्थापक: सुल्तान कुली कुतुब–उल–मुल्क

कुतुब शाही राजवंश: बहमनी साम्राज्य का उत्तराधिकारी

1518–1687 ई.

मुख्य शासक

- **इब्राहिम कुली कुतुब शाह**
- **मुहम्मद कुली कुतुब शाह (हैदराबाद का संस्थापक)**
- **अबुल हसन ताना शाह (अंतिम शासक)**

मुख्य शहर

- **मुहम्मद नगर:** यह **पूर्व के प्रमुख शहरों में से** एक के रूप में प्रसिद्ध था। यह नगर **हीरे और कीमती पत्थरों के व्यापार** के लिए भी प्रसिद्ध था।
- **हैदराबाद:** इस शहर की योजना के निर्माण और स्थापना का श्रेय **मुहम्मद कुली कुतुब शाह** को दिया जाता है।

संस्कृति

- तुर्की कबीले **"कारा क्युयुनलू"** से संबंधित थे। इस कबीले का राज्य–चिन्ह **काली भेड़** थी।
- कुतुब शाही शासन के दौरान मंकल मैसाराम के नाम पर **महाकाली जात्रा** प्रतिवर्ष किया जाता था।
- किसी भी मंदिर में जाने के लिए **हिंदुओं पर कोई तीर्थयात्रा कर नहीं** था।

भाषा

- इस काल में दरबारी भाषा **फ़ारसी** थी, जबकि **तेलुगु** आम लोगों की भाषा थी।
- **इब्राहिम कुली कुतुब शाह** ने राज्य में तेलुगु भाषा के विकास को बढ़ावा देने के क्रम में इसे सीखने और इसके लेखन संबंधी कार्य को संरक्षण प्रदान किया था।

प्रशासन

- **सार्वजनिक सेवाओं** में धर्म, जाति और पंथ के आधार पर **नियुक्तियों में कोई भेदभाव नहीं किया जाता था।**
- लिपिक से लेकर प्रधान मंत्री तक **सभी पदों पर हिंदू और मुसलमान समान रूप से पात्र थे।**

सामाजिक–धार्मिक स्थितियां

- कुतुब शाही सुल्तान **मुसलमानों के शिया संप्रदाय** से संबंधित थे। इस काल में **शिया लोगों** को प्रशासन में उच्च पद प्राप्त थे।
- राज्य में निवास करने वाले हिंदुओं में बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियां प्रचलित थीं।
- समकालीन **तेलुगू लेखक पोन्नगंती तेलगनार्य** ने अपनी कृति **'ययाति चरित्र' में समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति** का विवरण दिया है।

औरंगजेब ने गोलकुंडा के किले पर अधिकार कर लिया था। इसके बाद इस राजवंश का अंत हो गया।

1.5. महापाषाण स्थल (Megalithic Sites)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, देश में कई महापाषाण स्थलों की खोज की गई है।

महापाषाण के बारे में

- महापाषाण समाधि स्थलों या संरचना के निर्माण के लिए **बड़े-बड़े पत्थरों का इस्तेमाल** किया जाता था। **ये या तो शवाधान स्थलों या किसी व्यक्ति या घटना विशेष की स्मृति (गैर-समाधि) में निर्मित स्मारक हैं।**
  - **गैर-समाधि वाली महापाषाण संरचनाओं** में स्मारक स्थल शामिल हैं, जैसे कि **मेन्हिर।**
- **भारत में मुख्य महापाषाण स्थल:** प्रायद्वीपीय दक्षिण, दक्कन के पठार, विंध्य और भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र।
- **समयावधि:** भारत में महापाषाण स्थल 1300 ईसा पूर्व से 12वीं शताब्दी ईस्वी तक की अवधि के हैं।

PT 365 - संस्कृति

हाल में खोजे गए स्थल

असम के दीमा हसाओ जिले में महापाषाणकालीन मर्तबान (Megalithic jars in Assam's Dima Hasao District) 	• असम के **दीमा हसाओ जिले में महापाषाण कालीन पत्थर के मर्तबान** मिले हैं। इस खोज ने **भारत के पूर्वोत्तर और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच संभावित संबंधों** पर ध्यान केंद्रित किया है। ये संबंध दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से स्थापित हैं। 　○ **असम** में पाए गए पत्थर के मर्तबान, **लाओस और इंडोनेशिया** में पाए गए पत्थर के मर्तबानों के साथ **प्रतीकात्मक एवं रूपात्मक समानताएं** रखते हैं।
कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में महापाषाण कालीन गुफा मिली (Megalithic Period Cave in Dakshina Kannada, Karnataka) 	• **कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले** के कदबा तालुक में **महापाषाण काल** की एक **शैल कर्तित** (Rock-cut) गुफा (800 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व) मिली है। • सामान्यतः, महापाषाण कालीन समाधि स्थलों में **पत्थर के घेरे और मेन्हिर पाए जाते हैं।** 　○ लेकिन दक्षिण कन्नड़ में मिली गुफा में **एक क़ब्र** (मकबरे से संबंधित) पर **एक वृत्त या शून्य अंकित है।**

1.6. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

मार्तंड सूर्य मंदिर (जम्मू-कश्मीर) 	• लगभग तीन दशकों के बाद, **जम्मू-कश्मीर के मत्तन** में स्थित **प्राचीन मार्तंड सूर्य मंदिर में शुभ नवग्रह अष्टमंगलम पूजा** का आयोजन किया गया है। • मार्तंड मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी में सूर्य या मार्तंड के सम्मान में कश्मीर के **कार्कोट राजवंश (724 से 761 ई.) के राजा ललितादित्य ने करवाया था।** • इसे **ग्रीक पैटर्न** में चूना पत्थर और **स्तंभों** का उपयोग करके एक **वर्गाकार क्षेत्र** में बनाया गया है। यह **कश्मीरी स्थापत्य कला** का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। 　○ 15वीं शताब्दी में मुस्लिम शासक **सिकंदर बुतशिकन** के आदेश पर इसे नष्ट कर दिया गया था। • इसे **राष्ट्रीय महत्व के स्थल** के रूप में चिन्हित किया गया है। • **अन्य सूर्य मंदिर: कोणार्क** (ओडिशा), **मोढेरा** (गुजरात) में सूर्य मंदिर, **कटारमल सूर्य मंदिर** (उत्तराखंड); **सूर्य पहाड़ मंदिर** (असम); **दक्षिणार्क सूर्य मंदिर** (बिहार); **अरसावल्ली सूर्य मंदिर** (आंध्र प्रदेश); **सूर्यन कोविल** (तमिलनाडु) आदि।
कोणार्क सूर्य मंदिर (Konark Sun temple) 	• ओडिशा के कोणार्क में सूर्य मंदिर के दर्शन करने वाले लोग शीघ्र ही **जगमोहन के उत्तरी हिस्से में नए नक्काशीदार पत्थरों को देख सकेंगे।** 　○ **अवस्थिति:** यह मंदिर **ओडिशा के पूर्वी तट** पर स्थित है। 　○ मंदिर का निर्माण **13वीं शताब्दी** में करवाया गया था। 　○ **निर्माता:** इसका निर्माण **पूर्वी गंग वंश के राजा नरसिंह देव प्रथम ने करवाया था।** 　○ **स्थापत्य शैली: स्थापत्य की ओडिशा शैली या कलिंग शैली।** UNESCO UNESCO World Heritage Site
माहुली मंदिर समूह (Mahuli Group of Temples) 	• **राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) संस्कृति मंत्रालय को माहुली समूह के मंदिरों के व्यापक विकास पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।** • **माहुली मंदिर समूह को दक्षिण काशी** के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर समूह में **पांच मंदिर** शामिल हैं। 　○ इन **मंदिरों का निर्माण 11वीं और 12वीं शताब्दी** में किया गया था। 　○ **स्थान:** यह मंदिर समूह महाराष्ट्र के सतारा में कृष्णा और वेन्ना नदियों के संगम पर स्थित है। 　○ **मंदिर स्थापत्य कला: स्थापत्य की हेमाडपंथी शैली।** 　○ **निर्माणकर्ता:** हेमाद्री पंडित द्वारा, जो देवगिरी के सेउना यादवों के दरबार में हेमाडपंत (प्रधान मंत्री) के पद पर थे। 　○ **विशेषताएं:** इस मंदिर समूह का परिसर सप्तभुजीय है। इसमें सूखे पत्थरों की चिनाई से निर्मित गर्भगृह व मंडप हैं। साथ ही, एकल पत्थर पर उकेरी गयी एक लंबी संरचना दीपमाल है।
तेलंगाना शैल कला पुरास्थल (Telangana rock art site 	• तेलंगाना के **यदाद्री भुवनगिरी जिले के कासिपेटा से मध्य पाषाण कालीन शैल चित्रों से युक्त एक प्रागैतिहासिक शैलाश्रय, महापाषाण काल की समाधियां और सूक्ष्म पाषाण** पाए गए हैं। 　○ **शैलाश्रय** एक सांप के फन के समान दिखाई देने वाली शैलों की एक बड़ी संरचना के अंदर स्थित होता है।

© Vision IAS

<table>
<tr>
<td></td>
<td>

- सूक्ष्म पाषाण उपकरण, शैल कला शैली और चित्रों में विभिन्न आकृतियां तथा बाइसन के चित्र यह इंगित करते हैं कि **शैल कला स्थल सूक्ष्म पाषाण काल से संबंधित है।**
- एक हथियार लिए किसी पुरुष के चित्र के **उत्तर ऐतिहासिक काल** से संबंधित होने की संभावना है।

</td>
</tr>
<tr>
<td>

आदिचनल्लूर

</td>
<td>

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने तमिलनाडु के पुरातात्विक स्थल आदिचनल्लूर का उत्खनन किया है। इस उत्खनन के दौरान **एक विशाल दफन कलश से सोने का मुकुट** प्राप्त हुआ है।

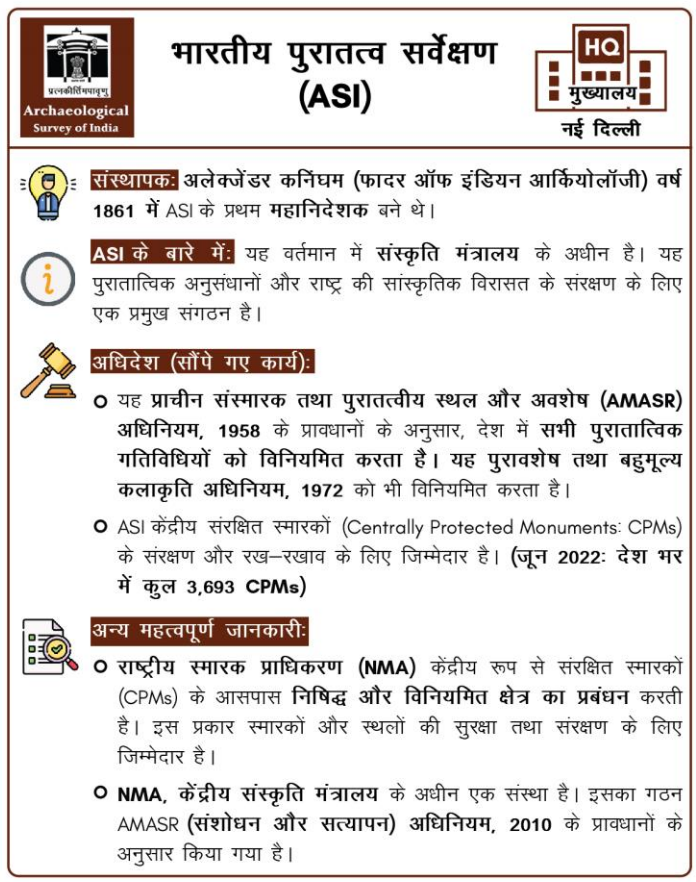

- आदिचनल्लूर, दक्षिणी तमिलनाडु के **तूत्तुक्कुडि जिले में तामिरबरणी नदी की निचली घाटी में स्थित है।**
  - **संगम साहित्य में वर्णित प्राचीन बंदरगाह कोरकाई, आदिचनल्लूर** से लगभग 25 किमी दूर स्थित है।
- तमिलनाडु में स्थित यह **एक महापाषाणकालीन स्थल है।** यह भारत में उत्खनित प्रथम पुरातात्विक स्थलों में से एक है। इसका उत्खनन **1876 ई.** में एक जर्मन अन्वेषक **एंड्रयू जागोर** ने किया था। बाद में ASI के पूर्व अधीक्षक **एलेक्ज़ेन्डर री** ने उत्खनन किया था।
  - विशेषज्ञों का मानना है कि आदिचनल्लूर न केवल **महापाषाण संस्कृति** को प्रदर्शित करता है, बल्कि **लौह युग और संगम युग की ओर संक्रमण काल** को भी दर्शाता है।
  - दक्षिण भारत में सबसे पुराने **लौह युग के स्थल (लगभग 1000 ईसा पूर्व) हल्लूर (कर्नाटक) और आदिचनल्लूर हैं।**
- **आदिचनल्लूर महापाषाणीय समाधि स्थल पर पाए गए कंकाल को भिन्न नृजातीय मूल** का बताया गया है।
  - **अधिकांश कंकाल गैर-भारतीय थे।** यह वैश्विक व्यापारियों की उपस्थिति को इंगित करता है।

</td>
</tr>
<tr>
<td>

चेन्नई में 12,000 वर्षों से मानव निवास के साक्ष्य मिले (Evidence of 12,000 Years of Habitation in Chennai)

</td>
<td>

- हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को **चेन्नई के बाहरी इलाके में खुदाई से कुछ कलाकृतियां मिली हैं।** इससे इस क्षेत्र में **लगभग 12,000 वर्षों** से लोगों के निरंतर निवास का पता चलता है।
- ये कलाकृतियां **मध्य पाषाण काल (लगभग 10,000 ईसा पूर्व से 8,000 ईसा पूर्व)** से **पल्लव काल (चौथी शताब्दी की शुरुआत से नौवीं शताब्दी के उत्तरार्ध)** तक इस क्षेत्र में मानव के निरंतर निवास करने का प्रमाण दे रही हैं।
- **खुदाई में प्राप्त हुई वस्तुएँ:**
  - **सतह से नीचे की परत में:** मध्य पाषाण काल (12,000 साल पुराने) के हस्तकुठार, खुरचनी, क्लीवर्स सहित पत्थर के औजार पाए गए।
  - **ऊपरी परत में:** इस परत में **संगम युग (2,000 वर्ष पूर्व) से रोमन शैली के भांड-खंड (Roman sherds), कांच के मनके, सोने के आभूषण, टेराकोटा खिलौने** प्राप्त हुए।
  - **सतह पर: विष्णु और शिवलिंग की प्राचीन मूर्तियां, जिससे प्रारंभिक तथा उत्तर पल्लव युग** (1,200 से 1,800 साल पहले तक) का संकेत मिलता है।

</td>
</tr>
</table>

PT 365 - संस्कृति

2. चित्रकला और अन्य कलाएं (Paintings and Other Art Forms)

2.1. पारंपरिक भारतीय वस्त्र (Traditional Indian Textiles)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, यूनेस्को ने **"21वीं सदी के लिए हस्तनिर्मित: पारंपरिक भारतीय वस्त्रों की सुरक्षा[5]"** नामक दस्तावेज जारी किया है। इस दस्तावेज में देश के **50 विशिष्ट और प्रतिष्ठित विरासत वस्त्र शिल्पों की सूची** जारी की गई है।

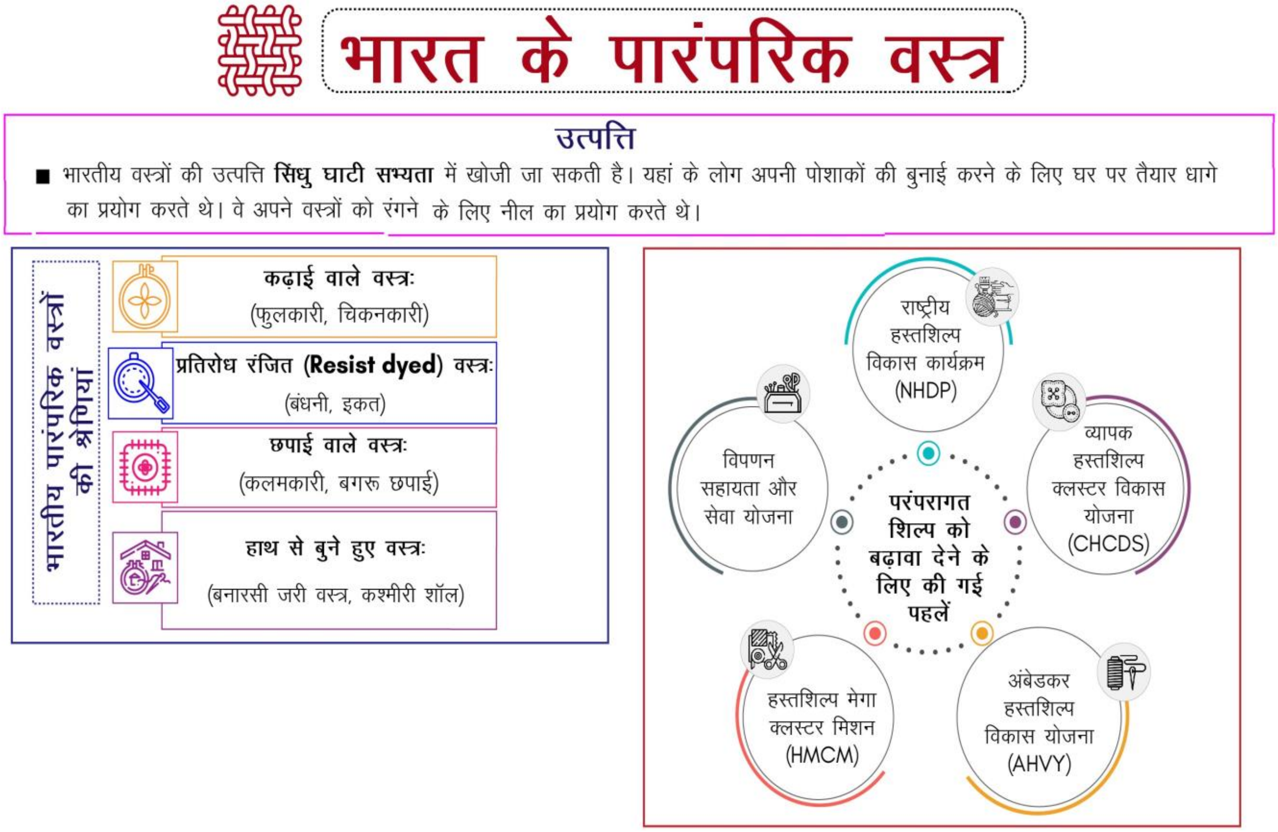

PT 365 - संस्कृति

[5] Handmade for the 21st century: Safeguarding Traditional Indian Textiles

© Vision IAS

भारत के विरासत वस्त्र शिल्पों की सूची

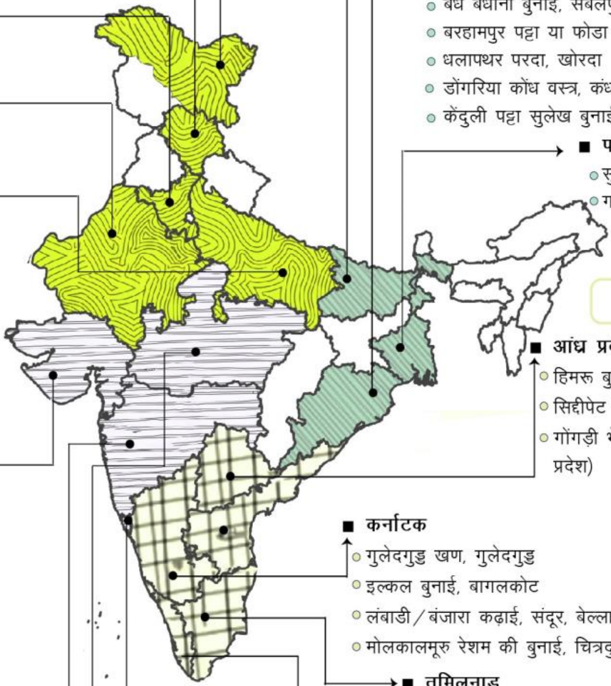

उत्तर भारत

- **लद्दाख**
  - थिग्मा (ऊन बांध कर रंगाई किए हुए वस्त्र या बंधानी या टाई–डाई)
- **हिमाचल प्रदेश**
  - चम्बा रुमाल, चंबा घाटी
- **हरियाणा**
  - खेस बुनाई, पानीपत
  - टेपेस्ट्री (चित्रयवनिका) बुनाई, पानीपत
- **राजस्थान**
  - डंका कढ़ाई, उदयपुर
  - स्प्लिट–प्लाई ब्रैड बुनाई
- **उत्तर प्रदेश**
  - अवध जामदानी, वाराणसी
  - बालूचरी बुनाई, वाराणसी
  - बदला कढ़ाई, लखनऊ
  - ग्यासर बुनाई, वाराणसी
  - हैंड–ब्लॉक प्रिंटिंग (ठप्पा छपाई), फर्रुखाबाद

पश्चिम भारत

- **गुजरात**
  - अश्वली साड़ी की बुनाई, अहमदाबाद
  - कुस्ति बुनाई, नवसारी और भरूच
  - मशरू बुनाई
  - माता–नी–पछेड़ी, अहमदाबाद
  - पटोला बुनाई, पाटन
  - रोगन वस्त्र छपाई, निरोना
  - सुजानी बुनाई, भरूच
  - तंगलिया बुनाई
- **महाराष्ट्र**
  - हिमरू बुनाई, औरंगाबाद
- **मध्य प्रदेश**
  - नंदना हैंड–ब्लॉक प्रिंटिंग, जवाद
- **गोवा**
  - कुनबी बुनाई

पूर्वी भारत और पूर्वोत्तर भारत

- **बिहार**
  - बावन बूटी बुनाई, नालंदा
  - खेता कढ़ाई, किशनगंज
- **ओडिशा**
  - बंध बंधानी बुनाई, संबलपुर
  - बरहामपुर पट्टा या फोडा कुंभ
  - धलापथर परदा, खोरदा
  - डोंगरिया कोंध वस्त्र, कंधमाल
  - केंदुली पट्टा सुलेख बुनाई
- **पश्चिम बंगाल**
  - सुगंधित वस्त्र, बालापोश
  - गरद–कोरियल बुनाई, मुर्शिदाबाद

दक्षिण भारत

- **आंध्र प्रदेश और तेलंगाना**
  - हिमरू बुनाई, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश और तेलंगाना)
  - सिद्दीपेट गोलाबामा बुनाई, (आंध्र प्रदेश)
  - गोंगड़ी भेड़ के ऊन के कंबल (तेलंगाना और आंध्र प्रदेश)
- **कर्नाटक**
  - गुलेदगुड्ड खण, गुलेदगुड्ड
  - इल्कल बुनाई, बागलकोट
  - लंबाडी / बंजारा कढ़ाई, संदूर, बेल्लारी जिला
  - मोलकालमूरु रेशम की बुनाई, चित्रदुर्ग
- **तमिलनाडु**
  - सिकलनायकनपेट कलमकारी, तंजावुर
  - सुंगुडी या चुंगड़ी, मदुरै
  - टोडा कढ़ाई, नीलगिरी
- **केरल**
  - आयुर्वेदिक वस्त्र, बलरामपुरम

2.2. भारतीय खिलौने (Toys of India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने खिलौनों के **सुरक्षा पहलुओं पर 10 भारतीय मानक** प्रकाशित किए।

अन्य संबंधित तथ्य

- खिलौनों से जुड़े **कुल 10 भारतीय मानक प्रकाशित** किए गए हैं। इनमें से **7 मानक** 'खिलौनों की सुरक्षा' पर **गुणवत्ता नियंत्रण आदेश (QCO)** का हिस्सा हैं।
  - QCO यह अनिवार्य बनाता है कि **14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के खिलौने सुरक्षा के 7 भारतीय मानकों (सूची संलग्न) के अनुरूप हों।** साथ ही, BIS से लाइसेंस के तहत उनमें एक मानक चिह्न (आई.एस.आई. का निशान) हो। यह सरकारी दिशा-निर्देश **1 जनवरी 2021 से लागू** हुआ है।

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS)

Bureau of Indian Standards
The National Standards Body of India

HQ मुख्यालय नई दिल्ली

BIS के बारे में: BIS को **भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 2016** के तहत भारत के राष्ट्रीय मानक निकाय के रूप में स्थापित किया गया है। यह **उपभोक्ता मामलों के विभाग (उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय)** के अधीन है।

उद्देश्य:
- मानकीकरण, चिह्नांकन और गुणवत्ता प्रमाणन का सामंजस्यपूर्ण विकास।
- मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण को नया बल प्रदान करना।

5 क्षेत्रीय कार्यालय: कोलकाता (पूर्वी), चेन्नई (दक्षिणी), मुंबई (पश्चिमी), चंडीगढ़ (उत्तरी) और दिल्ली (मध्य)

संरचना: 25 सदस्य
- **अध्यक्षः** केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
- **उपाध्यक्षः** उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री

भारतीय खिलौने

मार्केट वैल्यू

भारत का वर्तमान खिलौना बाजार **लगभग 1.5 अरब डॉलर** का है। यह **वैश्विक खिलौना बाजार का केवल 0.5% है।**

खिलौना उद्योग को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमः

- स्थानीय स्तर पर खिलौना विनिर्माण को बढ़ावा देने हेतु **खिलौना उद्योग के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना** शुरू की गयी है।
- **हस्तशिल्प खिलौना क्लस्टर्स**
  सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय के पारंपरिक उद्योगों के उन्नयन एवं पुनर्निर्माण के लिए कोष (स्फूर्ति/SFURTI) योजना के तहत।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**
  इसके तहत छठी कक्षा से छात्रों के लिए खिलौना बनाने का पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा।

विनिर्माण केंद्र

2.3. सुर्ख़ियों में रही कलाकृतियां (Crafts in News)

प्रधान मंत्री ने बाली में आयोजित **G-20 शिखर सम्मेलन में अलग-अलग देशों के राष्ट्र प्रमुखों/ नेताओं को भारत की पारंपरिक कलाकृतियां भेंट की।**

उपहार	विवरण
पहाड़ी लघु चित्रकला (कांगड़ा शैली) 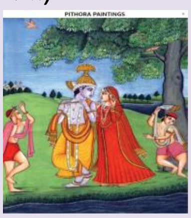	• यह **लघु चित्रकला और पुस्तक चित्रण** की एक शैली है। यह **भारत में हिमालय की तलहटी की स्वतंत्र राज्यों में विकसित हुई है।** • यह चित्रकला कांगड़ा क्षेत्र के **एक प्रमुख शासक राजा संसार चंद (1775-1823) के संरक्षण में** विकसित हुई थी। • **कांगड़ा शैली** अब तक की **सबसे काव्यात्मक और गीतात्मक भारतीय शैलियों** में से एक है। यह शैली अपने निर्मल सौंदर्य और निष्पादन की सूक्ष्मता के लिए जानी जाती है। • कांगड़ा शैली की अनूठी **विशेषताएं** रेखाओं की सूक्ष्मता, रंग की चमक और अलंकारिक विवरणों की सूक्ष्मता हैं। • इस शैली में चित्रित सबसे लोकप्रिय विषय हैं- **भागवत पुराण, गीत गोविंदम, नल दमयंती, बिहारी सतसई, रागमाला और बारामासा।**
माता नी पछेड़ी (Mata Ni Pachedi) 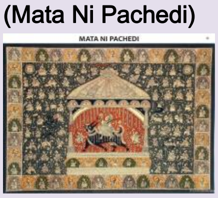	• माता नी पछेड़ी का शाब्दिक अर्थ है **"मातृ देवी के पीछे"**। 'पछेड़ी' एक **धार्मिक हस्तनिर्मित वस्त्र** है। इसके **केंद्र में मातृ देवी का चित्र** बनाया जाता है। ○ ऐसा माना जाता है कि इसकी शुरुआत **गुजरात के घुमन्तु वाघरी समुदाय** के लोगों ने की थी। उनकी 'निचली जाति' के कारण उन्हें माता के मंदिरों में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। इस पर उन्होंने कपड़े के टुकड़ों पर देवी माँ (माता) के चित्रों का चित्रण करना शुरू किया तथा अपने स्वयं के पूजा स्थल बनाए। • माता नी पछेड़ी को **गुजरात की कलमकारी भी कहा जाता है** क्योंकि यह दक्षिण भारत की कलमकारी कला से मिलती-जुलती है। साथ ही, इसमें चित्रकारी की एक ही विधि अर्थात् बांस से बनी कलम का उपयोग किया जाता है।

© Vision IAS

पिथौरा चित्रकला	• पिथौरा चित्रकला का **इतिहास काफी पुराना है। हजारों वर्ष पुराने गुफा चित्रों में भी इस कला शैली के दर्शन होते हैं।**
	• पिथौरा चित्रकला **गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में रहने वाले राठवा, भील, नायक व ताड़ी जनजातियों द्वारा बनाए गए चित्रों में देखने को मिलती है।**
	  ○ ये चित्रकारियां आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और पौराणिक जीवन एवं मान्यताओं के संबंध में जानकारी देती हैं।
	• पिथौरा चित्रकला में **सात घोड़े विशेष महत्व रखते हैं।** ये घोड़े उन सात पहाड़ियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो राठवा समुदाय के निवास स्थान के चारों ओर मौजूद हैं।
	• पिथौरा चित्रकला एक **कला शैली से अधिक एक अनुष्ठान** है।
	  ○ यह अनुष्ठान या तो भगवान के प्रति आभार प्रकट करने के लिए अथवा इच्छा या वरदान मांगने के लिए किया जाता है।

सुलेमानी कटोरे (Agate Bowls) 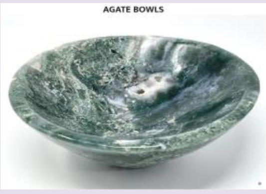	• **सुलेमानी (Agate) या अकीक** मध्यम स्तर का मूल्यवान पत्थर है। यह राजपीपला की भूमिगत खानों में और रतनपुर में नदी तल में पाया जाता है। इस पत्थर को इन कटोरे जैसी अलग-अलग सजावटी वस्तुओं को बनाने के लिए निकाला जाता है। • प्रचलित मान्यताओं के अनुसार, सुलेमानी पत्थर में किसी व्यक्ति के भीतर अथवा उसके आस-पास की **ऊर्जा को संतुलित करने के लिए उपचारात्मक गुण (Healing Properties)** मौजूद होते हैं। • 18वीं शताब्दी में, **खंभात का बंदरगाह (अब आनंद जिले में) सुलेमानी पत्थर उद्योग** का केंद्र था।
पाटन पटोला (Patan Patola)	• यह शुद्ध रेशम में बुनी गई **दोहरी इकत या पटोला की प्राचीन कला है।** • यह 11वीं शताब्दी के समय की **उत्तरी गुजरात के पाटन क्षेत्र** की कला है। • पटोला वस्त्र **दोनों तरफ रंगों और डिजाइन की समान गहनता दर्शाते हैं।** • इसकी रंगाई की तकनीक को **बांधनी प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है।**
किन्नौरी शॉल (Kinnauri Shawl)	• यह **हिमाचल प्रदेश का प्रसिद्ध शॉल** है। • इसके **ज्यामितीय डिजाइन पर मध्य एशियाई संस्कृति का अत्यधिक प्रभाव है। इसकी डिजाइन में ऐसे रूपांकन शामिल** हैं जो आमतौर पर **धर्मों और संस्कृतियों के प्रतीक** हैं। • इसके आधार के रंग प्राकृतिक अर्थात् **धूसर, काला, भूरा और सफेद** हैं तथा इसके अलंकरण के रंग **नारंगी, नीला, हरा** आदि हैं। • इन शॉलों को **अधिकांशत दो भागों में बुना** जाता है। इन भागों को फिर व्यापक रूप से हाथ की सिलाई के माध्यम से केंद्र से जोड़ा जाता है।

2.4. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

रोगन चित्रकला (Rogan painting)	• **क्वाड मीटिंग के दौरान** भारतीय प्रधान मंत्री ने **जापान के प्रधान मंत्री को एक सफेद रोगन भेंट किया।**
	• रोगन वस्तुतः **वस्त्र पर की जाने वाली चित्रकला का एक रूप** है। इसे **चार शताब्दियों से अधिक पुराना** माना जाता है। वर्तमान में, यह **गुजरात के कच्छ के निरोना में केवल एक ही परिवार द्वारा संरक्षित** है।
	  ○ 'रोगन' एक फारसी शब्द है। इसका अर्थ है वार्निश या तेल। इस कला में **उबले हुए तेल और वनस्पति रंगों से बने पेंट** का उपयोग किया जाता है।
	  ○ इस कला में **अरंडी के तेल से बने एक विशेष पेस्ट** का उपयोग किया जाता है।
	  ○ इसमें सामान्यतः **ज्यामितीय रूपांकनों को प्राथमिकता** दी जाती है।

सांझी चित्रकला	• हाल ही में, **भारतीय प्रधान मंत्री ने** क्वाड बैठक के दौरान **अमेरिकी राष्ट्रपति को सांझी चित्रकला का एक चित्र भेंट किया।** • इस चित्रकला का विकास **15वीं-16वीं शताब्दी के दौरान उत्तर प्रदेश के वृंदावन में** हुआ था। इसमें कृष्ण के जीवन की घटनाओं पर आधारित स्टैंसिल बनाना शामिल है। • **'सांझी' शब्द 'सांझ' या संध्या** से लिया गया है। यह **संध्या के समय मंदिरों में रंगोली बनाने की प्रथा से संबंधित है।**

पट्टाचित्र चित्रकला 	• ओडिशा के मुख्यमंत्री ने वेटिकन सिटी में **पोप फ्रांसिस** से मुलाकात की और उन्हें एक **पट्टाचित्र पेंटिंग** भेंट की। • **पट्टाचित्र चित्रकला के बारे में:** ○ वस्त्र आधारित **स्क्रॉल पेंटिंग ओडिशा की एक विशिष्ट पेंटिंग है।** ○ इसकी उत्पत्ति **12वीं शताब्दी से मानी जाती है।** ○ इस पेंटिंग को एक **विशेष कैनवास** पर बनाया जाता है। इसमें सूती साड़ियों को **इमली के घोल के साथ बिछाया जाता है** और तत्पश्चात **क्ले पाउडर से लेपित किया जाता है।** ○ यह कला **श्री जगन्नाथ** पंथ और **पुरी में मंदिर परंपराओं से निकटता से संबंधित है।**
रत्नागिरी की शैल नक्काशियां (पेट्रोग्लिफ्स) {Rock Carvings (Petroglyphs) of Ratnagiri} 	• विशेषज्ञों ने **रत्नागिरी में प्रस्तावित मेगा ऑयल रिफाइनरी परियोजना को अस्वीकार** कर दिया है। इसके पीछे का कारण इस परियोजना से यहां की शैल कलाकृतियों का संभावित नुकसान है। रत्नागिरी महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में स्थित है। ○ पेट्रोग्लिफ्स **किसी शैल (चट्टान) की सतह के हिस्से को हटाकर** किया जाता है। • इन शैल कलाकृतियों को **संरक्षित स्मारकों के रूप में वर्गीकृत** किया गया है। ये शैल नक्काशियां **प्रागैतिहासिक युग के दौरान कठोर लेटराइटिक शैल पर बनाई गई हैं।** ○ इन्हें **यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अनंतिम (tentative) सूची** में भी शामिल किया गया है। • **कोंकण क्षेत्र में कुल** 1,000 से अधिक **शैल नक्काशियां** हैं। इन्हें **कातल शिल्प** भी कहा जाता है। इन पर अलग-अलग **जानवरों, पक्षियों, ज्यामितीय संरचनाओं और प्राचीन चित्रलेखों** को उकेरा गया है। ○ **भीमबेटका और मिर्जापुर नक्काशियों** के विपरीत, यहां **जानवरों के शिकार के किसी भी दृश्य को चित्रित नहीं** किया गया है।
भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्य यंत्र (Indian Classical musical instruments)	• भारतीय शास्त्रीय संगीतकार और पद्म विभूषण प्राप्तकर्ता **संतूर वादक 'पंडित शिवकुमार शर्मा' का हाल ही में निधन** हो गया। • **भरत मुनि द्वारा रचित नाट्य शास्त्र में (लगभग 400-200 ईसा पूर्व) भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्य यंत्रों को चार समूहों में वर्गीकृत किया गया है: इनमें शामिल हैं-** ○ **अवनद्ध वाद्य (मेम्ब्रानोफोन्स या ताल वाद्य यंत्र):** इसमें एक खींची हुई खाल से ध्वनि उत्पन्न होती है, उदाहरण के लिए- डमरू, नगाड़ा आदि। ○ **घन वाद्य (इडियोफ़ोनिक या ठोस वाद्य):** ये ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कंपन करते हैं, उदाहरण के लिए- घंटी, गोंग या चिमटा। ○ **सुषिर वाद्य (एयरोफोन या वायु यंत्र):** ये वायु से ध्वनि उत्पन्न करते हैं, उदाहरण के लिए- शहनाई या बांसुरी। ○ **तत वाद्य (कॉर्डोफोन या तार वाले वाद्ययंत्र):** इनमें ध्वनि दो बिंदुओं के बीच तारों के कंपन द्वारा उत्पन्न की जाती है, उदाहरण के लिए- सारंगी, सरस्वती वीणा, संतूर आदि।
रंग स्वाधीनता (Rang Swadheenta)	• **संगीत नाटक अकादमी द्वारा रंग स्वाधीनता का आयोजन किया गया।** रंग स्वाधीनता, **स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृतियों को संजोने** का एक उत्सव है। • **इस दौरान देश भर की निम्नलिखित लोक संगीत परंपराओं का प्रदर्शन किया गया:** ○ **पांडवों का कड़ा:** इसकी उत्पत्ति संभवत: 17वीं शताब्दी के **मेवात** में हुई थी। यह आमतौर पर **महाभारत के प्रसंगों** और **युद्ध के मैदान में महाराणा प्रताप की अद्भुत वीरता** पर केंद्रित है। ○ **ओग्गुकथा:** यह तेलुगु भाषी क्षेत्रों का एक लोक नाट्य रूप है। ○ **पंजाब की ढाडी गायन परंपरा:** इसकी शुरुआत **गुरु हरगोबिंद** ने युद्ध के मैदान में शस्त्र हाथ में उठाए वीरों के बीच बहादुरी को प्रेरित करने के लिए की थी। ○ **पोवाड़ा:** यह **महाराष्ट्र में लोकप्रिय गाथागीत गायन की एक समृद्ध पारंपरिक शैली** है। ○ **दास्तानगोई:** यह **कहानी सुनाने की एक पारंपरिक फ़ारसी शैली** है। दास्तानगोई करने वाले कलाकारों की ध्वन्यात्मक आवाजों में रानी लक्ष्मीबाई की वीर गाथा जीवंत हो उठी है।
शुमंग लीला (Shumang Leela)	• हाल ही में, **इंफाल में 'अखिल मणिपुर शुमंग लीला महोत्सव' के 50वे संस्करण का आयोजन** आरंभ हुआ है। • शुमंग लीला 19वीं-20वीं सदी में विकसित एक **प्रांगण नाटक/मणिपुरी नाट्य कला है।** ○ ऐसा माना जाता है, कि यह **मैतेई समुदाय** के एक अनुष्ठान **'लाई हरोबा'** से प्रेरित है। • वर्तमान में, यह **नैतिक मूल्यों, एकता और अखंडता** जैसे मुद्दों को संबोधित करता है। इस प्रकार **लोगों को शिक्षित** करने तथा **समाज में सुधार लाने** पर केंद्रित है। • इसमें, **महिला कलाकारों** की सभी भूमिकाएं **पुरुष कलाकारों द्वारा निभाई जाती हैं।** महिला थिएटर समूहों के मामले में पुरुष पात्रों की भूमिकाओं को **महिला कलाकार निभाती हैं।**
ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि (Palm- leaf manuscript)	• **केरल के तिरुवनंतपुरम** में ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियों के प्रथम संग्रहालय का उद्घाटन किया गया है। • ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियां लिखित रूप में **ज्ञान को प्रसारित करने और संरक्षित करने के लिए मानव की सबसे प्राचीन व व्यापक तकनीकों में से एक हैं।**

© Vision IAS

	○ इन्हें **दो प्रकार के ताड़ के वृक्षों (पाल्मीरा और तालिपोट)** से प्राप्त किया जाता है। ▪ **पाल्मीरा का पत्ता मोटा और कम लचीला होता है और समय के साथ कमजोर** हो जाता है। ▪ **तालिपोट का पत्ता पतला और अधिक लचीला** होता है। इसमें उत्कृष्ट स्थायित्व होता है। ऐसा कहा जाता है कि यह 600 वर्षों तक यथास्थिति में रह सकता है। ○ इनमें **भारतीय, नेपाली और दक्षिण पूर्व एशियाई संस्कृति एवं धर्म से जुड़े कई अनूठे स्रोत** लिखे हुए हैं।
ढोकरा कला 	• **बंगाल का लालबाजार गांव ढोकरा धातु शिल्प का केंद्र** बनता जा रहा है। यह गांव **बंगाल और झारखंड की सीमा** पर स्थित है। ○ पश्चिम बंगाल में दो स्थान **बिकना (बांकुरा) और दरियापुर (बर्धमान)** ढोकरा कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं। • ढोकरा **धातु की एक ढलाई कला है। इसमें ढलाई के लिए प्राचीन 'लुप्त-मोम विधि' (lost-wax casting) का उपयोग** किया जाता है। ○ यह **तांबे और इसकी मिश्र धातुओं या कांस्य जैसी अलौह धातु** का इस्तेमाल करने के कारण विशिष्ट है। ○ यह एक प्राचीन परंपरा है और इसका प्रलेखित इतिहास लगभग 5,000 वर्ष पुराना है। ○ यह **झारखंड की पारंपरिक कला है।**

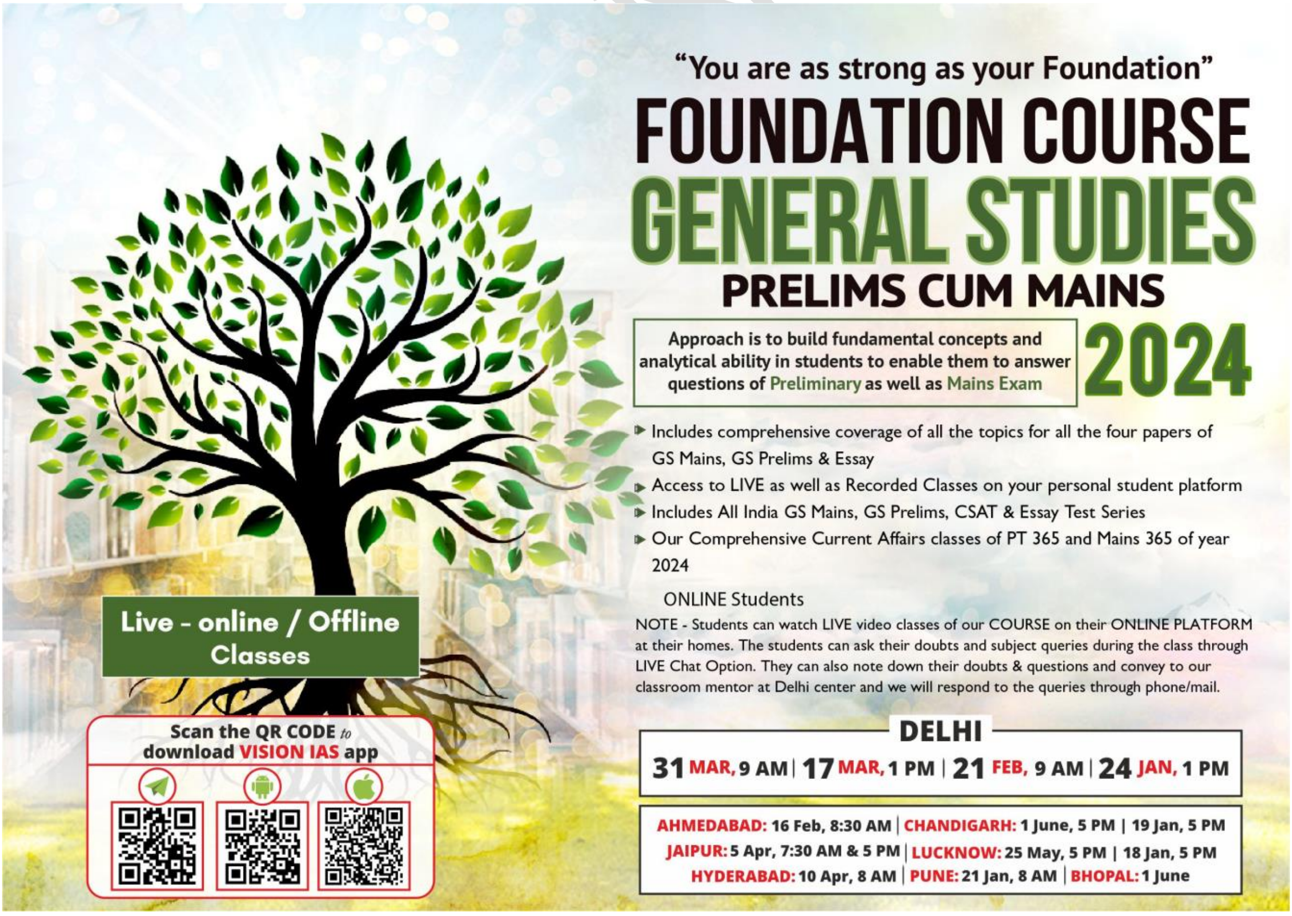

3. सुर्ख़ियों में रहे महत्वपूर्ण स्थल (Important Sites in News)

3.1. साइक्लोपियन वाल (Cyclopean Wall)

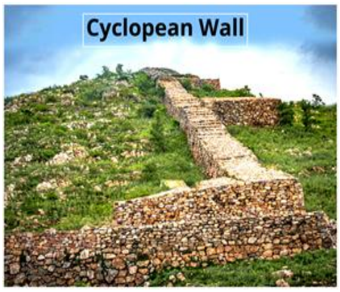

सुर्ख़ियों में क्यों?

बिहार सरकार ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को साइक्लोपियन वाल को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल में सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव एक बार फिर से भेजा है।

साइक्लोपियन वाल के बारे में

- साइक्लोपियन वाल पत्थर की एक **40 कि.मी. लंबी दीवार** है। यह 2,500 वर्ष से अधिक पुरानी संरचना है। इससे बिहार का प्राचीन शहर **राजगीर** घिरा हुआ है।
  - राजगीर **बिंबिसार और उसके पुत्र अजातशत्रु की राजधानी** थी। ये दोनों शासक **बुद्ध के समकालीन** थे।
- दीवार का निर्माण पूर्व-मौर्य युग (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहले) में कराया गया था। इसे **बृहद्रथ (रावणी) वंश के दूसरे शासक राजा जरासंध** ने निर्मित करवाया था। **इसे राजगीर** को बाहरी शत्रुओं और आक्रमणकारियों से बचाने के लिए निर्मित किया गया था। इस दीवार को विशाल अनगढ़ पत्थरों से बनाया गया है।
- यह दीवार विश्व में **साइक्लोपियन चिनाई के सबसे पुराने उदाहरणों** में से एक है।
  - साइक्लोपियन चिनाई एक प्रकार के **महापाषाण स्थापत्य** का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द है। इसमें गारे (मोर्टार) के बिना पत्थर के असामान्य रूप से बड़े खंडों का उपयोग करना शामिल है। प्राय: किलेबंदी हेतु इस प्रकार की चिनाई का उपयोग किया जाता था।
- ऐसा माना जाता है कि राजगीर में साइक्लोपियन वाल **"फ्रंटियर्स ऑफ़ द रोमन एम्पायर"** के समान है। यह जर्मनी, ब्रिटेन और उत्तरी आयरलैंड से होकर गुजरती है। इसे वर्ष 1987 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को / UNESCO)

मुख्यालय: पेरिस, फ्रांस

यूनेस्को के बारे में: यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है। इसे **वर्ष 1945** में शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, संचार और सूचना के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर शांति व सुरक्षा में योगदान देने के लिए स्थापित किया गया था।

उद्देश्य: सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आजीवन सीखने की व्यवस्था उपलब्ध कराना; उभरती हुई सामाजिक और नैतिक चुनौतियों से निपटना आदि।

सदस्यता: 195 देश और 8 एसोसिएट सदस्य।

संरचना: यूनेस्को के सचिवालय की अध्यक्षता इसका महानिदेशक करता है। यह जेनरल कॉन्फ्रेंस और कार्यकारी बोर्ड के निर्णयों को लागू करता है।

यूनेस्को से संबंधित पुरस्कार

- **सांस्कृतिक विरासत संरक्षण कार्यक्रम के लिए यूनेस्को एशिया–प्रशांत पुरस्कार**– इससे निजी व्यक्तियों और संगठनों को सम्मानित किया जाता है।
- **यूनेस्को फेलिक्स हौफौएट–बोईगनी शांति पुरस्कार**– यह जीवित व्यक्तियों व सक्रिय संस्थानों को शांति को बढ़ावा देने के लिए दिया जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण जानकारी

- यह **संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य समूह (UNSDG)** का भी सदस्य है।
- यूनेस्को के तीन सदस्य संयुक्त राष्ट्र के सदस्य **नहीं हैं: कुक आइलैंड्स, नीयू और फिलिस्तीन।**
- संयुक्त राष्ट्र के तीन सदस्य देश **(इजरायल, लिकटेंस्टाइन व संयुक्त राज्य अमेरिका)** यूनेस्को के सदस्य **नहीं** हैं।

विश्व धरोहर स्थलों की नामांकन प्रक्रिया:

- **अनंतिम सूची:** यह पहला कदम है, जो किसी देश को अपनी सीमाओं के भीतर स्थित अपने महत्वपूर्ण प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत स्थलों की 'इन्वेंट्री' बनाकर उठाना चाहिए।
- **नामांकन फाइल:** यूनेस्को द्वारा एक स्थल को अनंतिम सूची में शामिल करने के बाद, उस देश को आवश्यक दस्तावेज और नक्शे के साथ एक नामांकन दस्तावेज तैयार करना होता है। इसे सलाहकार निकायों को मूल्यांकन के लिए भेजा जाता है।
- **अंतिम अभिलेख :** एक बार किसी स्थल को नामांकित और मूल्यांकित करने के बाद, यह विश्व विरासत समिति पर निर्भर है कि वह विश्व विरासत सूची पर अपने अभिलेख पर अंतिम निर्णय ले।

इन स्थलों के लिए यूनेस्को दर्जे का अर्थ क्या है?

- यह केवल इन स्थलों के लिए ही नहीं बल्कि उस राज्य के अन्य **ऐतिहासिक स्थलों में भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देगा।**
- पर्यटकों की अधिक संख्या स्वतः ही वहां **बेहतर सुविधाओं और समुदाय के लिए अधिक आय को लाएंगी जहां ये विरासत स्थल स्थित हैं।**
- एक बार जब कोई स्थल विश्व विरासत स्थल की सूची में आ जाता है, तो उसकी ये प्रतिष्ठा **नागरिकों और सरकार के बीच इसके संरक्षण के प्रति जागरूकता को बढ़ाती है।**
- देश को इन स्थलों के संरक्षण के लिए **विश्व विरासत समिति से वित्तीय सहायता और विशेषज्ञ राय** भी प्राप्त हो सकती है।
- इन स्थलों को युद्ध के समय भी **जेनेवा समझौते के तहत संरक्षण** मिलता है।

© Vision IAS

बिहार में अन्य यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- **नालंदा विश्वविद्यालय:** (2002 में सूचीबद्ध)
    - इसकी स्थापना गुप्त वंश के **कुमारगुप्त (शकरादित्य)** ने 5वीं शताब्दी की शुरुआत में की थी और
    - यह 12वीं शताब्दी तक (600 वर्षों तक) प्रचलित अवस्था में रहा था।
    - इसे सरकार द्वारा **"राष्ट्रीय महत्व के संस्थान"** के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

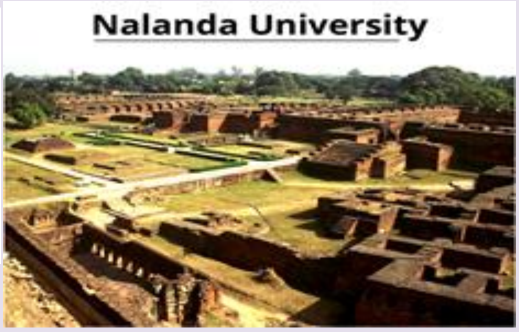

- **बोधगया का महाबोधि मंदिर:** (2002 में सूचीबद्ध)
    - यह वह स्थान है, जहां **भगवान बुद्ध को ज्ञान** प्राप्त हुआ था।
    - **मूल संरचना मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनवाई गई थी।** इसे गुप्त काल के अंत में पूरी तरह से ईंटों से बनाया गया था।
    - **वर्तमान मंदिर 5वीं या 6ठी शताब्दी ई. का है।**

संबंधित सुर्खियां

- विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यदि **मोहनजोदड़ो** के संरक्षण और जीर्णोद्धार पर तत्काल ध्यान नहीं दिया जाता है, तो इसे **यूनेस्को की विश्व विरासत सूची से हटाया जा सकता है।**
- अब तक निम्नलिखित **तीन धरोहरों का विश्व विरासत दर्जा वापस लिया जा चुका है:**
    - ओमान की **अरेबियन ऑरिक्स सैंक्चुअरी** (2007),
    - जर्मनी के ड्रेसडेन में स्थित **एल्बे वैली** (2009), तथा
    - इंग्लैंड का **लिवरपूल (2021)**

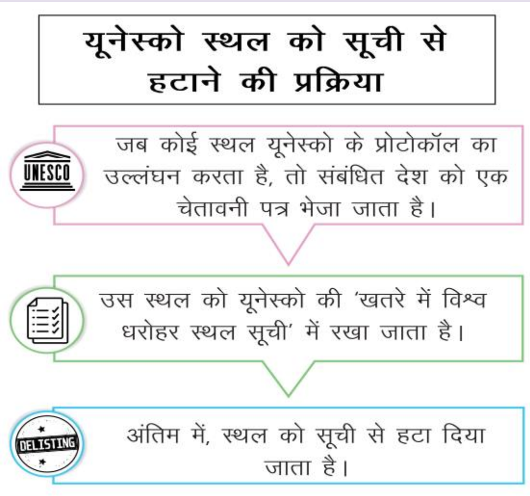

3.2. लौह युग (Iron Age)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **तमिलनाडु के मयिलादम्परै में हुए उत्खनन की कार्बन डेटिंग** से पता चला है कि **भारतीयों को 4200 वर्ष पहले लोहे के इस्तेमाल की जानकारी थी।**

प्रमुख निष्कर्ष

- मयिलादम्परै से खोजे गए लोहे के औजारों के आधार पर तमिलनाडु में लौह युग का संबंध 2172 ईसा पूर्व से 1615 ई. पूर्व का माना जा रहा है।
    - मयिलादम्परै एक महत्वपूर्ण **पुरास्थल** है। यहां से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्रियां **सूक्ष्म पाषाण (30,000 ईसा पूर्व) और प्रारंभिक ऐतिहासिक (600 ईसा पूर्व) युगों** के बीच की हैं।

आरंभिक भारतीय पुरातत्व में प्रमुख कालखंड	
आज से 20 लाख वर्ष पूर्व	निम्न पुरापाषाण
80,000 वर्ष पूर्व	मध्य पुरापाषाण
35,000 वर्ष पूर्व	उच्च पुरापाषाण
12,000 वर्ष पूर्व	मध्य पाषाण
10,000 वर्ष पूर्व	नवपाषाण (आरंभिक कृषक तथा पशुपालक)
6,000 वर्ष पूर्व	ताम्रपाषाण (तांबे का पहली बार प्रयोग)
2600 ई. पू	हड़प्पा सभ्यता
1000 ई. पू	आरंभिक लौहकाल व महापाषाण शवाधान
600 ई. पू-400 ई.	आरंभिक ऐतिहासिक काल

- यहां से प्राप्त सांस्कृतिक साक्ष्यों से पता चला है कि इस **स्थल का समयकाल नवपाषाण काल से ऐतिहासिक काल के मध्य तक** था।
  - **सूक्ष्म पाषाण काल, नवपाषाण काल, लौह युग, आरंभिक या पूर्व-ऐतिहासिक और ऐतिहासिक काल पांच सांस्कृतिक चरण** माने जाते हैं। इन्हें मिट्टी के पात्र, लोहे के उपकरणों, शैल कला, स्मारक पाषाणों और शिलालेखों के आधार पर चिन्हित किया जाता है।
- **तमिलनाडु में उत्तर नवपाषाण चरण की शुरुआत** 2200 ईसा पूर्व से पहले हुई। यह निष्कर्ष दिनांकित स्तर से नीचे पाए गए 25 सेंमी मोटाई के सांस्कृतिक निक्षेपों के अध्ययन पर आधारित है।
- पुरातत्वविदों ने यह भी पाया कि **काले और लाल मृदभांड का नवपाषाण काल के अंत में उपयोग** शुरू हुआ था, न कि लौह युग में। यह खोज प्रचलित मान्यता के विपरीत है।
- **नवीनतम खोज से पहले, तमिलनाडु के लिए लोहे के प्रयोग** का प्रथम साक्ष्य मेट्टूर के समीप **तेलुंगनूर और मंगडु** को माना जाता था। इसका समयकाल **1500 ईसा पूर्व** निर्धारित किया गया था।

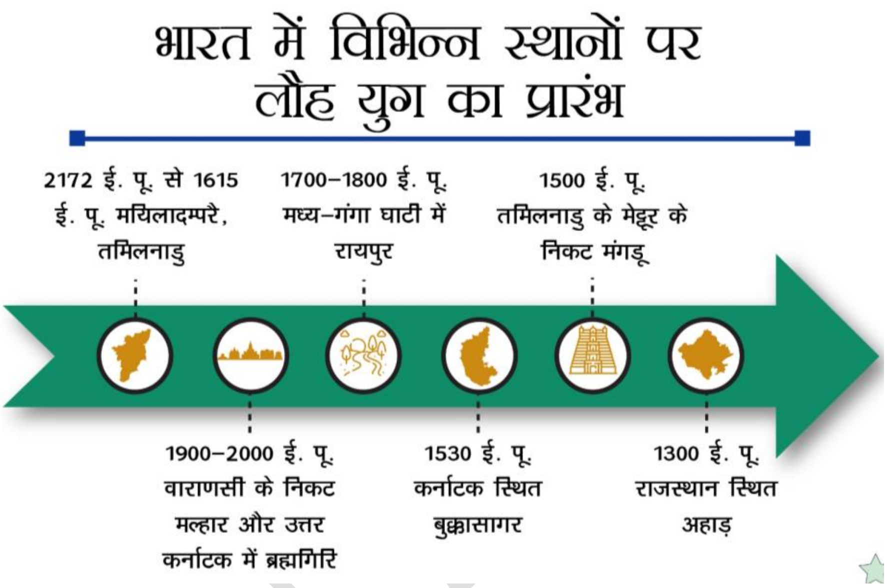

- **निष्कर्षों का महत्व:**
  - यह कालक्रम के पुनर्निर्धारण में सहायक है।
  - इससे यह माना जा सकता है कि हमारा लौहयुगीन सांस्कृतिक आधार 2000 ईसा पूर्व में स्थापित हुआ था।
  - इस तिथि निर्धारण ने सिन्धु घाटी सभ्यता और तमिलगम/ दक्षिण भारत के संगम काल के बीच के अंतर को बहुत कम कर दिया है।

भारतीय सभ्यता में धातु के प्रयोग की प्रासंगिकता: सभ्यता का इतिहास उन धातुओं के उपयोग से जुड़ा है, जो कृषि के लिए आवश्यक हैं और जो बदले में सभ्यता की **सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों** को आकार प्रदान करते हैं।

- **तांबे के उपयोग के दौरान समाज:** सिंधु घाटी सभ्यता में तांबे का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। हालांकि, सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को लोहे की जानकारी नहीं थी।
  - तांबे से बने उपयोगी **उपकरण कमजोर** होते थे; और
  - लोहे के औजारों जितने मजबूत नहीं होते थे। साथ ही, **प्रौद्योगिकी और बड़े पैमाने पर दोहन के लिए तांबे की अनुपलब्धता ने** देश के अन्य क्षेत्रों को पाषाण युग में रहने के लिए विवश कर दिया।
- **लौह युग के उपयोग के दौरान समाज:** उत्तर वैदिक काल के दौरान **आर्य संस्कृति के विस्तार का मुख्य कारक** लगभग 1000 ईसा पूर्व लोहे के उपयोग की शुरुआत थी।
  - लोहे प्रौद्योगिकी के उपयोग से **कृषि औजारों और हथियारों का निर्माण** हुआ। इस प्रकार, कृषि उत्तर वैदिक लोगों के जीवन का मुख्य आधार बन गयी।
  - इसके अतिरिक्त, भारत के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों के **घने वनों को साफ करने के लिए** भी लोहे के औजारों का उपयोग किया जाता था।

3.3. राखीगढ़ी (Rakhigarhi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने हरियाणा के हिसार में हड़प्पा सभ्यता के स्थल राखीगढ़ी का उत्खनन करवाया था। यहां से कुछ **घरों की संरचना, गलियों और जल निकासी व्यवस्था** का पता चला है।

राखीगढ़ी के बारे में

- **राखीगढ़ी भारतीय उपमहाद्वीप के पाँच सबसे बड़े हड़प्पा स्थलों में से एक है।**
  - भारतीय उपमहाद्वीप में सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के अन्य बड़े स्थल पाकिस्तान में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और गनवेरीवाल तथा भारत में धोलावीरा (गुजरात) हैं।
- पुरातात्विक उत्खनन से पता चला है कि **परिपक्व हड़प्पा चरण** का प्रतिनिधित्व योजनाबद्ध नगर प्रणाली द्वारा किया गया था। इसमें कच्ची ईंटों के साथ-साथ पकी हुई ईंटों के घर तथा उनमें उचित जल निकासी की व्यवस्था थी।

संबंधित तथ्य

मोहनजोदड़ो की खोज के 100 वर्ष पूरे हुए

- 1922 में **राखल दास बनर्जी** ने मोहनजोदड़ो में पुरातात्विक अवशेषों की खोज की थी।
  - वे **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक अधिकारी** थे।
  - उन्होंने **1914 में प्रकाशित 'प्राचीन मुद्रा' पुस्तक लिखी थी।** यह **मुद्राशास्त्र** (सिक्कों का अध्ययन) पर केंद्रित पुस्तक थी।
  - उन्होंने बंगाली और अंग्रेजी में **कई विनिबंध (मोनोग्राफ) एवं पुस्तकें** (बांग्लार इतिहास सहित) और उपन्यास लिखे थे।
  - वे **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के शिक्षक** थे।

- मिट्टी से बने फर्श पर कच्ची ईंटों से निर्मित पशु बलि गर्तों तथा त्रिभुजाकार व वृत्तीय अग्नि वेदिकाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

हड़प्पा / सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilisation: IVC) के बारे में

यह दक्षिण एशिया की प्रारंभिक सभ्यता थी।	इसे **कांस्य युगीन सभ्यता** के नाम से भी जाना जाता है। (**मेसोपोटामिया, मिस्र और चीन** ऐसी अन्य सभ्यताएं हैं)	इसे आमतौर पर **सिंधु–सरस्वती सभ्यता** के रूप में भी जाना जाता है।

प्राक हड़प्पाई सभ्यता	परिपक्व हड़प्पाई सभ्यता	उत्तर हड़प्पाई सभ्यता
3300 ई.पू. से 2600 ई.पू.;	2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.	1900 ई.पू. से 1700 ई.पू.

कुछ महत्त्वपूर्ण परिपक्व हड़प्पाई स्थल

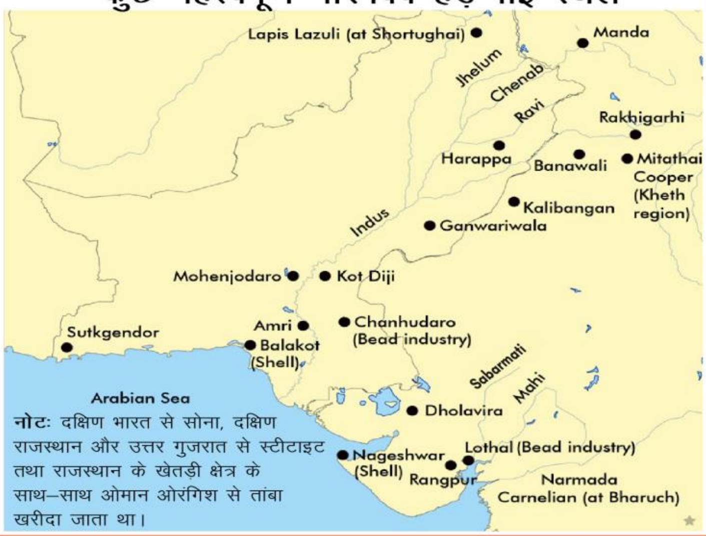

प्रमुख विशेषताएं

- **नगरीय केंद्रों का विकास**
- **लिपि**
  - मुहरों पर लेखन की एक पंक्ति।
  - अधिकांश **अभिलेख छोटे हैं।**
  - **लिपि आज तक पढ़ी नहीं गई है।**
  - यह दाएं से बाएं लिखी गई थी।
  - **बौस्ट्रोफेडन** प्रकृति के साक्ष्य पाए गए हैं जहां लेखन दाएं से बाएं, फिर बाएं से दाएं होता है।
- **सिनौली (UP)** में **एक योद्धा वर्ग की उपस्थिति** का पता चलता है।

- **हाल ही के उत्खनन के दौरान प्राप्त प्रमुख साक्ष्य**
  - उत्खनन में दो महिलाओं के **कंकाल** मिले थे, जो लगभग 5,000 वर्ष पुराने माने जाते हैं। अंत्येष्टि अनुष्ठानों के हिस्से के रूप में, इन कंकाल अवशेषों के साथ पात्र और अन्य कलाकृतियां दफनाई हुई मिली हैं।

- **कलाकृतियां:** सेलखड़ी निर्मित मुहर, टेराकोटा से बनी चूड़ियां, हाथी के रूपांकन के साथ टेराकोटा की मुहर, हड़प्पा लिपि के साक्ष्य आदि।
- **बसावट के चिन्ह:** टीला नंबर 3 के उत्खनन से **"एक कुलीन बस्ती"** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
  - अब तक उत्खनित सभी हड़प्पा स्थलों में, **त्रिस्तरीय अधिवास के एक समान संकेत प्राप्त हुए हैं -** कच्ची ईंट की दीवारों वाली **'सामान्य बस्तियां',** कच्ची ईंट की दीवारों के साथ-साथ पकी हुई ईंट की दीवारों वाली **'कुलीन बस्ती'** और संभावित **'मध्य-स्तर की बस्तियां'।**
  - शोधकर्ताओं ने अभी तक यह निर्धारित नहीं किया है कि ये तीन स्तरीय अधिवास विशेषता समुदाय या व्यवसाय पर आधारित थी या नहीं।
- **आभूषण निर्माणी:** 5,000 वर्ष पुरानी आभूषण निर्माणी के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि इस नगर से व्यापार भी किया जाता था।

प्रमुख हड़प्पा स्थल

प्रमुख हड़प्पा स्थल	प्रमुख विशेषताएं
धोलावीरा (गुजरात)	• गुजरात में **खादिर के शुष्क द्वीप** पर स्थित धोलावीरा **सिंधु घाटी सभ्यता का पांचवां सबसे बड़ा महानगर है।** • यहां से सेलखड़ी अथवा चूना पत्थर की दीवारों से युक्त एक दुर्गीकृत गढ़ी, निचला नगर मध्य नगर के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। उल्लेखनीय है कि अन्य अनेक हड़प्पाई स्थलों से कच्ची ईंटों से निर्मित दीवारों के साक्ष्य मिले हैं। • यहां जलाशयों की सोपानी श्रृंखला के साथ एक **परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली** भी मौजूद थी। • यहां से एक **बड़े कब्रिस्तान** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहां छह प्रकार के स्मारक (cenotaphs) हैं, जो **हड़प्पा के मृत्यु के प्रति अनूठे दृष्टिकोण** के बारे में जानकारी देते हैं। • अन्य हड़प्पाई शहरों के साथ-साथ **मेसोपोटामिया** क्षेत्र और **ओमान** प्रायद्वीप के शहरों के साथ भी **अंतर-क्षेत्रीय व्यापार** के साक्ष्य मिले हैं। • यह स्थल **आभूषण निर्माण कला का भी केंद्र** था। आभूषण सीप व अर्द्ध-कीमती पत्थरों (जैसे गोमेद) से बनाये जाते थे। यहां से काष्ठ का भी निर्यात किया जाता था। UNESCO World Heritage Site

लोथल (गुजरात)	• यह हड़प्पा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण **पत्तन नगर** था। यहां से एक गोदी बाड़े के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसकी संरचना **कच्ची ईंटों** से निर्मित थी।
	  ○ यह खंभात की खाड़ी (गुजरात) के पास **भोगावो और साबरमती** नदियों के बीच स्थित है।
	• लोथल के **एक कब्रिस्तान** से 21 मानव कंकाल मिले हैं।
	• यहां से **तांबे के बर्तन बनाने वाले ढलाई घर की भी खोज** की गई है।
	• इस स्थल से **अर्ध-कीमती पत्थरों, सोने आदि से बने आभूषण भी मिले हैं।**
	
	संबंधित सुर्ख़ियां
	• **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) गुजरात के लोथल में एक नेशनल मेरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (NMHC) बनाने की योजना बना रहा है।**
	  ○ यह देश में अपनी तरह का पहला परिसर होगा, जो **भारत की समृद्ध और विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित** करेगा।
	  ○ यह भारत में **सागरमाला योजना** के तहत संचालित प्रमुख परियोजनाओं में से एक है। सागरमाला योजना को देश में पत्तन आधारित विकास को बढ़ावा देने के लिए आरंभ किया गया है।
	• इसे MoPSW और **संस्कृति मंत्रालय** द्वारा वित्त-पोषित किया जाता है। इसे यह वित्त-पोषण अनुदान के रूप **राष्ट्रीय संस्कृति कोष** से मिलता है।

हड़प्पा (पाकिस्तान)	• **हड़प्पा मुहर** संभवतः हड़प्पा या सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे विशिष्ट कलाकृति है। यह सेलखड़ी नामक पत्थर से बनी हुई है। इस तरह की मुहरों में अक्सर **जानवरों के रूपांकन और एक लिपि के चिह्न** अंकित होते हैं। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। • हड़प्पा से एक **अन्नागार** भी प्राप्त हुआ है। इसमें **ईंट से निर्मित गोलाकार चबूतरों की पंक्तियाँ** थीं। इनका उपयोग अनाज की भूसी निकालने के लिए किया जाता था। • यह **यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल की अनंतिम सूची** में शामिल है।

© Vision IAS

मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान)	• यह **दक्षिण एशिया में सबसे अच्छी संरक्षित नगरीय बस्ती** थी। • इसमें ज्यादातर **पकी हुई ईंटों** से बने नियोजित नगर के दो खंड थे यथा- **पश्चिम में गढ़ी और पूर्व में निचला नगर।** • गढ़ी क्षेत्र में **दूसरी शताब्दी ईस्वी** में बिना पकी ईंटों से एक **बौद्ध स्तूप** का निर्माण किया गया था। • इमारतों को सड़कों के किनारे पर बनाया गया था। **सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटते** हुए एक जाल का निर्माण करती थीं। • इस नगर में एक **सार्वजनिक स्नानागार** था। यह विशाल स्नानागार इस स्थल की सबसे प्रमुख विशेषता थी। अन्य विशेषताओं में पुजारियों का एक विद्यापीठ या अधिवास; **एक विस्तृत जल निकासी प्रणाली; कुएं, अपशिष्ट जल के निपटान के लिए सोख्ता गर्त और एक बड़ा अन्नागार हैं।** • **अन्य महत्वपूर्ण प्रमाण:** मोहनजोदड़ो से **बुने हुए कपड़े** का एक टुकड़ा, कांस्य निर्मित **'नर्तकी'** की मूर्ति और एक **दाढ़ी वाले व्यक्ति** की पत्थर की मूर्ति प्राप्त हुई है।
कालीबंगा (राजस्थान)	• कालीबंगा या **'काली रंग की चूड़ियाँ'। इसका यह नाम काली रंग की चूड़ियों के टुकड़ों के घने वितरण के कारण रखा गया है**, जो इसके टीले की सतह पर पाए गए थे। • यहां से **जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त, कालीबंगा का निचला नगर दुर्गीकृत था।**
बनावली (हरियाणा)	• यह हड़प्पा सभ्यता में अपनी **केंद्रीकृत योजना** के लिए जाना जाता है। • बनावली में **मुख्य सड़कें सीधी होने की बजाय घुमावदार** थीं। • उत्खनन से **तीन प्रकार के सांस्कृतिक अनुक्रम प्राप्त हुए हैं:** पूर्व-हड़प्पा (प्रारंभिक-हड़प्पा), हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा।

3.4. महाकालेश्वर मंदिर (Mahakaleshwar Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में 'महाकाल लोक कॉरिडोर' परियोजना के प्रथम चरण का उद्घाटन किया है।

महाकालेश्वर की पौराणिक कथा

स्थानीय किवदंतियों के अनुसार, उज्जैन में चन्द्रसेन नामक एक शासक था। वह शिव का भक्त था। भगवान शिव उसके लिए महाकाल के रूप में प्रकट हुए और उसके शत्रुओं का नाश कर दिया। अपने भक्तों की प्रार्थना पर शिव उस नगर (उज्जैन) में ही रहने के लिए सहमत हो गए तथा वहां के मुख्य देवता बन गए।

अन्य संबंधित तथ्य

- महाकाल लोक एक **मेगा कॉरिडोर परियोजना है। इस परियोजना के तहत महाकालेश्वर मंदिर परिसर के क्षेत्र का विस्तार** किया जाएगा। इससे अधिक संख्या में श्रद्धालु इस मंदिर में आ सकेंगे।
- **इस कॉरिडोर में दो भव्य प्रवेश द्वार होंगे:**
    - 108 अलंकृत स्तंभों वाली एक समानांतर स्तंभ-पंक्ति (Colonnade) होगी। इनमें **भगवान शिव के आनंद तांडव स्वरुप (प्रफुल्लित नृत्य रूप) को दर्शाया जाएगा।**
    - **50 से अधिक भित्ति चित्रों वाला रनिंग पैनल स्थापित** किया जाएगा। इसमें **शिव पुराण की कथाओं का चित्रण किया जाएगा।**

महाकालेश्वर मंदिर के बारे में

- **महाकाल मंदिर की स्थापना का सही समय ज्ञात नहीं है।** पुराणों के अनुसार **इसकी स्थापना सबसे पहले प्रजापिता ब्रह्मा ने की थी।**
    - आगे चलकर, राजकुमार कुमारसेन (प्रद्योत वंश के राजा चंदा प्रद्योत के पुत्र) ने 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में महाकाल मंदिर की कानून और व्यवस्था के प्रबंधन का दायित्व संभाला था।
        - **प्रद्योत वंश** ने आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच **अवंती** (वर्तमान में मध्य प्रदेश) पर शासन किया था।

अवस्थिति

- यह मंदिर मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है।

महाकालेश्वर मंदिर

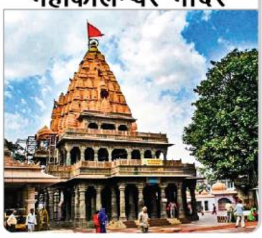

मुख्य विशेषताएं

- **तीन मंजिला मंदिर:** यहां पर सबसे नीचे, मध्य और ऊपरी भागों में क्रमशः **महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर और नागचंद्रेश्वर के लिंग** स्थापित हैं।
- **शिव का रूप:** 'महाकाल' अर्थात् समय और मृत्यु के देवता।
- **गर्भगृह में मूर्तियां:** ज्योतिर्लिंग के अलावा गणेश, कार्तिकेय और पार्वती की मूर्तियां।
- **शिखर:** छोटी मीनारों (Spires) वाले शिखर अत्यंत भव्य हैं।
- मंदिर-परिसर में **कोटि तीर्थ नामक कुंड** भी मौजूद है।

- **कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंशम में इस मंदिर को 'निकेतन' के रूप में वर्णित किया है।** संभवतः इसका कारण यह था कि मंदिर की छतें अधिकतर समतल थीं।
- **इस मंदिर में पुनर्विकास और पुनर्निर्माण का कार्य कई शताब्दियों तक** किया जाता रहा। इसके परिणामस्वरूप, मंदिर परिसर में **भूमिजा, चालुक्य और मराठा स्थापत्य शैली का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है।**
- **महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में सबसे प्रसिद्ध है:**
    - परम्परागत रूप से ज्योतिर्लिंगों के मुख उत्तर या पूर्व दिशा में होते हैं। इसके विपरीत, **महाकालेश्वर एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है, जिसका मुख दक्षिण दिशा में है।** दक्षिण की ओर मुख होने के कारण ऐसा माना जाता है कि यह यम (मृत्यु के देवता) की दिशा का द्योतक है। शिव इस तथ्य के प्रतीक हैं कि वे मृत्यु या महाकाल के स्वामी हैं।
    - महाकालेश्वर को **स्वयंभू अर्थात् स्वयं प्रकट हुआ माना जाता है,** जबकि अन्य ज्योतिर्लिंगों को अनुष्ठानिक रूप से स्थापित माना जाता है।
- महाकालेश्वर मंदिर की सबसे प्रसिद्ध विशेषताओं में से एक यहां की जाने वाली **भस्म आरती** है। **भस्म आरती,** सूखी लकड़ी और गाय के गोबर की राख (भस्म) का उपयोग करके की जाने वाली प्रार्थना है।
    - यह आरती अत्यंत विशिष्ट है और **महिलाओं को इसे देखने की अनुमति नहीं** होती है।

स्थापत्य शैली के संबंध में अन्य तथ्य

- **भूमिजा शैली** के मंदिरों की विशेषता केंद्रीय लैटिना/ शिखर है, जो चारों ओर से ऊपर की ओर पतला होता जाता है। इसके अतिरिक्त, इसमें संलग्न छोटे-छोटे शिखर (Spires) केंद्रीय शिखर को अलंकृत करते हैं।
- **चालुक्य शैली** की अनूठी विशेषता इस शैली के मंदिरों की तारकीय और आधार से सीढ़ीनुमा निर्माण योजना है।
- **मराठा शैली** में निर्मित मंदिरों की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:
    - लकड़ी के बने सभामंडप,
    - साइप्रस (Cypress) वृक्ष के आकार जैसे स्तंभ,
    - पत्थर निर्मित फव्वारे और
    - ईंट एवं चूने से निर्मित शिखर।

Jyotirlingas in India

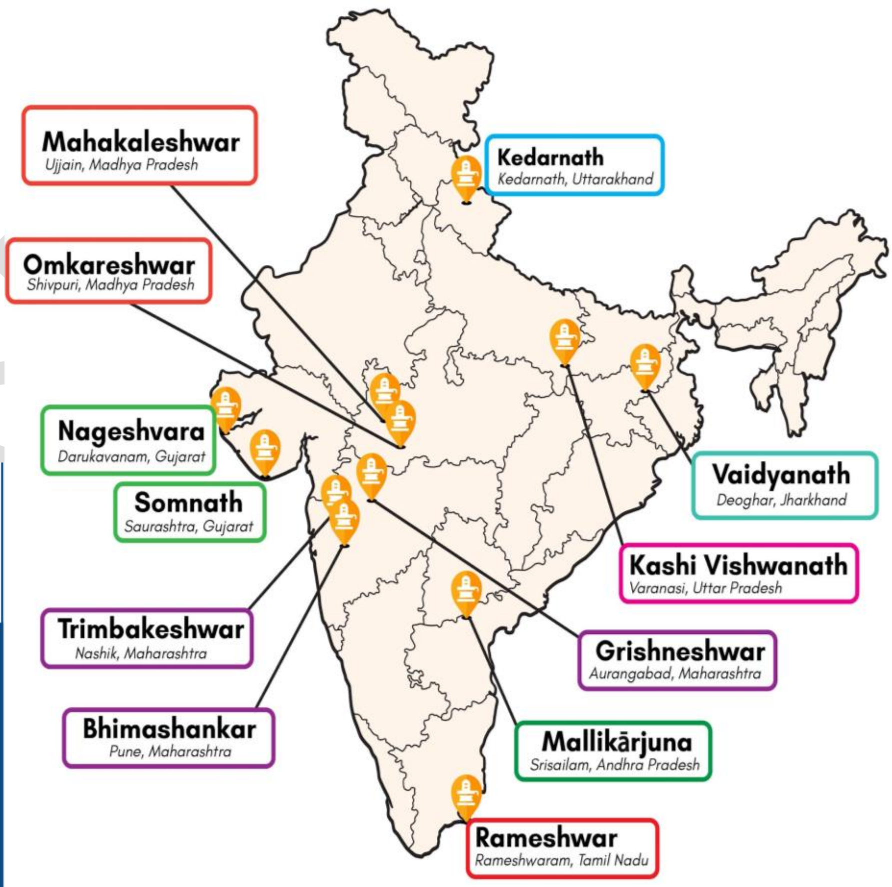

क्या आप जानते हैं?

- उज्जैन शहर भी **हिंदू शास्त्रों की शिक्षा के प्राथमिक केंद्रों में से एक था। इसे छठी और सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अवंतिका** कहा जाता था।
- उज्जैन से जुड़े प्रसिद्ध विद्वान: ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, कालिदास, वराहमिहिर, बाणभट्ट, राजशेखर, पुष्पदंत, शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, भर्तहरि, दिवाकर, कट्टययन आदि।
- **उज्जैन की ऐसी भौगोलिक अवस्थिति है, जहां देशांतर की शून्य मध्याह्न रेखा और कर्क रेखा एक दूसरे को काटती हैं** (सूर्य सिद्धांत में इसका उल्लेख है)।
- 18वीं शताब्दी में **महाराजा जय सिंह द्वितीय** द्वारा यहां एक वेधशाला (Observatory) का निर्माण कराया गया था। इसे जंतर मंतर के नाम से जाना जाता है।

3.5. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अनंतिम सूची (UNESCO's Tentative List of World Heritage Sites)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अनंतिम सूची में **गुजरात के वडनगर शहर, मोढेरा स्थित प्रतिष्ठित सूर्य मंदिर और त्रिपुरा में उनाकोटी की शैल कर्तित (Rock cut) मूर्तियों** को शामिल किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- यूनेस्को की अनंतिम सूची **उन धरोहरों की एक सूची है, जिन्हें प्रत्येक पक्षकार देश विश्व धरोहर का दर्जा दिलाने का इच्छुक** होता है। इस सूची में शामिल होने के बाद **यूनेस्को इन्हें विश्व धरोहर का दर्जा प्रदान करने पर विचार** करता है।
    - अनंतिम सूची में अब **भारत के 52 स्थल दर्ज** हो गए हैं।

तीन नए स्थलों के बारे में

स्थल	प्रमुख विशेषताएं
वडनगर शहर (गुजरात) 	• वडनगर गुजरात के **मेहसाणा जिले के अंतर्गत एक नगर पालिका है।** • यह **एक बहुस्तरीय और बहु-सांस्कृतिक व्यापारिक बस्ती** है। इस नगर का इतिहास लगभग 8वीं शताब्दी ई.पू. से शुरू होता है। • यह **L-आकार का एक** शहर है। इसके **उत्तर-पूर्वी किनारे पर शर्मिष्ठा झील** स्थित है। • वडनगर में **दो प्रमुख प्राचीन व्यापार मार्ग** एक-दूसरे को काटते थे। ○ उनमें से एक **मध्य भारत को सिंध से और आगे उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों** से जोड़ता था। दूसरा मार्ग **गुजरात तट पर स्थित बंदरगाह शहरों को उत्तर भारत** से जोड़ता था। • इसमें **भीतरी बंदरगाह (Hinterland Port), शंख और मनकों के उद्योगों का केंद्र, धार्मिक केंद्र/ मंदिरों का शहर** आदि हैं। • इसका उल्लेख **महान चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के यात्रा वृतांत में भी मिलता** है। • यह **प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का गृह नगर** है।
मोढेरा का सूर्य मंदिर और इसके आस-पास के स्मारक (गुजरात) 	• यह गुजरात के **मेहसाणा जिले में पुष्पावती नदी के बाएं तट** पर स्थित है। पुष्पावती **रूपन नदी की एक सहायक नदी है।** • यह मंदिर **मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली** में निर्मित है (सोलंकी वंश के संरक्षण में)। • इस मंदिर का निर्माण चालुक्य (सोलंकी) राजा **भीमदेव प्रथम** (1022-1063 ई.) के शासन काल के दौरान 1026-27 ई. में हुआ था। • सबसे पुराने **दिलवाड़ा मंदिर** और **रानी की वाव** (रानी उदयमती ने इसका निर्माण कराया था) भी उनके शासन के दौरान बनाए गए थे। • इस मुख्य मंदिर में शामिल हैं- **गर्भगृह, एक सभागार (गढ़मंडप), बाहरी सभाकक्ष (सभामंडप या रंगमंडप) और एक पवित्र सरोवर (कुंड), जिसे अब रामकुंड कहा जाता है।** • इसका निर्माण **चमकीले पीले बलुआ पत्थर से हुआ है।** • इस मंदिर की मूर्तिकला में तीन देव-समूहों की **आदमकद प्रतिमाएं** शामिल हैं। ये देव समूह हैं- **आदित्य, लोकपाल और देवियां।** • इसे इस प्रकार से डिजाइन किया गया है, कि **प्रत्येक विषुव (Equinox) के दौरान, उदय होते सूर्य की पहली किरण सूर्य देव के सिर पर रखे हीरे पर पड़े।** **संबंधित तथ्य** • प्रधान मंत्री ने **मोढेरा गांव को भारत का पहला 24x7 सौर ऊर्जा संचालित गांव घोषित** किया है। ○ मोढेरा गांव के साथ-साथ मोढेरा का सूर्य मंदिर भी भारत का **पहला ऐसा विरासत स्थल बन गया है, जो पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित है।** 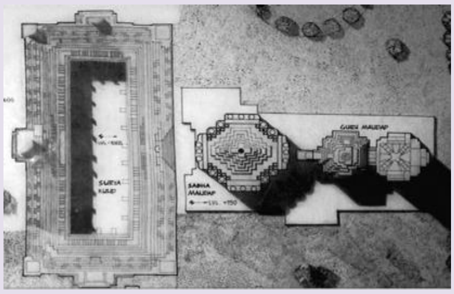

उनाकोटी श्रृंखला में शैल कर्तित मूर्तियां और उभरी हुई नक्काशियां (Rock cut sculptures and Reliefs of Unakoti, Unakoti Range)	• यह त्रिपुरा के **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित** है। उनाकोटी का शाब्दिक अर्थ है- **"एक करोड़ से एक कम"।**
	• यह त्रिपुरा में **8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी से शैव उपासना का प्राचीन प्रमाण** प्रस्तुत करता है।
	• इस स्थल पर चट्टानों पर हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को उकेरा गया है।
	  ○ उनाकोटि की इस मूर्तिकला को **चट्टानों को काटकर बनाई गई (शैल कर्तित) मूर्तियां तथा अलग-अलग मूर्तियों** में वर्गीकृत किया जा सकता है।
	  ○ **प्रसिद्ध आकृतियों और मूर्तियों में शामिल हैं-** उनाकोटीश्वर काल भैरव, गंगाधर, बोधिसत्व का चित्रण, चतुर्मुखलिंग और एकमुखी लिंग आदि।
	• **उनाकोटी में एक जलधारा तीन कुंड का निर्माण** करती है। ये तीनों कुंड **वार्षिक अशोकाष्टमी मेले** का हिस्सा हैं।

3.6. अनंग ताल झील (Anang Tal Lake)

Anang Tal Lake

सुर्ख़ियों में क्यों?

संस्कृति मंत्रालय ने अनंग ताल को **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष, (AMASR) अधिनियम, 1958** के तहत राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया है।

अनंग ताल झील के बारे में

- अनंग ताल **कुतुब परिसर के उत्तर-पश्चिम में जोग माया मंदिर के उत्तर में स्थित** है। इसका निर्माण 1,060 ई. में किया गया था।
  - इसके निर्माण का श्रेय **तोमर वंश के अनंगपाल द्वितीय** को दिया जाता है।
  - इस वंश ने **8वीं और 12वीं शताब्दी के बीच** वर्तमान हरियाणा और दिल्ली के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।

राष्ट्रीय स्मारकों के बारे में

- राष्ट्रीय स्मारक ऐसे प्राचीन स्मारक और सभी पुरातात्विक स्थल एवं पुरावशेष हैं, जिन्हें **निम्नलिखित द्वारा राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया है:**
  - **प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल एवं अवशेष (राष्ट्रीय महत्व की घोषणा) अधिनियम, 1951 की धारा 3 और 4 के तहत;**
  - राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 की धारा 126 के तहत।
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण** ऐसे स्मारकों की सुरक्षा, संरक्षण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।

संस्थापक: अनंगपाल प्रथम	**तोमर वंश** — 8वीं से 12वीं शताब्दी ई.
मुख्य शासक	• **अनंगपाल द्वितीय:** इसने दिल्ली को आबाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। • **पृथ्वीराज चौहान:** मुहम्मद गोरी से तराइन में युद्ध लड़ा था।
मुख्य शहर	• **राजधानी:** इसकी राजधानी शुरू में **अनंगपुर (फरीदाबाद के नजदीक)** थी, जो कई बार बदलती रही। बाद में **ढिल्लिकापुरी (दिल्ली) को तोमर वंश की राजधानी** बनाया गया। • **वर्तमान में इस क्षेत्र की स्थिति:** हरियाणा और दिल्ली
संस्कृति	• **अनंगपाल तोमर द्वितीय ने लाल कोट का निर्माण** किया था (इसे बाद में पृथ्वीराज चौहान द्वारा **किला राय पिथौरा में विलय** कर दिया गया था।)। • **उदयगिरि से महरौली (दिल्ली) स्थित लौह स्तंभ** अनंगपाल द्वितीय ही दिल्ली लेकर आया था। • अनंगपुर गांव के निकट **अनंगपुर बांध** बनाया गया था। • **सूरजकुंड जलाशय** को राजा सूरज पाल ने बनवाया था।

© Vision IAS

3.7. मानगढ़ पहाड़ी (Mangarh hillock)

सुर्ख़ियों में क्यों?

राजस्थान के मुख्यमंत्री ने **राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा[6] देने की मांग** की है।

गोविंद गुरु के बारे में

- गोविंद गुरु **राजस्थान के उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा, गुजरात के इडर तथा मध्य प्रदेश के मालवा** के आदिवासियों के एक **क्रांतिकारी नेता** थे।
- वह **भील और गरासिया आदिवासी समुदायों** के बीच आदिवासियों को एकजुट करने वाले एक महान नेता थे।
- भीलों की स्थिति में सुधार के लिए, गुरु गोविंद ने **1908 में भगत आंदोलन** की शुरुआत की थी। इस आंदोलन में **उन्होंने शाकाहारी भोजन करने और शराब से दूर रहने पर बल दिया था।**
    - उन्होंने अपने समर्थकों से **बंधुआ मजदूरी से इंकार करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने** का भी आह्वान किया था।
    - वे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, जबरन श्रम से इंकार करने, लड़कियों को शिक्षित करने और जनजातियों के बीच आपसी विवादों को अदालतों में ले जाने के बजाय आपसी समझौते से हल करने की वकालत करते थे।

मानगढ़ नरसंहार के बारे में

- वर्ष 1913 में कुछ **भीलों ने एक समाज सुधारक गोविंद गुरु** (एक स्थानीय आदिवासी) और **पुंजा के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह** किया था।
- **नवंबर 1913** में, सैकड़ों आदिवासी **मानगढ़ पहाड़ी पर** शांतिपूर्ण सभा के लिए एकत्र हुए थे। उसी समय उन्हें **ब्रिटिश सैनिकों ने** घेर लिया और **गोली मार दी।**
    - इस घटना को **" छोटा जलियांवाला बाग नरसंहार "** के नाम से भी स्मरण किया जाता है।

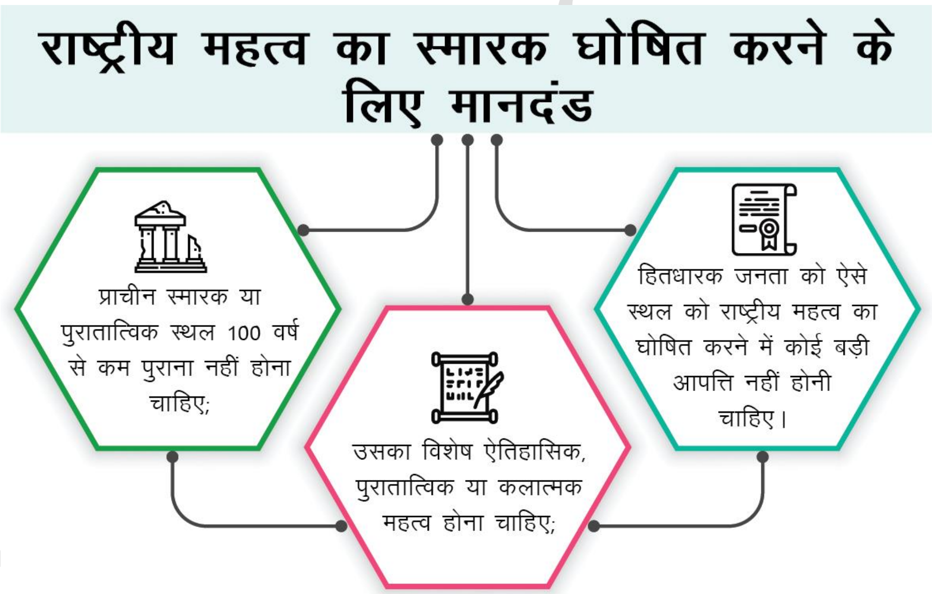

'राष्ट्रीय महत्व' की घोषणा

- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (AMASR) अधिनियम, 1958** के तहत स्थलों/ स्मारकों को राष्ट्रीय महत्व का घोषित करने पर विचार करता है, बशर्ते वे कुछ मानदंडों को पूरा करते हों।

संबंधित सुर्ख़ियां

- राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण ने **निम्नलिखित दो स्थलों को राष्ट्रीय महत्व के स्मारक घोषित करने की सिफारिश** की है:
    - पहला स्थल, **वडोदरा में संकल्प भूमि वटवृक्ष परिसर** है। यहां डॉ. अम्बेडकर ने 23 सितंबर, 1917 को अस्पृश्यता उन्मूलन का संकल्प लिया था।
    - दूसरा स्थल, महाराष्ट्र के सतारा में **प्रताप राव भोसले हाई स्कूल** है। यहां डॉ. अम्बेडकर ने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी।

3.8. प्रसाद योजना के अंतर्गत परियोजनाएं (Projects under PRASHAD Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, राष्ट्रपति ने प्रसाद (PRASHAD) योजना के तहत कई परियोजनाओं का उद्घाटन किया है।

[6] National Monument Status

अन्य संबंधित तथ्य

- भारत के राष्ट्रपति ने प्रसाद (PRASHAD) योजना के तहत **"आंध्र प्रदेश में श्रीशैलम मंदिर की विकास" परियोजना** का उद्घाटन किया है।
- राष्ट्रपति ने तेलंगाना में भद्राचलम और रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिरों में प्रसाद (PRASHAD) परियोजना की आधारशिला रखी है।

राष्ट्रीय तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्द्धन अभियान (प्रसाद/PRASAD) योजना

- **प्रकारः** केंद्रीय क्षेत्रक की एक योजना।
- **उद्देश्यः** पूर्ण धार्मिक पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए तीर्थ यात्रा स्थलों का एकीकृत विकास।
- यह धार्मिक पर्यटन अनुभव को समृद्ध करने के लिए पूरे भारत में **तीर्थ स्थलों को विकसित करने और पहचानने पर केंद्रित** है।
- यह सार्वजनिक–निजी साझेदारी और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) वित्त–पोषण के जरिए से **निजी क्षेत्रक से लाभ** प्राप्त करती है।

स्वीकार्य घटक

- अवसंरचना विकास
- क्षमता निर्माण, कौशल विकास और ज्ञान प्रबंधन
- ऑनलाइन उपस्थितिः GIS आधारित पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन
- सूचना शिक्षा और संचार

इतिहास

- यह मंदिर **भगवान शिव (भगवान मल्लिकार्जुन स्वामी) और देवी पार्वती (देवी भ्रमराम्बा देवी)** को समर्पित है।
- इसे **इक्ष्वाकु शासकों का संरक्षण** (200–300 ईस्वी) भी प्राप्त था। **रेड्डी शासकों** (1325–1448) के समय इसका **स्वर्ण युग** माना जाता है।
- **चालुक्य, काकतीय और विजयनगर** साम्राज्य ने भी इसके **विकास में योगदान** दिया था।

श्रीसैलम मंदिर (कुरनूल, आंध्र प्रदेश)

स्थापत्य संबंधी विवरण

- इसके पीठासीन देवता **लिंगम के आकार में भ्रमराम्बा मल्लिकार्जुन स्वामी हैं।**
- इसे भगवान शिव के **12 ज्योतिर्लिंगों में से एक और पार्वती के 18 महाशक्ति पीठों में से एक** माना जाता है।

अन्य मुख्य विशेषताएं

- यह भारत का **एकमात्र ऐसा मंदिर है, जो शैव और शाक्त,** दोनों के उपासकों के लिए पवित्र है।
- इसे **पाडल पेत्रा स्थलम** में से एक के रूप में भी वर्गीकृत किया गया है, जिसे **तमिल तेवरम भजनों** में गौरवान्वित किया गया है।
- इसका **प्राचीनतम उल्लेख सातवाहन राजवंश के शासक पुलुमावी** के दूसरी शताब्दी ई. के **नासिक शिलालेख** में प्राप्त होता है।

© Vision IAS

इतिहास

- यह **रामलिंगेश्वर स्वामी** को समर्पित है।
- इसके शिल्पकार का नाम **रामप्पा** था। इसका निर्माण काकतीय राजा गणपति देव के शासनकाल में उसके सेनापति **रेचारला** रुद्र द्वारा करवाया गया था।

रुद्रेश्वर मंदिर (रामप्पा मंदिर, मुलुगु, तेलंगाना)

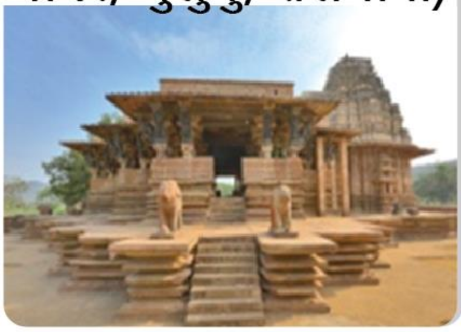

स्थापत्यकला का विवरण

- यह **बलुआ पत्थर** से निर्मित मंदिर है। यह मंदिर काकतीय काल की **विशिष्ट शैली, तकनीक और सजावट** को दर्शाता है, जैसे–
  - ▶ इसमें **अलंकृत ग्रेनाइट और डॉलराइट के बीम एवं स्तंभों** पर जटिल नक्काशी की गई है।
  - ▶ हल्की **झरझरा ईंटों (तथाकथित 'तैरने वाली ईंटों') से बना एक अद्भुत और पिरामिडनुमा विमान (क्षैतिज सीढ़ीदार बुर्ज) है।**

अन्य प्रमुख विशेषताएं

- इसे वर्ष 2021 में **यूनेस्को की विश्व विरासत सूची** (सांस्कृतिक) में शामिल किया गया था।
- यह हजार **स्तंभ मंदिर और रामप्पा मंदिर** के नाम से भी लोकप्रिय है।

इतिहास

- यह **भगवान राम को समर्पित** है।
- यह **कांचेरला गोपन्ना** द्वारा निर्मित या पुनर्निर्मित है। उसे **गोलकुंडा (1626–1672 ई.) के सुल्तान अबुल हसन कुतुब शाह के शासनकाल में भद्राचल रामदासु राजस्व अधिकारी (तहसीलदार)** के नाम से भी जाना जाता था।

श्री सीता रामचंद्र स्वामीवरी देवस्थानम, भद्राचलम, तेलंगाना

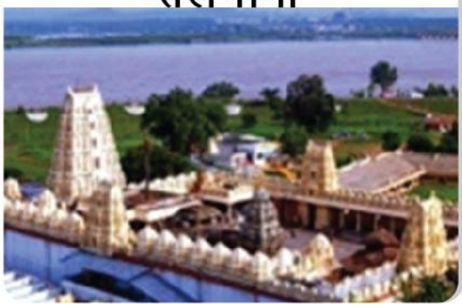

अन्य प्रमुख विशेषताएं

- यह **गोदावरी नदी के बाएं तट** पर स्थित है।
- यह **परणासाल गांव (दंडकारण्य वन) और रावण द्वारा माता सीता के अपहरण स्थल के करीब स्थित** है।

3.9. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

अंगकोरवाट मंदिर परिसर (कंबोडिया)	• विदेश मंत्री ने सभ्यतागत संबंधों के कारण **अंगकोरवाट मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार** करने के भारत के प्रयासों पर प्रकाश डाला है।
	• अंगकोरवाट का अर्थ है '**मंदिरों का शहर**'। इस प्राचीन मंदिर परिसर का निर्माण 12वीं शताब्दी की शुरुआत में **सूर्यवर्मन द्वितीय** ने कराया था।
	  ○ प्रारंभ में, यह हिंदू देवताओं **शिव, ब्रह्मा और विष्णु** को समर्पित था। हालांकि, **बाद में इसे बौद्ध मंदिर के रूप में परिवर्तित** कर दिया गया था।
	  ○ यह मंदिर कंबोडिया के **सिएम रीप** प्रांत में स्थित है। यह दुनिया की सबसे बड़ी **धार्मिक संरचना** है।
	  ○ इसमें कई मंदिर, जलीय संरचनाएं (बेसिन, बांध, जलाशय व नहर) और संचार मार्ग आदि शामिल हैं।

अम्बेडकर सर्किट	• अंबेडकर सर्किट को कवर करने के लिए **एक विशेष पर्यटक ट्रेन** चलाने की घोषणा की गई है।
	• **अम्बेडकर सर्किट में शामिल हैं:**
	  ○ **मध्य प्रदेश का महू** (अंबेडकर की **जन्मस्थली);**
	  ○ **महाराष्ट्र का नागपुर** (जहाँ उन्होंने **बौद्ध धर्म को अपनाया था);**
	  ○ **दिल्ली का निवास** (जहां वे अपने **जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान रहते थे);**
	  ○ **महाराष्ट्र का दादर** (जहां उनके पार्थिव शरीर का **अंतिम संस्कार किया गया था)।**

4. प्रमुख व्यक्ति (Personalities)

4.1. आदि शंकराचार्य (Adi Shankaracharya)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **केरल के कलाडी गांव** में श्री आदि शंकराचार्य जन्मभूमि क्षेत्र का दौरा किया।

आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित 4 वैदिक मठ

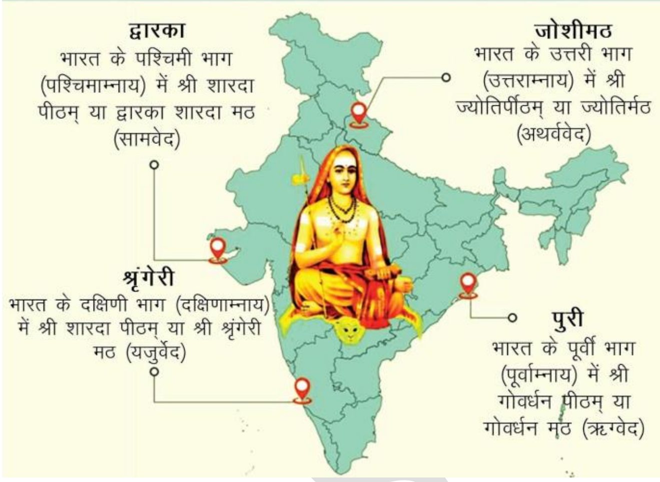

आदि शंकराचार्य

इनके बारे में

- आदि शंकराचार्य को जगद्गुरु श्री आदि शंकराचार्य के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें भगवान **शिव का अवतार** भी माना जाता है।
- इन्हें **अद्वैत वेदांत और 'दशनामी संप्रदाय' के लिए भी जाना जाता है।** उन्होंने **सनातन धर्म** का उत्थान करने के लिए भी कार्य किया था।

आदि शंकराचार्य के गुरु

- **गोविंद भगवतपाद (गौड़पादाचार्य के शिष्य):** ये वेदांत संप्रदाय के दार्शनिक थे। आदि शंकराचार्य ने इनसे **गौड़पाद कारिका (Gaudapada-karikas), ब्रह्मसूत्र, वेद और उपनिषदों** का ज्ञान प्राप्त किया था।
  - **गौड़पाद–कारिका:** यह सबसे पुराना प्रचलित अद्वैत वेदांत ग्रंथ है।
  - गौड़पाद को **'अस्पर्श योग' और 'अजातिवाद'** की शुरुआत के लिए जाना जाता है।

श्री आदि शंकराचार्य का दर्शन

- आदि शंकराचार्य **वेदांत दर्शन** से संबंधित थे। उन्होंने **अद्वैत वेदांत (अद्वैतवाद) का दर्शन** प्रतिपादित किया था।
  - **अद्वैत वेदांत को ज्ञान कांड या अद्वैतवाद** के नाम से भी जाना जाता है। वेदों को उपनिषदों के साथ जोड़ने वाले **वेदांत दर्शन** के तहत यह पहला मुख्य उप–दर्शन है।
  - इन्होंने कहा था कि व्यक्ति **अपनी जीवात्मा (आत्मा) और परमात्मा (ब्रह्म) के बारे में सच्चा ज्ञान प्राप्त करके** अपने जीवन में ही मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।
- **विरोध:** इन्होंने **मीमांसा दर्शन का कर्मकांड को बढ़ावा देने और मृत्यु के बाद मोक्ष** प्राप्त करने के विचार के कारण विरोध किया था। ध्यातव्य है कि **मीमांसा दर्शन भारत के छह आस्तिक या रूढ़िवादी दर्शनों** में से एक है।
  - इन्होंने **मीमांसा दर्शन पर मंडन मिश्र और उनकी पत्नी उभया भारती** के साथ शास्त्रार्थ/वाद–विवाद किया था तथा उन्हें इसमें पराजित किया था।
  - इस शास्त्रार्थ में हुई अपनी हार पर **मंडन मिश्र** शंकराचार्य के शिष्य बन गए थे। **मंडन मिश्र** को ही बाद में **सुरेश्वर (सुरेश्वराचार्य)** के नाम से जाना गया था।

आदि शंकराचार्य के शिष्य

- पद्मपाद, तोटकाचार्य, हस्तामलक और सुरेश्वराचार्य।
- इन सभी ने आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों का अलग–अलग नेतृत्व किया था।

आदि शंकराचार्य के मुख्य योगदान

संप्रदाय और परंपराएं	षण्मत (Shanmata): • **षण्मत (छह धर्म), छह उप-संप्रदायों** का संश्लेषण है। ○ इसमें से प्रत्येक उप-संप्रदाय में किसी एक प्रमुख देवता की उपासना की जाती है। इन देवताओं में **शिव, विष्णु, शक्ति, गणेश, सूर्य और स्कंद (कुमार)** शामिल हैं। ये छह प्रमुख देवता एक ईश्वरीय शक्ति का भाग हैं। • **षण्मत** में इन सभी का विलय किया गया है। इसके अनुयायियों को **स्मार्त (स्मार्त परंपरा)** के रूप में भी जाना जाता है। मूलतः स्मृति (धर्म शास्त्र) का पालन करने वाले व्यक्ति को स्मार्त कहा जाता है।

	दशनामी संप्रदाय: • यह आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित हिंदू धर्म की एक **मठवासी परंपरा** है। यह परंपरा मठवासी जीवन जीने की शिक्षा देती है। इसमें भिक्षुओं को 10 अलग-अलग उपाधियों के तहत वर्गीकृत किया जाता है।
धार्मिक ग्रंथ	• उन्होंने **ब्रह्म सूत्र, उपनिषद और भगवद गीता** जैसे धार्मिक ग्रंथों पर भाष्य लिखे थे। उदाहरण के लिए, **'ब्रह्मसूत्र भाष्य'**। यह 'ब्रह्मसूत्र' पर सबसे प्राचीनतम उपलब्ध भाष्य या टीका है। • उन्होंने **'उपदेशसहस्री'** अर्थात् एक हजार शिक्षाएं नामक ग्रंथ की रचना की थी। इसमें **अद्वैतवाद** के उनके दर्शन का विस्तृत विवरण मिलता है। ○ **अन्य रचनाएं:** विवेकचूड़ामणि, आत्मबोध, वाक्यवृत्ति आदि। • उन्होंने सौन्दर्यलहरी, शिव आनंदलहरी, निर्वाण शतकम और मनीषा पंचकम जैसे **72 भक्तिमय तथा ध्यानपूर्ण स्तुतियों** की भी रचना की थी।

अद्वैत वेदांत (अद्वैतवाद) के बारे में

- इसके अनुसार, ब्रह्म या आत्मा ही परम सत्य (परमार्थ) है, जो बदलता नहीं है। यह **तत्वमीमांसा की दृष्टि से सत्य है और सत्तामीमांसा की दृष्टि से सटीक।**
    - **जीवात्मा** इससे अभिन्न है और ब्रह्म से अलग संसार का कोई पृथक अस्तित्व नहीं है।
- **परिवेश या भौतिक वातावरण** भ्रम या माया द्वारा निर्मित सदा परिवर्तन होने वाला **व्यवहार या अनुभवजन्य (व्यावहारिक) वास्तविकता है।**
    - **प्रतिभासिक या भ्रामक वास्तविकता** कल्पना के माध्यम से निर्मित वास्तविकता का एक अन्य स्तर है।
- **मिथ्या और अविद्या के कारण ही जीव, अनेकत्व को देखता है या ब्रह्म से खुद को अलग देखता है।**
- **ज्ञान,** जीव को देहान्तरण और सांसारिक बंधनों के चक्र से मुक्त करने के लिए परम सत्य तक पहुंचने में मदद करता है। इसे वेदांत द्वारा निम्नलिखित तीन शब्दों में वर्णित किया गया है- **"सत्-चित्-आनंद", जिसका अर्थ है- सत्य, चेतना** और **आनंद।**
- इसके अनुसार **आत्मा ही एकमात्र 'सत्' अथवा परम सत्य है।** मनुष्य परम सत्य की चेतना या ज्ञान प्राप्त करके ही आनंद या सुख प्राप्त करता है।

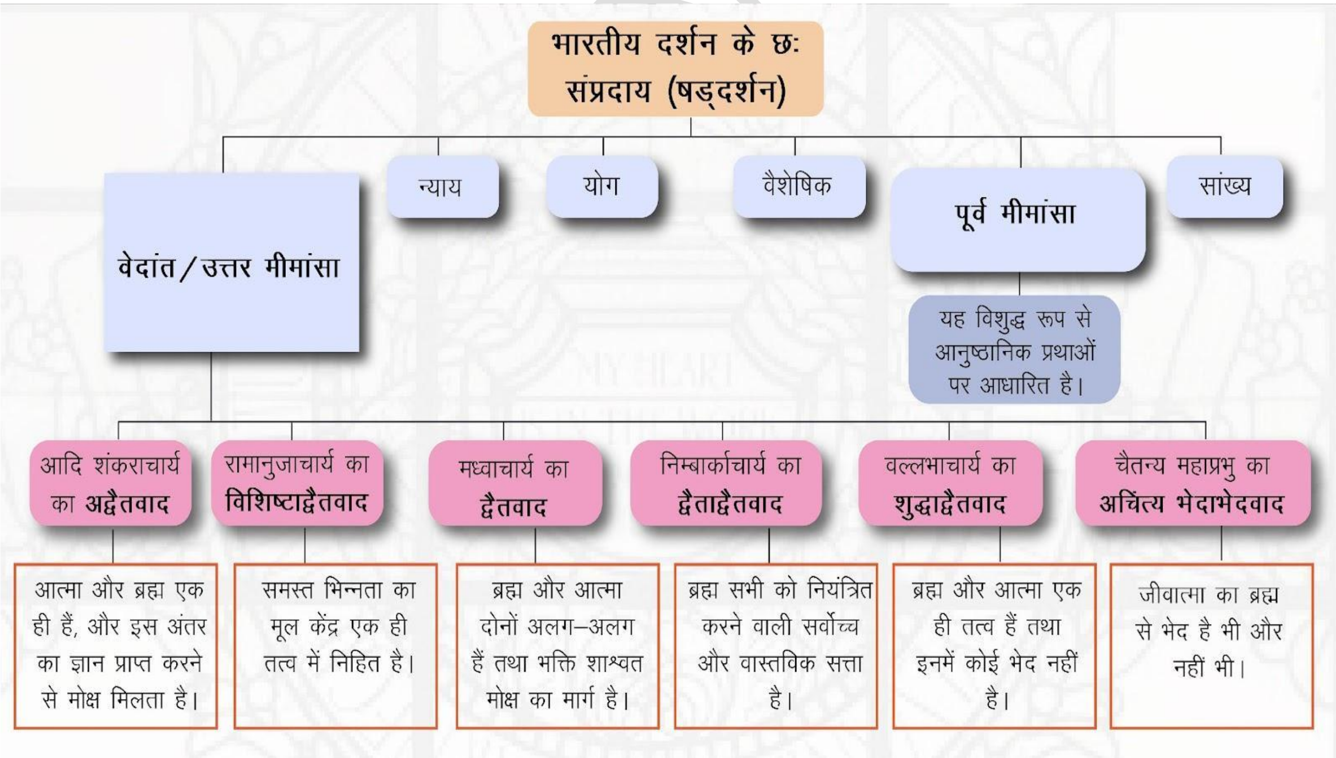

4.2. स्वामी रामानुजाचार्य (Swami Ramanujacharya)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्रीय गृह मंत्री ने श्रीनगर में स्वामी रामानुजाचार्य की प्रतिमा **'स्टैच्यू ऑफ पीस'** का अनावरण किया। इसे श्रीनगर के सोनवर क्षेत्र के एक मंदिर में स्थापित किया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- फरवरी 2022 में, प्रधानमंत्री ने **हैदराबाद में स्वामी रामानुजाचार्य की 216 फीट ऊंची स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी** का भी अनावरण किया था।
- **नोट:** श्रीनगर की स्टैच्यू ऑफ पीस, प्रधान मंत्री द्वारा **जैन भिक्षु आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर** की राजस्थान (2020) में अनावरण की गई **'स्टैच्यू ऑफ पीस'** से अलग है।
    - इसके अलावा, **एक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी** भी है। यह **सरदार वल्लभ भाई पटेल को समर्पित** विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

श्री रामानुजाचार्य

इनके बारे में

- **जन्मः 11वीं शताब्दी** में तमिलनाडु में।
- उनके गुरु ने उन्हें **प्रतिष्ठित उपाधि "एम–पेरुम–आनार" से सम्मानित किया था।** इसका अर्थ है **'आप हमसे आगे हैं'।**

एक दार्शनिक के रूप में श्री रामानुजाचार्य का योगदान

- **प्रभावितः** वे **अलवार संतों (विष्णु उपासकों) से बहुत प्रभावित** थे।
- **प्रतिपादकः इन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत को प्रतिपादित किया था।**
- रामानुज ने **भक्ति आंदोलन को पुनर्जीवित किया था।**
    - इन्हें **अन्नामाचार्य, भक्त रामदास, त्यागराज, कबीर और मीराबाई जैसे कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत** माना जाता है।
- **नौ शास्त्रों के रचनाकारः** इन्होंने श्री भाष्य, गीता भाष्य और वेदार्थ–संग्रह सहित **नवरत्नों के नाम से विख्यात नौ शास्त्रों की रचना की थी।** इन्होंने वैदिक शास्त्रों पर भाष्यों की भी रचना की थी।
- मंदिरों में किए जाने वाले **अनुष्ठानों के लिए सही प्रक्रियाओं** को स्थापित करने का श्रेयः इनमें सबसे प्रसिद्ध **तिरुमाला और श्रीरंगम** हैं।

सामाजिक समानता के समर्थक के रूप में श्री रामानुजाचार्य का योगदान

- **इन्होंने सभी के लिए अपने दरवाजे खोलने के लिए प्रोत्साहित किया।**
- **इन्होंने शाही दरबारों से लोगों के साथ समान व्यवहार करने** पर भी बल दिया।
- उन्होंने **"वसुधैव कुटुम्बकम" (मूल रूप से महा उपनिषद में)** की अवधारणा को प्रतिपादित किया।
- **इन्होंने भगवान की भक्ति,** करुणा,विनम्रता, समानता और आपसी सम्मान के माध्यम से **सार्वभौमिक मोक्ष** की बात की थी। इसे **श्री वैष्णव संप्रदाय** के रूप में जाना जाता है।

श्री रामानुजाचार्य के दर्शन के विषय में - विशिष्टाद्वैत:

- उनके अनुसार **परमात्मा के साथ एक होने पर भी आत्मा अलग रहती है।**
- **इस दर्शन की मान्यता है कि** सर्वोच्च सत्ता सगुण ब्रह्म है। यह अनगिनत अच्छे गुणों वाला एक प्राणी है। यह एक योग्य संपूर्ण है, जिसमें ब्रह्म आत्मा है तथा जीव व जगत (आत्मा और भौतिक प्रकृति) शरीर का गठन करते हैं, जिसका संपूर्ण के साथ एक अविभाज्य संबंध है।
    - यद्यपि यह एक **अद्वैत** संपूर्ण है, फिर भी इसमें आंतरिक भिन्नताओं की विशेषता है।
    - यही कारण है कि इस एक वास्तविकता को **'विशिष्टाद्वैत'** कहा जाता है। इसका अर्थ है **'योग्य अद्वैतवाद'।**
    - यहां अद्वैत वास्तविकता को उसके गुणों से जाना जाता है- आत्मा और संसार जो दो अलग-अलग प्रकृति के हैं। ये दो प्रकार की अलग-अलग संस्थाएं हैं, लेकिन संपूर्ण के वास्तविक हिस्से हैं।
- **इसे 'विशिष्टाद्वैत' नाम रामानुज द्वारा नहीं दिया गया था, लेकिन बाद में लोगों द्वारा इसका प्रयोग किया जाने लगा था।**

4.3. संत तुकाराम (Sant Tukaram)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **महाराष्ट्र के मंदिर शहर देहू में संत तुकाराम शिला (चट्टान) मंदिर** का उद्घाटन किया है।

संत तुकाराम

इनके बारे में

- इन्हें **तुकोबा, तुकाराम बोल्होबा अम्बिले** आदि के नाम से भी जाना जाता था।
- वह **महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के संतों** में से एक थे।
- **शिवाजी महाराज उनका बहुत सम्मान करते थे।**
- **महात्मा गांधी** ने यरवदा सेंट्रल जेल में अपनी कारावास अवधि के दौरान **उनकी कविताएँ पढ़ी थीं और उनका अनुवाद किया था।**

साहित्यिक कार्य

- **अभंग काव्य के रचनाकर्ता: यह** साहित्य की एक **मराठी शैली है, जो आध्यात्मिक विषयों के साथ लोक कथाओं** पर केंद्रित है।
- **उनके कीर्तन:** हिंदू भगवान विष्णु के अवतार **विठोबा या विट्ठल को समर्पित थे।**
- **तुकाराम गाथा के संकलनकर्ता: इसकी रचना मराठी भाषा में की गई थी। यह 'अभंग गाथा'** के नाम से भी लोकप्रिय था।

समाज सुधार

- इन्होंने **जाति व्यवस्था को अस्वीकृत किया** और कर्मकांडों का विरोध किया।
- इन्होंने **अखिल भारतीय भक्ति साहित्य में वारकरी परंपरा'** का विस्तार करने में मदद की थी।
- इनको **वारी तीर्थयात्रा शुरू करने** का श्रेय दिया जाता है।

वारकरी के बारे में

- वारकरी को उस **व्यक्ति या समूह के रूप में** संदर्भित किया जा सकता है, जो महाराष्ट्र के **पंढरपुर शहर में भगवान विठोबा या विट्ठल के मंदिर की तीर्थ यात्रा करता है।**
- पंढरपुर की यात्रा महाराष्ट्र के **विभिन्न शहरों और कस्बों** से शुरू होती है। प्रत्येक तीर्थयात्री **मध्ययुग के महत्वपूर्ण कवि संतों** द्वारा शुरू किए गए पथ का अनुसरण करता है। ये संत भगवान विट्ठल के अति निष्ठावान भक्त थे।
  - कस्बों और शहरों में **जलगाँव, पैठण, दौलताबाद, आलंदी, देहू** तथा कई अन्य शहर शामिल हैं।
  - प्रत्येक शहर या कस्बा महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के एक या अधिक संतों जैसे **मुक्ताबाई, एकनाथ, जनार्दनस्वामी, ज्ञानेश्वर और तुकाराम** से जुड़ा हुआ है।

संत तुकाराम महाराज - गाथा मंदिर के बारे में

- गाथा मंदिर **पुणे** स्थित **देहू** नामक एक गाँव में स्थित है।
- यह **सफेद संगमरमर** से बना है।
- संत तुकाराम महाराज के पुराने मंदिर के निकट **इंद्रायणी नदी के तट** पर स्थित है।

4.4. लचित बोरफुकन (Lachit Borphukan)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **अहोम सेनापति लचित बोरफुकन** की 400वीं जयंती का तीन दिवसीय उत्सव **नई दिल्ली** में मनाया गया है।

लचित बोरफुकन

इनके बारे में

- ये 17वीं शताब्दी में **अहोम सेना के सेनापति थे।**
- इनको राजा चक्रध्वज सिंह द्वारा अहोम साम्राज्य के पांच बोरफुकनों में से एक के रूप में चुना गया था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- **सराईघाट का युद्ध (1671 ई.):** इन्होंने मुगलों को पराजित किया था।
- इनके पार्थिव शरीर का अवशेष: **लचित मैदान** में रखे गए है। इस मैदान का निर्माण **1672 ई.** में **स्वर्गदेव उदयादित्य सिंह** ने कराया था।

अहोम राजवंश

संस्थापक: छो लुंग सुकफा

13वीं–14वीं शताब्दी

मुख्य शासक	• **छो लुंग सुकफा**: वह मोंग माओ कबीले का शान राजकुमार था। • **सुदंगफा**: इसने अपने शासनकाल में हिन्दू धर्म अपना लिया था।
प्रमुख नगर	• **चराइदेव**: यह गुवाहाटी के पूर्व में स्थित है। यह अहोम राज्य की प्रथम राजधानी थी। • **पश्चातवर्ती राजधानी नगर**: चरागुआ, गढ़गाओं, रंगपुर, जोरहाट आदि। • अलग–अलग स्थापत्य शैलियों का मिश्रण।
संस्कृति	• **मूगा रेशम कीट पालन** के अगुआ थे। मूगा रेशम से निर्मित वस्त्र पहनते थे। • **कवियों और विद्वानों को भूमिदान** दिया जाता था तथा नाट्यकला को भी प्रोत्साहन दिया जाता था। • बुरंजी इतिवृत्तों को गद्य परंपरा में लिखा जाता था। • विस्तृत शवाधान मकबरों **"मोइदाम या मैदाम"** का निर्माण कराया गया था। • **शिवडोल, देवीडोल, विष्णुडोल** जैसे महत्वपूर्ण मंदिरों का निर्माण हुआ था।
भाषा	• **अहोम या ताई–अहोम** भाषा। • बाद में **असमी भाषा** को अपनाया गया था। • महत्वपूर्ण **संस्कृत ग्रंथों** का स्थानीय भाषा में अनुवाद करवाया गया था।
प्रशासन	• अहोम शासक **स्वर्गदेव** कहलाते थे। • मंत्रिपरिषद को **पात्र मंत्री** कहा जाता था। • सैन्य व न्यायिक प्रधान को **बोरबरुआ** तथा सैन्य व असैन्य अधिकारी को **बोरफुकन** कहा जाता था। ये बहुत ही महत्वपूर्ण अधिकारी होते थे। • उन्होंने भुइयां (जमींदारों) की पुरानी राजनीतिक प्रणाली को बदल दिया था। • अहोम सेना में पैदल सेना, नौसेना, तोपखाने, हाथी, घुड़सवार सेना और गुप्तचर शामिल थे। • अहोम सैनिक **गुरिल्ला लड़ाई** में निपुण थे।
सामाजिक–धार्मिक परिस्थितियां	• समाज को **कुलों** में विभाजित किया गया था, जिन्हें 'खेल' कहा जाता था। एक खेल अक्सर कई गांवों को नियंत्रित करता था। • उन्होंने **हिंदू धर्म के कई तत्वों जैसे वर्ण व्यवस्था** को अपनाया हुआ था। • शुरुआत में, वे **आदिवासी देवताओं** की पूजा करते थे। • उन्होंने सुदांगफा (1397–1407) के शासनकाल के समय **हिंदू धर्म को अपनाया था।**

अहोम शासन 1826 ई. में अंग्रेजों द्वारा असम के कब्जे (यान्डाबू की संधि) के साथ समाप्त हो गया था।

4.5. राजा राममोहन राय: भारतीय पुनर्जागरण के जनक (Raja Ram Mohan Roy: Father of Indian Renaissance)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संस्कृति मंत्रालय द्वारा राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती मनाई गई।

राजा राम मोहन राय को प्राप्त विभिन्न उपनाम/ उपाधियां

- इन्हें **वर्ष 1831** में मुगल सम्राट **अकबर द्वितीय ने 'राजा' की उपाधि** प्रदान की थी।
- इन्हें **गोपाल कृष्ण गोखले** ने **'आधुनिक भारत का जनक'** कहा था।
- इन्हें **रवींद्रनाथ टैगोर** ने एक **'भारतपथिक'** कहा था।

व्यक्तिगत जीवन

- **जन्म:** उनका जन्म 22 मई, 1772 को बंगाल प्रेसीडेंसी के हुगली जिले के राधानगर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम रमाकांत राय और माता का नाम तारिणी देवी था।
- **शिक्षा:** आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने **वेदों, उपनिषदों, कल्प सूत्र और अन्य जैन ग्रंथों** का भी अध्ययन किया था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने हरिहरानंद तीर्थस्वामी की सहायता से **तांत्रिक कृतियों** का भी अध्ययन किया था। उन्होंने **इस्लाम और ईसाई धर्म**

के धार्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया था। इस प्रकार की शिक्षा ने उन्हें धार्मिक हठधर्मिता और सामाजिक बाध्यताओं के प्रति संशयशील बना दिया था।

  - **बहुभाषाविद:** वे बंगाली, फारसी, अरबी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता थे।
- **जीविका:** उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवाओं में **क्लर्क** के रूप में प्रवेश किया था। बाद में वे **दीवान के पद पर पदोन्नत हुए थे।**
- **मृत्यु:** वर्ष 1833 में ब्रिस्टल, इंग्लैंड में निवास के दौरान उनकी **मस्तिष्कावरण शोथ (meningitis) से मृत्यु** हो गई थी।

उनके कुछ महत्वपूर्ण योगदान इस प्रकार हैं-

- **बंगाल सती विनियमन, 1829:** यह विनियमन गवर्नर जनरल **विलियम बैंटिक** के प्रशासनकाल में पारित हुआ था। इस विनियमन ने सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया था। ज्ञातव्य है कि राय ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के साथ मिलकर सती प्रथा के खिलाफ अथक प्रयास किये थे, जिनके परिणामस्वरूप यह पारित किया गया था।

- **महिलाओं को समान अधिकार:** उन्होंने महिलाओं के लिए समान विरासत के अधिकार की मांग करते हुए बाल विवाह और बहुविवाह का भी कड़ा विरोध किया था।
- **शैक्षिक सुधार:** उन्होंने शिक्षा के आधुनिकीकरण, विशेष रूप से पश्चिमी पाठ्यक्रम की शुरुआत के लिए अभियान चलाया था। इसी भावना से उन्होंने **संस्कृत कॉलेज की स्थापना का भी विरोध किया था।** उनके द्वारा स्थापित महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थानों में शामिल हैं:
  - उन्होंने **वर्ष 1817 में हिंदू कॉलेज** की स्थापना स्कॉटिश परोपकारी **डेविड हेयर** के सहयोग से की थी। बाद में इसे **प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय** के नाम से जाना जाने लगा था।
  - **वर्ष 1822 में आंग्ल-वैदिक स्कूल की** स्थापना की थी।
  - **वर्ष 1826 में वेदांत कॉलेज** की स्थापना की थी।
  - **वर्ष 1830 में महासभा की संस्था** की स्थापना **अलेक्जेंडर डफ** के सहयोग से की थी। बाद में यह **स्कॉटिश चर्च कॉलेज** के नाम से विख्यात हुआ था।
- **धार्मिक योगदान:**
  - **हिंदू सुधारक:** एक हिंदू सुधारक के रूप में, उन्होंने वेदांत और महानिर्वाण तंत्र से हिंदू शास्त्रों पर एकात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने निम्नलिखित की स्थापना की थी-
    - **आत्मीय सभा (सोसाइटी ऑफ फ्रेंड्स), 1814:** इसकी स्थापना वेदांत में एकेश्वरवाद के विचार पर दार्शनिक चर्चाओं को पोषित करने के लिए की गई थी। साथ ही, यह मूर्तिपूजा, जातिवाद, बाल विवाह और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान चलाने पर भी केंद्रित था।
    - **ब्रह्म सभा, 1828:** इसकी स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर के पिता देवेंद्रनाथ टैगोर के साथ की गई थी। इसे **ब्रह्म समाज** के नाम से भी जाना जाता है।
  - **मुस्लिम रक्षक:** आस्था के एक मुस्लिम रक्षक के रूप में, उन्होंने **'तुहफात-उल-मुवाहिदीन'** (एकेश्वरवादियों को एक उपहार) (1803) और **'मोनोजौतुल अदियां'** की रचना की थी। ये दोनों ग्रंथ शास्त्रार्थ संबंधी ग्रंथ थे।

- ईसाई धर्म: उन्होंने ईसाई मिशनरियों के साथ अपने वाद-विवादों में पुराने और नए शास्त्रों के **संपूर्ण ढ्रांचे का एक एकात्मक संस्करण दिया है।**

- **प्रेस की स्वतंत्रता:** उन्होंने वर्ष 1829 और वर्ष 1830 में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश शासन के समक्ष याचिका दायर की थी। उन्होंने निम्नलिखित समाचार-पत्रों का प्रकाशन किया था:
  - **'संवाद कौमुदी' (मून ऑफ़ इंटेलिजेंस):** वर्ष 1821 में स्थापित। यह किसी भारतीय भाषा (बंगाली) में साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने वाला प्रथम समाचार-पत्र था
  - **'मिरात-उल-अखबार' (मिरर ऑफ़ न्यूज़):** वर्ष 1822 में स्थापित। यह भारत का पहला फारसी समाचार पत्र था। राय इस अखबार के पहले संपादक भी थे।
- **आर्थिक सुधार:**
  - **भारत के आर्थिक शोषण के लिए अंग्रेजों उत्तरदायी ठहराया।**
  - **गरीब किसानों के लिए आवाज उठाई।**
  - **मुगल बादशाह के वजीफे में वृद्धि।**
- **राजनीतिक सुधार:** उन्होंने सार्वजनिक रूप से, भारत के लिए स्वतंत्रता की मांग नहीं की थी। लेकिन फिर भी, भारतीयों के नागरिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी और यूरोपीय लोगों की नस्लीय श्रेष्ठता का विरोध किया था।

4.6. श्री अरबिंदो (Sri Aurobindo)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, श्री अरबिंदो घोष की 150वीं जयंती मनाई गई।

श्री अरबिंदो के बारे में

- श्री अरबिंदो **20वीं सदी के बंगाली कवि, दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता और एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी** थे।
- उनका **जन्म 15 अगस्त, 1872** को कलकत्ता में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा दार्जिलिंग के एक कॉन्वेंट स्कूल से प्राप्त की थी।
- **उन्होंने 1884 में लंदन के सेंट पॉल स्कूल से तथा 1890 में कैम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज से पढ़ाई** की थी। साथ ही, उन्होंने **ICS परीक्षा में 11वीं रैंक हासिल की थी।** हालांकि, वे अपनी प्रोबेशन अवधि पूर्ण नहीं कर सके थे।

क्या आप जानते हैं?

- **ऑरोविले पुडुचेरी में कोरोमंडल तट** पर स्थित एक शहर है।
- यह **श्री अरबिंदो के दृष्टिकोण और कार्यों से प्रेरणा प्राप्त** करता है।
- उनके आध्यात्मिक सहयोगी, **द मदर (मीरा अल्फासा) ने 1968 में इस बस्ती की स्थापना की थी** और इसका चार्टर प्रस्तुत किया था।

- वे **भारत की स्वतंत्रता के लिए जन-आधारित आंदोलन की मांग करने वाले आरंभिक नेताओं** में से एक थे।

श्री अरबिंदो का योगदान

- **राजनीतिक योगदान:**
  - वे गरमपंथी आंदोलन के अग्रदूत थे। उनके सहयोग से **1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना की गई थी।**
  - वे **1908 के अलीपुर षड्यंत्र केस** का हिस्सा थे।
  - **1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन** के दौरान वह नरमपंथियों के खिलाफ **बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व वाले गरमपंथी समूह में शामिल हो गए थे। इसे सूरत विभाजन के नाम से भी जाना जाता है |** सूरत अधिवेशन में ही कांग्रेस का दो भागों में विभाजन हो गया था।
- **आध्यात्मिक योगदान:**
  - 1914 में उन्होंने **'आर्य'** नामक एक दार्शनिक मासिक पत्रिका की शुरुआत की थी। इस पत्रिका की प्रेरणा से **1926 में मीरा अल्फासा** के सहयोग से श्री अरबिंदो आश्रम की स्थापना की गई।
    - **मीरा अल्फासा ने ऑरोविले अर्थात् "भोर का शहर"** की स्थापना की थी। यह एक शांतिपूर्ण, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के लिए निर्मित एक सार्वभौमिक शहर था।

- उन्होंने **"इंटीग्रल योग"** की अवधारणा विकसित की थी। इसके तहत उनका मानना था कि मनुष्य **सच्चा आत्मज्ञान** (Self Realization) प्राप्त कर सकता है।

- **साहित्यिक योगदान:**
  - 1893-94 में **इंदु प्रकाश** में उनके द्वारा लिखे गए लेखों को **"न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड"** शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। इसमें उन्होंने कांग्रेस की अति उदारवादी राजनीति की आलोचना की थी।
  - उन्होंने **बंदे मातरम (अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र), कर्मयोगिनी (अंग्रेजी समाचार पत्र)** और **धर्मा (बंगाली साप्ताहिक पत्र)** की शुरुआत की थी।
  - क्रांतिकारियों को प्रेरित करने के लिए उन्होंने **युगांतर पत्रिका** (बंगाली क्रांतिकारी समाचार पत्र) में अपने लेख प्रकाशित किए थे। इसके अलावा, अनुशीलन समिति द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका, **भवानी मंदिर** में भी उनके लेख प्रकाशित होते थे।

15 अगस्त, 1947 के अवसर पर श्री अरबिंदो के पांच सपने

  - उन्होंने **रामायण, महाभारत और उपनिषदों से लेकर कालिदास, भवभूति व भर्तृहरि द्वारा रचित ग्रंथों का अध्ययन किया और उनका अनुवाद भी** किया था।
  - कविताओं, पत्रों और निबंधों के रूप में संकलित उनकी अन्य कृतियां हैं- **एस्सेज़ ऑन गीता (1922), कलेक्टेड पोयम्स एंड प्लेज़ (1942), द सिंथेसिस ऑफ योगा (1948), द ह्यूमन साइकिल (1949), द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी (1949), सावित्री: ए लीजेंड एंड ए सिंबल (1950) आदि।**

- **जातिगत भेदभाव पर** उनका तर्क था, कि **जाति-आधारित भेदभाव बाहरी है** और **इसने सामाजिक पतन को बढ़ावा** दिया है।
- श्री अरबिंदो **श्री रामानुजाचार्य** की शिक्षा से प्रभावित थे, जिन्होंने हिंदू धर्म में बहिष्कृत लोगों को शामिल करने के पक्ष में तर्क दिया था। वे **स्वामी विवेकानंद के नव वेदांतिक दर्शन से भी प्रेरित थे,** जिन्होंने सभी जीवित प्राणियों की मौलिक एकता के पक्ष में तर्क दिया था। **वे सनातन धर्म में दृढ़ विश्वास रखते थे,** जो ईश्वर के समक्ष सभी की समानता पर बल देता है।

4.7. छत्रपति शाहू महाराज (Chhatrapati Shahu Maharaj)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, महाराष्ट्र राज्य ने महान मराठा शासक छत्रपति शाहू महाराज की 100वीं पुण्यतिथि (6 मई, 1922) मनाई थी।

शाहू महाराज के बारे में

- शाहू महाराज का **जन्म जून, 1874 ई. में कोल्हापुर जिले** में हुआ था। वह आधुनिक मराठा साम्राज्य के संस्थापक **छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज** थे।
- वह मूल रूप से **यशवंतराव घाटगे** के नाम से जाने जाते थे। साथ ही, उनका पालन-पोषण भोंसले वंश में हुआ था। वे वर्ष 1894 में कोल्हापुर के शासक बन गए थे।
- **शाहू महाराज के जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाएं**
  - **वेदोक्त विवाद:** 'वेदोक्त' वस्तुतः वैदिक धार्मिक संस्कारों को संदर्भित करता है। इसे समकालिक सभी द्विज जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) के एक अधिकार के रूप में संज्ञा दी गई

थी। हालांकि, यह 'पुराणोक्त' (पुराणों से) संस्कारों से पृथक रहा है, जिसका मुख्यतः सभी शूद्र जातियों द्वारा अनुपालन किया जाता था।

  - 1899 में, शाहू महाराज ने वेदोक्त पर अपना दावा पेश किया था। लेकिन, उनके शाही पुरोहित ने उन्हें इसका अनुपालन करवाने से इनकार कर दिया था, क्योंकि उनके विचार में शाहू महाराज एक शूद्र थे।

- **डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के साथ संबंध:**
  - उन्होंने अम्बेडकर को अपना अध्ययन पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की थी।
  - वर्ष 1920 में दोनों ने मिलकर अस्पृश्यों के कल्याण के लिए एक सम्मेलन का भी आयोजन किया था। इस सम्मेलन में शाहू महाराज ने **डॉ. अम्बेडकर को "भारत में दमित वर्गों के एक सच्चे नेता"** की उपाधि प्रदान की थी।
  - इसके अतिरिक्त, उन्होंने डॉ. अम्बेडकर के समाचार पत्र **'मूकनायक'** को भी वित्तपोषित किया था।

आधुनिक भारत के निर्माण में उनका प्रमुख योगदान:

- **शिक्षा:**
  - **सामाजिक रूप से पृथक समूहों के लिए मिस क्लार्क बोर्डिंग स्कूल** की स्थापना की थी।
  - साथ ही, अपने राज्य में **सभी के लिए अनिवार्य मुफ्त प्राथमिक शिक्षा की भी शुरुआत** की थी।
  - इसके अतिरिक्त, **वैदिक स्कूलों** की स्थापना की।
- **सामाजिक सुधार:** उन्होंने वर्ष 1917 में कोल्हापुर में विधवा पुनर्विवाह को वैध बना दिया था। साथ ही, वर्ष 1919 में उन्होंने अंतर्जातीय और अंतर-धार्मिक विवाह को वैध घोषित कर दिया था। उन्होंने महिलाओं के खिलाफ क्रूरता को रोकने के लिए कानून और अस्पृश्यता के पालन के खिलाफ घोषणा-पत्र पारित किया था।
  - शाहूजी, **ज्योतिबा फुले के कार्यों से प्रभावित** थे। उन्होंने उनके **सत्यशोधक समाज को संरक्षण** प्रदान किया था। कालांतर में वे **आर्य समाज से भी जुड़** गए थे।
  - शाहू महाराज ने राज्य की सेवाओं में 50% पद पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित किए थे। यह उस पहल की शुरुआत थी, जिसे 'आरक्षण' या 'सकारात्मक कार्रवाई' कहा जाता है।
- **राजनीतिक सुधार:** उन्होंने वर्ष 1916 में निपानी में एक **डेक्कन रयत एसोसिएशन** की भी स्थापना की थी। एसोसिएशन द्वारा **गैर-ब्राह्मणों के लिए राजनीतिक अधिकारों** को सुरक्षित बनाए रखने पर जोर दिया गया था। साथ ही, राजनीति में उनकी समान भागीदारी को भी आमंत्रित किया था।
- **आर्थिक सुधार:** उन्होंने कताई और बुनाई मिल, समर्पित बाजार स्थान, किसानों के लिए सहकारी समितियों की स्थापना आदि जैसी कई परियोजनाओं की शुरुआत की थी। साथ ही, किसानों को फसल उपज और संबंधित तकनीकों को बढ़ाने के संबंध में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए **किंग एडवर्ड कृषि संस्थान** की भी स्थापना की थी। उन्होंने वर्ष 1907 में **राधानगरी बांध** (यह परियोजना वर्ष 1935 में पूरी हुई थी) की भी शुरुआत की थी।
- **स्वतंत्रता संग्राम:** बाल गंगाधर तिलक के सुझाव पर उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देने वाले **शिवाजी क्लब** को भी धन और हथियारों के रूप में मदद प्रदान की थी।

4.8. अल्लूरी सीताराम राजू (Alluri Sitarama Raju)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **आंध्र प्रदेश के भीमावरम में महान स्वतंत्रता सेनानी अल्लूरी सीताराम राजू की 125वीं जयंती** के अवसर पर एक वर्ष तक चलने वाले जयंती समारोह का शुभारंभ किया है। इस अवसर पर प्रधान मंत्री ने अल्लूरी सीताराम राजू की कांस्य प्रतिमा का भी अनावरण किया।

अल्लूरी सीताराम राजू

इनके बारे में

- जन्मः मद्रास प्रेसीडेंसी के पश्चिमी गोदावरी जिले के मोगल्लु गांव में हुआ था।
- ऐसा माना जाता था कि वह एक चमत्कारिक पुरुष हैं तथा उनके पास कुछ ऐसी शक्तियां हैं।
- उन्हें मन्यम वीरुडु' के रूप में भी जाना जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है– 'जंगलों का नायक'।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- इन्होंने रम्पा विद्रोह के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- क्रांतिकारीः वह कलकत्ता सीक्रेट सोसाइटी के सदस्य थे। इन्होंने चटगांव में क्रांतिकारियों की एक बैठक में भी भाग लिया था।
- इन्होंने पहाड़ी क्षेत्र (रम्पा और गुडेम) में असहयोग आंदोलन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- ये एक शानदार रणनीतिज्ञ थे, जिन्हें वहां की भौगोलिक स्थितियों का भली भांति ज्ञान था।
- अंग्रेजों के साथ गुरिल्ला युद्ध में शामिल थे।

रम्पा विद्रोह के बारे में (अगस्त 1922 - मई 1924)

- रम्पा विद्रोह को **'मन्यम विद्रोह'** भी कहा जाता है। यह एक आदिवासी विद्रोह था।
- **विद्रोह को जन्म देने वाले कारक**
    - **मुत्तदार** इस क्षेत्र के **वास्तविक शासक** थे। उन्हें जबरदस्ती **औपनिवेशिक ढांचे** के अधीन लाकर उनकी **सामाजिक-आर्थिक स्थिति को चुनौती दी** गई थी।
    - नए औपनिवेशिक शासन के तहत **'पोडु खेती' (स्थानांतरित खेती) को अवैध घोषित** कर दिया गया था।
    - औपनिवेशिक शासन ने स्थानीय लोगों के **लघु वनोपज एकत्र करने के अधिकारों को भी छीन लिया था।**
    - आदिवासियों को जबरन **वेट्टी, अर्थात अवैतनिक श्रम** में लगाया जाता था।
- अल्लूरी सीताराम राजू ने लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि वे ही वन उपज के एकमात्र स्वामी हैं। इस आधार पर उन्हें दमनकारी **'मद्रास वन अधिनियम, 1882'** के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार किया।

आंदोलन का घटनाक्रम

- अल्लूरी सीताराम राजू का मानना था कि आधुनिक हथियारों से लैस ब्रिटिश सेना के विरुद्ध पारंपरिक हथियारों से नहीं लड़ा जा सकता है। इसलिए, **आधुनिक हथियार प्राप्त करने के लिए उन्होंने पुलिस थानों से हथियारों को लूटना शुरू कर दिया।**
    - हथियारों के लिए पहला हमला विशाखापत्तनम एजेंसी क्षेत्र के चिंतापल्ली पुलिस स्टेशन पर किया गया था।

संबंधित तथ्य

कोमुरम/ कोमाराम भीम

- वह तेलंगाना के एक **गोंड आदिवासी नेता** थे।
- वह **अल्लूरी सीताराम राजू और बिरसा मुंडा से प्रेरित थे।**
- उन्होंने आदिवासी स्वतंत्रता और उनके अधिकारों हेतु लड़ने के लिए **जल, जंगल, जमीन का नारा** दिया।
- उन्होंने निज़ामों के खिलाफ लड़ने के लिए **गोंडू और कोया के युवकों के साथ एक गुरिल्ला सेना** का गठन किया।

- प्रत्येक हमले के बाद, अल्लूरी **अपने द्वारा लिखे गए एक पत्र को पीछे छोड़ देते थे।**
- उनके द्वारा किए जाने वाले हमलों की एक और पहचान यह थी कि वह अगले **हमले की तारीख व समय की घोषणा करते हुए पुलिस को चेतावनी देते थे।**
- ब्रिटिश सेना द्वारा अथक प्रयास करने के बाद 7 मई, 1924 को उन्हें पकड़ लिया गया और उनकी हत्या कर दी गई।

© Vision IAS

4.9. सुर्ख़ियों में रहे अन्य प्रमुख व्यक्ति (Other Important Personalities in News)

आचार्य चरक 	• **राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग** ने चिकित्सा शिक्षा की शुरुआत करने वाले छात्रों हेतु **संशोधित महर्षि चरक शपथ** की सिफारिश की है। • **आचार्य चरक** का जन्म **कश्मीर** में हुआ था। इन्हे **प्राणाचार्य चरक** के नाम से तथा **भारतीय चिकित्सा के जनक** के रूप में भी जाना जाता है। • वह एक आयुर्वेदिक चिकित्सक थे और **राजा कनिष्क के दरबारी चिकित्सक माने जाते थे।** ○ कनिष्क के दरबार में रहने वाले **अन्य विद्वानों में वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन, पार्श्व आदि शामिल थे।** • उन्होंने **चरक संहिता** की रचना की थी, जो आयुर्वेद पर **एक संस्कृत ग्रंथ** है। यह मनुष्यों के बुनियादी शरीर-क्रियात्मक और संरचनात्मक विवरण, **त्रिदोष (वात, पित्त एवं कफ)** आदि विषयों से संबंधित है। ○ **चरक संहिता, महर्षि भारद्वाज** को समर्पित है, क्योंकि यह कई बीमारियों के उपचार के लिए महर्षि भारद्वाज के छंदों के साथ **अथर्ववेद** से संबंधित है। ○ आयुर्वेद पर **अग्निवेश संहिता (महर्षि अग्निवेश द्वारा रचित)** का उल्लेख भी चरक संहिता में किया गया है।
देवासहायम पिल्लै 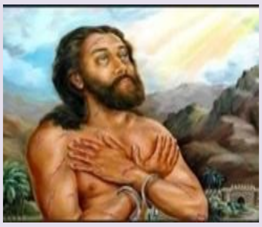	• देवसहायम पिल्लै (ब्लेस्ड लाजारूस) को **वेटिकन रोमन-कैथोलिक चर्च** द्वारा संत की उपाधि प्रदान की गई है। ○ वह **संत की उपाधि प्राप्त करने वाले भारत के पहले आम आदमी** (एक चर्च के गैर-नियुक्त सदस्य) हैं। • देवासहायम का जन्म 23 अप्रैल, 1712 को **कन्याकुमारी जिले (तमिलनाडु) के नट्टलम गांव** में हुआ था। • उन्होंने **त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा** के दरबार में अपनी सेवाएं दी थीं। • वे त्रावणकोर के शाही घराने की सेवा करते हुए डच ईस्ट इंडिया कंपनी के एक कप्तान के संपर्क में आ गए थे। इसके कुछ वर्ष बाद 1745 ई. में वे कैथोलिक ईसाई बन गए थे। • ईसाई धर्म अपनाने के बाद पिल्लै ने **"लाजारूस"** नाम रख लिया था। इसका अर्थ है 'ईश्वर ही मेरी सहायता है'।
छत्रपति संभाजी 	• महाराष्ट्र सरकार ने **औरंगाबाद और उस्मानाबाद शहरों के नाम बदलकर क्रमशः छत्रपति संभाजीनगर और धाराशिव** करने की मंजूरी दे दी है। ○ **औरंगाबाद को मूल रूप से खड़की कहा जाता था।** इसे 1610 ई. में **मलिक अंबर** ने बसाया था। ○ दक्कन पर **औरंगजेब** के शासन के दौरान **यह उसका मुख्यालय बन गया था। इस कारण इसका नाम बदलकर औरंगाबाद कर दिया गया था।** • **संभाजी छत्रपति शिवाजी** (मराठा साम्राज्य के संस्थापक) **के सबसे बड़े पुत्र** थे। अपने पिता की मृत्यु के बाद वे मराठा साम्राज्य के **दूसरे शासक** बने। ○ संभाजी को **अपने लोगों और धर्म की रक्षा हेतु अपने जीवन का बलिदान देने के लिए याद** किया जाता है। • **संभाजी द्वारा लिखित पुस्तकें:** ○ संस्कृत ग्रंथ **बुधभूषण-राजनीति।** ○ **नायिकाभेद, नखशिख तथा सातसतक।** ○ उन्होंने इन पुस्तकों की रचना **ब्रजभाषा** में की थी।
दारा शिकोह	• हाल ही में, **उपराष्ट्रपति ने दारा शिकोह द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मज्म-उल्-बहरैन' (Majma Ul Bahrain)** के **अरबी संस्करण** का विमोचन किया। ○ **'मज्म-उल्-बहरैन'** का अर्थ है **'दो महासागरों का संगम'**। इसमें **हिंदू धर्म (वेदांत)** और **इस्लाम (सूफीवाद)**

	के बीच समानता का वर्णन किया गया है। • दारा शिकोह, मुगल सम्राट **शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र** था। वह अपने भाई औरंगजेब के विरुद्ध उत्तराधिकार का युद्ध हारने के पश्चात् मारा गया था। • उसे एक **"उदार मुस्लिम"** के रूप में वर्णित किया जाता है। उसकी **सूफी रहस्यवाद में गहरी रुचि** थी। वह अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शक मुल्ला शाह द्वारा शुरू किए गए सूफीवाद के **कादिरी सिलसिले का** अनुयायी था। • उसने **फारसी में भगवद् गीता के साथ-साथ 52 उपनिषदों का भी अनुवाद किया था।** जिनका पहले केवल कुछ उच्च जाति के हिंदुओं को ही ज्ञान था। • **दारा शिकोह अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ:** सफ़ीनात अल औलिया; सकीनात अल औलिया; रिसाला-ए-हकनुमा; शाथियात या हसनात अल आरिफीन; अक्सीर ए आजम; जग बशीस्त और तर्जुम-ए-अकवाल-ए-वासिली।
दादाभाई नौरोजी {bhai Naoroji (1825 to 1917)} 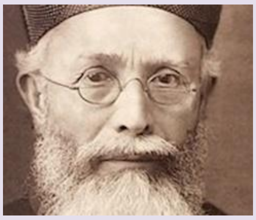	• 1892 में दादाभाई नौरोजी **ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुने जाने वाले भारतीय मूल के पहले व्यक्ति** थे। वर्ष 2022 में ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स में उनके चुने जाने की 130वीं वर्षगांठ मनाई गई है। • **प्रमुख उपलब्धियां:** ○ उन्होंने **धन की निकासी का सिद्धांत** प्रस्तुत किया था। उन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विस्तृत आर्थिक आलोचना की थी। ○ वे **बॉम्बे एसोसिएशन (1852) के सक्रिय सदस्य** थे। यह पश्चिमी भारत में राजनीतिक मुद्दों पर विचार करने वाला पहला संघ था। ○ उन्होंने **ईस्ट इंडियन एसोसिएशन (1867)** की स्थापना की। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) के संस्थापकों में से एक थे। ○ वे **रास्त-गोफ्तार पत्रिका** के **संस्थापक-संपादक।** ○ **प्रमुख कृतियां: पावर्टी ऑफ इंडिया, पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया** आदि।
ऊदा देवी 	• **16 नवंबर** को उत्तर प्रदेश में कई स्थानों पर ऊदा देवी की शहादत की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किए गए। • ऊदा देवी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ **1857 के विद्रोह** में शामिल हुई थीं। वह एक **दलित स्वतंत्रता सेनानी** थीं। • वह अवध की बेगम हज़रत महल के शाही रक्षक दल का हिस्सा थीं। • वह लखनऊ में हुए युद्ध में अपने साहसिक संघर्ष के लिए प्रसिद्ध हैं। इसे सिकंदर बाग़ का युद्ध भी कहा जाता है।
पिंगली वेंकय्या 	• राष्ट्र ने **भारत के राष्ट्रीय ध्वज के शिल्पकार 'पिंगली वेंकय्या'** को श्रद्धांजलि अर्पित की है। • उनका जन्म **आंध्र प्रदेश के 'कृष्णा' जिले** में हुआ था। वह एक स्वतंत्रता सेनानी और एक **गांधीवादी** थे। वे स्वतंत्र भारत की भावना का पर्याय बन गए थे। • उन्होंने **वर्ष 1921 में राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक** के लिए एक 'नया ध्वज' तैयार किया था। 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' (INC) ने इसे **वर्ष 1931** में आधिकारिक तौर पर अपनाया था। • इसने उस सांचे के रूप में कार्य किया, जिस पर वर्तमान '**राष्ट्रीय ध्वज'** विकसित हुआ है।
ब्रज बासी लाल (बी.बी.लाल)	• हाल ही में, वयोवृद्ध पुरातत्वविद् बी. बी. लाल का निधन हो गया है। • **प्रमुख उपलब्धियां:** ○ उन्होंने **हड़प्पा सभ्यता और महाभारत काल से जुड़े स्थलों** पर बड़े पैमाने पर कार्य किया था। उन्होंने

	सिंधु-गंगा मैदान और ऊपरी यमुना-गंगा दोआब में **अनेक चित्रित धूसर मृदभांड स्थलों की खोज** की थी। ○ उन्होंने वर्ष 1968 से वर्ष 1972 तक **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक के रूप में भी कार्य किया था।** इसके अलावा, उन्होंने कई यूनेस्को समितियों में भी कार्य किया था। ○ उन्होंने 1970 के दशक के मध्य में **अयोध्या स्थल पर खुदाई के दौरान मंदिर जैसे स्तंभों** की खोज की थी, जहां वर्तमान में राम मंदिर बनाया जा रहा है। ○ उन्हें **वर्ष 2000 में पद्म भूषण और वर्ष 2021 में पद्म विभूषण से सम्मानित** किया गया था। ○ **इनकी प्रसिद्ध पुस्तकें:** ▪ द सरस्वती फ्लो ऑन: द कंटिन्युटी ऑफ इंडियन कल्चर; ▪ रामा: हिज हिस्टोरिसिटी, मंदिर एंड सेतु- एविडेंस ऑफ लिटरेचर, आर्कियोलॉजी एंड अदर साइंसेज आदि।

5. बौद्ध धर्म और जैन धर्म (Buddhism and Jainism)

बौद्ध धर्म के बारे में

संस्थापक: गौतम बुद्ध (उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था)

उनका जन्म 563ई.पू. **शाक्य क्षत्रिय कुल** में हुआ था।

उन्होंने 29 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। उन्हें एक **पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान (निर्वाण) की प्राप्ति** हुई।

बुद्ध से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल
- **लुंबिनी** (जन्मस्थान)
- **बोधगया** (ज्ञान प्राप्ति स्थल)
- **सारनाथ** (प्रथम उपदेश)
- **कुशीनगर** (मृत्यु स्थल)

बौद्ध धर्म के सिद्धांत

बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का केंद्र **चार आर्य सत्य हैं।**

आष्टांगिक मार्ग (या आठ मार्ग): इन्हें मध्य मार्ग भी कहा जाता है। इन्हें मानव के दुखों के उन्मूलन के लिए महात्मा बुद्ध ने प्रतिपादित किया था।

बौद्ध धर्म के अनुयायी **ईश्वर में विश्वास नहीं** करते हैं। इसकी बजाये वे ईश्वर से स्वतंत्र **नैतिक प्रगति** पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

महत्वपूर्ण बौद्ध संप्रदाय

हीनयान
- इसका अर्थ है **निम्न वाहन**
- यह एक **रूढ़िवादी संप्रदाय है।**
- **मूर्तिपूजक नहीं।**
- **पाली भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

महायान
- इसका अर्थ है **महान वाहन**
- यह अधिक **उदार संप्रदाय है।**
- **बुद्ध और बौद्धिसत्वों के ईश्वरत्व** में विश्वास करता है।
- **मूर्तिपूजक।**
- **संस्कृत भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

थेरवाद
- यह **हीनयान का एक उप-संप्रदाय है।**
- **क्लेश का अंत और निर्वाण की** प्राप्ति मुख्य लक्ष्य है।
- **विभाजवाद (विश्लेषण का ज्ञान)** में विश्वास करता है।
- **पाली भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

वज्रयान (तांत्रिक बौद्ध)
- **यह महायान का एक उप-संप्रदाय है।**
- **बौद्ध दर्शनों के साथ ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों (वेद आधारित) को** संयोजित करता है।
- **मुख्य आराध्य: तारा (देवी)।**
- **शास्त्रीय तिब्बती भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

बौद्ध संगीतियां (परिषदें)

क्र.सं.	स्थान	राज संरक्षण	अध्यक्ष	महत्वपूर्ण उपलब्धियां
1	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप	**विनयपिटक** और **सुत्तपिटक** को संकलित किया गया था।
2	वैशाली	कालाशोक	सबकामी	मठीय अनुशासन को लेकर बौद्ध धर्म में पहला विभाजन हुआ था। बौद्ध धर्म **महासांघिक** और **स्थविरवाद** में विभाजित हो गया था।
3	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	**अभिधम्मपिटक** को संहिताबद्ध किया गया था।
4	कश्मीर	कनिष्क	वसुमित्र	बौद्ध धर्म फिर से **हीनयान व महायान** संप्रदायों में विभाजित हो गया था।

मुख्य बौद्ध साहित्य

सुत्तपिटक
- यह बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है।
- बुद्ध के धार्मिक विचारों व उपदेशों के संग्रह वाला गद्य-पद्य मिश्रित यह पिटक सम्भवतः त्रिपिटकों में सर्वाधिक बड़ा एवं श्रेष्ठ है।

विनयपिटक
- इसमें बौद्ध भिक्षुओं व भिक्षुणियों के लिए मठवासी जीवन के नियम संग्रहित हैं।
- इस ग्रंथ में अनुशासन संबंधी नियम हैं।

अभिधम्मपिटक
- इसमें बौद्ध सिद्धांतों की व्याख्या व विश्लेषण किया गया है।
- इसमें 7 कृतियां शामिल हैं। ये मुख्यतया बौद्ध धर्म के दर्शन व सिद्धांत से संबंधित हैं।

© Vision IAS

जैन धर्म के बारे में

इसकी उत्पत्ति लगभग **ऋग्वैदिक काल** में हुई थी।	क्रमिक रूप से 24 **महान उपदेशकों (तीर्थंकरों)** द्वारा स्थापित।	**प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे। 23वें पार्श्वनाथ तथा 24वें वर्धमान महावीर थे।**	**जैन धर्म में संप्रदाय:** श्वेतांबर व दिगंबर।

वर्धमान महावीर

उनका जन्म **540 ई. पू. में वैशाली** (वर्तमान में उत्तरी बिहार) में हुआ था।	उनके पिता **सिद्धार्थ ज्ञात्रिक कुल के प्रधान** थे। उनकी माता **त्रिशला** लिच्छवि राजकुमारी थीं।	उन्होंने 30 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। उन्हें 42 वर्ष की आयु में **कैवल्य** या पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई।	उन्होंने **कोशल, मगध, मिथिला, चंपा** आदि नगरों में जैन धर्म के उपदेशों का प्रसार किया था।	72 वर्ष की आयु में वर्तमान **राजगीर** के निकट मृत्यु हुई।

जैन धर्म के सिद्धांत

पंचमहाव्रत
- असत्य नहीं बोलना
- चोरी नहीं करना
- संपत्ति अर्जित नहीं करना
- हिंसा नहीं करना
- ब्रह्मचर्य का पालन करना

जैन धर्म के त्रिरत्न
- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् श्रद्धा
- सम्यक् आचरण

कर्म के सिद्धांत को माना जाता है तथा आत्मा के देहांतरण को मान्यता दी गई है।

जैन धर्म में ईश्वर में विश्वास किया जाता है, लेकिन उसका स्थान जिन से नीचे है।

यह विश्वास किया गया है कि सर्वाधिक निर्जीव वस्तु में भी आत्मा का वास होता है।

प्रसिद्ध संगीतियां (परिषदें)

क्र.सं.	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	उपलब्धियां
1	300 ई. पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	भगवान महावीर के उपदेशों को 12 अंगों में संकलित किया गया था।
2	512 ई.	वल्लभी	देवर्द्धिगनी	भगवान महावीर के उपदेशों को 11 अंगों में व्यवस्थित रीति से संकलित किया गया था, क्योंकि उस समय तक 12वां अंग लुप्त हो गया था।

5.1. बांधवगढ़ वन अभ्यारण्य में पुरातात्विक अवशेष (Archaeological Remains in Bandhavgarh Forest Reserve)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने बांधवगढ़ वन अभ्यारण्य में पुरातात्विक अवशेषों की खोज की है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **बांधवगढ़ में पहली बार 1938 में एक पुरातात्विक स्थल की खोज** की गई थी।
  - यह मध्य प्रदेश की **विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमाला के बीच** स्थित है।
- प्राप्त नगरों के नाम से पता चलता है कि उनके मध्य व्यापारिक संबंध रहे होंगे और अन्य **नगरों के लोगों ने कुछ दान किया होगा।**

मुख्य खोज

अवशेषों के प्रकार	विवरण
बौद्ध	• **26 बौद्ध गुफाएं और स्तूप:** गुफाओं में 'चैत्य' (गोलाकार), दरवाजे और पत्थर की बनी शय्या प्राप्त हुई हैं, जो महायान बौद्ध स्थलों की विशेषताएं हैं। • **एक वर्तानुष्ठित (Votive) स्तूप और बौद्ध स्तंभ के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसमें लघु स्तूपों** की नक्काशी है। ये **लगभग दूसरी-तीसरी शताब्दी ई. पू.** के हैं।
हिंदू	• **कलचुरी काल (9वीं-11वीं शताब्दी ई.) के 26 मंदिरों के अवशेष** प्राप्त हुए हैं। इनके अलावा, **दो शैव मठ** भी खोजे गए हैं। ○ कलचुरी राजवंश ने **गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश** के कुछ हिस्सों में शासन किया था। सबसे प्राचीन एलोरा और एलिफेंटा गुफा स्मारकों से भी इनका संबंध रहा है। • **46 मूर्तियों में से, वराह मूर्ति (भगवान विष्णु का अवतार) संभवतः दुनिया में सबसे बड़ी है। ये मूर्तियां दूसरी से 15वीं शताब्दी ई. के बीच की हैं।**
अभिलेख	• **दूसरी-पांचवीं शताब्दी ई. के ब्राह्मी लिपि में 24 अभिलेख** प्राप्त हुए हैं। ○ इनमें **मथुरा, कौशाम्बी, पावता, वेजभरदा व सपतनैरिका जैसे नगरों का उल्लेख** किया गया है। इनके अलावा **भीमसेन, महाराजा पोथासिरी और भट्टदेव** जैसे राजाओं का भी उल्लेख है। • **नागरी और शंखलिपी** में भी अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
अन्य खोज	• **मुगल काल** और **जौनपुर सल्तनत** के **शर्की वंश** के सिक्के प्राप्त हुए हैं। • गुफाओं में 4-5वीं शताब्दी ईस्वी के **गुप्त कालीन दरवाजे की चौखट और नक्काशी के अवशेष** प्राप्त हुए हैं। इनके अलावा, **दूसरी से 15वीं शताब्दी के बीच के जल निकायों के अवशेष** भी प्राप्त हुए हैं।

© Vision IAS

स्तूप का आरंभिक विकासक्रम

बुतकारा का महान स्तूप, तीसरी शताब्दी ई. पू. से दूसरी शताब्दी ई.

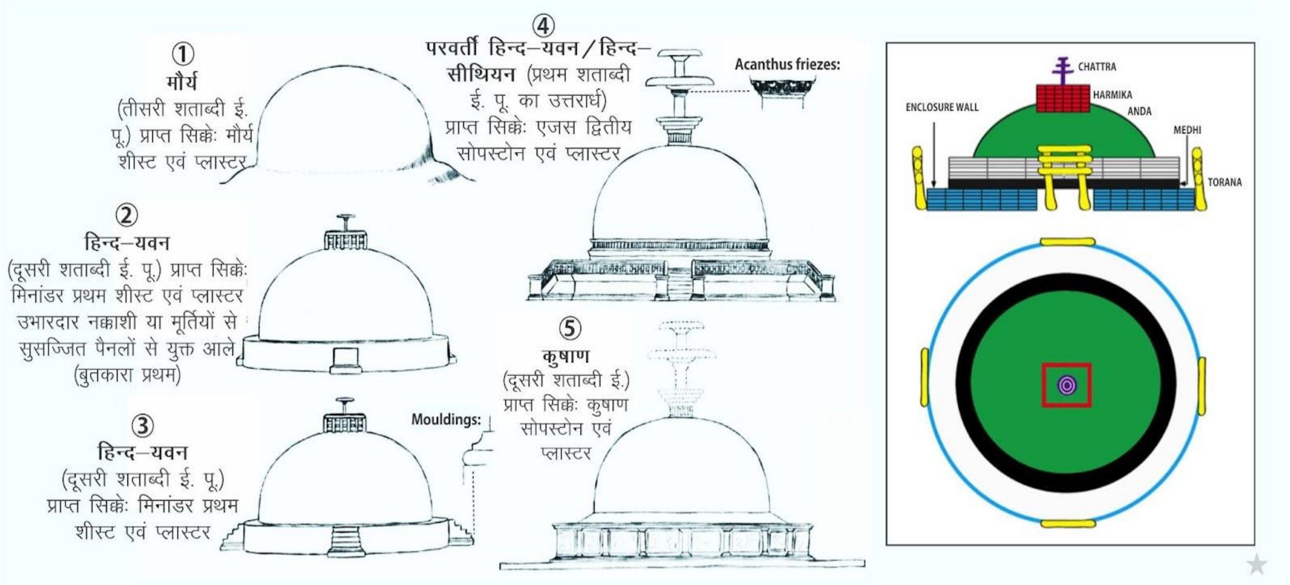

बौद्ध गुफाओं और स्तूपों के बारे में

- **भारत में सबसे पहली शैल कर्तित गुफाओं का श्रेय** मौर्य काल, मुख्य रूप से अशोक (273-232 ईसा पूर्व) को दिया जाता है। इस अवधि में गुफाओं का उपयोग आमतौर पर **जैन और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा** विहार, यानी रहने वाले क्वार्टर के रूप में किया जाता था।
  - महत्वपूर्ण बौद्ध गुफाओं में लोनावाला के पास **कार्ला और भाजा शैल कर्तित गुफाएं, अजंता और एलोरा गुफाएं, बाग गुफाएं** शामिल हैं।
- **स्तूप,** संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ है मिट्टी का ढेर। यह **एक टीले** (अर्धगोलाकार) **जैसी समाधि संरचना** होती है। इसमें **बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष** रखे गए होते हैं।
  - उदाहरण के लिए- **बुद्ध के अवशेषों पर सांची स्तूप निर्मित है।**
- **स्तूप की स्थापत्य कला से संबंधित विशेषताएं:**
  - इसमें गुंबद के आकार जैसा **एक अर्द्ध गोलाकार टीला या अंड** होता है।
  - **इसमें एक वर्गाकार रेलिंग या हर्मिका** बनी होती है।
  - **केंद्रीय स्तंभ तीन छतरी (छत्र) जैसी** संरचना को आधार प्रदान करता है। यह संरचना बौद्ध धर्म के **त्रिरत्नों** का प्रतिनिधित्व करती है।
  - यह चारदीवारी से घिरा होता है और चारों दिशाओं में **अलंकृत प्रवेश द्वार (तोरण)** बने होते हैं।
  - आनुष्ठानिक परिक्रमा के लिए अंड के चारों ओर एक गोलाकार चबूतरा (मेढ़ी) बना होता है।

5.2. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

लुंबिनी (Lumbini)	• भारत-नेपाल संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए **प्रधान मंत्री ने लुंबिनी की यात्रा की।** ○ दोनों देश **लुंबिनी (भगवान बुद्ध की जन्मस्थली) और कुशीनगर (भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण स्थल) के बीच सिस्टर सिटी संबंध स्थापित करने** के लिए सैद्धांतिक रूप से सहमत हुए। • **लुंबिनी का महत्व** ○ यह एक **यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थल** है। ○ यहां से **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 15वीं शताब्दी ईस्वी तक के बौद्ध विहारों (मठों) और स्तूपों (स्मारक स्थली) के पुरातात्विक अवशेष** प्राप्त हुए हैं।

	○ **यहां निम्नलिखित संरचनाएं भी प्राप्त हुई हैं:** ▪ शाक्य तालाब, ▪ माया देवी मंदिर के भीतर क्रॉस-वॉल सिस्टम में बनी ईंट की संरचनाएं, तथा ▪ बलुआ पत्थर से बना अशोक स्तंभ, जिस पर ब्राह्मी लिपि में पाली भाषा में उत्कीर्ण अभिलेख है। UNESCO World Heritage Site
प्राचीन बौद्ध स्थल अंतत: 20 वर्षों के बाद सुर्ख़ियों में है (Ancient Buddhist site finally in focus after 20 years) 	• भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने **कर्नाटक में कनगनहल्ली** (सन्नति स्थल का हिस्सा) के निकट **एक प्राचीन बौद्ध स्थल के संरक्षण की योजना** बनायी है। • सन्नति **भीमा नदी के किनारे बसा एक छोटा-सा गाँव** है। ○ यह स्थल **एक बौद्ध महास्तूप और सम्राट अशोक के पाषाण-चित्र (Stone-Portrait)** की खोज के लिए प्रसिद्ध है। इस महास्तूप को **अधोलोक महा चैत्य** के रूप में भी संबोधित किया जाता है। • यह माना जाता है कि इस **स्तूप का निर्माण तीन चरणों में हुआ** था। ये चरण थे- मौर्य काल, आरंभिक-सातवाहन और उत्तर-सातवाहन काल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी)। ○ इस पाषाण-चित्र को **सम्राट अशोक की एकमात्र अब तक सही अवस्था में रही छवि** माना जाता है। इस पर **ब्राह्मी लिपि में 'राय अशोक' उत्कीर्ण** है।
कन्हेरी गुफाएं 	• पर्यटन मंत्रालय ने **कन्हेरी गुफाओं में जन-सुविधाओं का उद्घाटन** किया है। • कन्हेरी की **गुफाओं का निर्माण बौद्ध भिक्षुओं ने दूसरी और नौवीं शताब्दी ईस्वी के बीच** किया था। ○ ये गुफाएं शैल कर्तित स्मारकों का समूह है। ये मुंबई के बोरीवली में संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान के वनों के भीतर स्थित है। ○ **कन्हेरी संस्कृत शब्द 'कृष्णगिरी'** से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है **'काला पहाड़'।** • **इनमें बौद्ध धर्म की तीनों शाखाओं- हीनयान, महायान एवं वज्रयान के कलात्मक प्रमाण उपलब्ध हैं।** ○ कन्हेरी की गुफाओं का विकास **सातवाहन, त्रिकुटक, वाकाटक और शिलाहार राजवंशों के संरक्षण में** हुआ था। ○ कन्हेरी का सबसे आरंभिक संदर्भ **फाह्यान** ने बताया है।
सित्तनवासल (Sittanavasal) 	• हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने सित्तनवासल में संरक्षण के उपाय किए हैं। • सित्तनवासल या चित्तनवासल, **तमिलनाडु में स्थित एक जैन विरासत स्थल है।** • **यह एक पहाड़ी आवास स्थल है, इसमें शामिल हैं:** ○ **महावीर की प्रतिमा, ध्यान कक्ष और पांड्य शासनकाल से संबंधित चित्रों** के साथ अरिवार कोविल (अर्हतों का मंदिर) का **दूसरी शताब्दी का शिला गुफा मंदिर। अर्हत** ऐसे जैन भिक्षु होते हैं जिन्होंने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो। ▪ इस गुफा मंदिर में चित्रकारी हेतु **फ्रेस्को-सेको तकनीक** का उपयोग किया गया है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें दीवारों पर गीले प्लास्टर के माध्यम से चित्रकारी की जाती है। ○ **17 पॉलिश किए हुए संस्तर शैल-** इन्हें सामूहिक रूप से **एझादिपट्टम** के रूप में जाना जाता है। ○ मृत्यु के बाद जैन मुनियों को **दफनाने के लिए उपयोग किए गए बर्तन,** जिन्हें **मुथुमक्कल थाज़ी** कहा जाता है।
बौद्ध धर्म का न्यिंग्मा संप्रदाय (Nyingma sect of Buddhism)	• न्यिंगमा संप्रदाय ने हिमाचल प्रदेश के स्पीति के एक तिब्बती मूल के लड़के को **स्वर्गीय तकलुंग सेतुंग रिनपोचे** का पुनर्जन्म माना है। रिनपोचे **तिब्बती तांत्रिक पंथ** के अपने ज्ञान के लिए लोकप्रिय थे। • **न्यिंगमा संप्रदाय के बारे में** ○ तिब्बती बौद्ध धर्म की सभी चार प्रमुख परंपराओं को प्रसारित करने में इस संप्रदाय का **सबसे**

© Vision IAS

	लंबा इतिहास रहा है। ○ न्यिंग्मा का **शाब्दिक** अर्थ है **'पुरानी व्यवस्था'।** ○ अन्य तीन मुख्य तिब्बती बौद्ध धर्म संप्रदायों **(शाक्य, काग्यू और गेलुग) का सम्मिलित रूप से शाब्दिक अर्थ नई व्यवस्था (सरमा)** है। ○ न्यिंगमा परंपरा में सबसे महत्वपूर्ण गुरु **'पद्मसंभव' (Padmasambhava)** हैं।
पर्युषण पर्व (Paryushan Parv)	• यह एक **महत्वपूर्ण जैन त्योहार** है। इसका आयोजन वर्षा ऋतु के बीच में तब होता है, **जब जैन 'भिक्षु' और 'भिक्षुणी' यात्रा करना बंद कर देते हैं।** इस दौरान, ये **एक समुदाय के साथ रहकर उन्हें निर्देशित तथा उनका मार्गदर्शन करते हैं।** ○ पर्युषण का अर्थ है **'स्थाई' या "एक साथ आना"।** • यह पर्व पिछले वर्ष में किए **गए पापों की स्वीकारोक्ति और उनके लिए क्षमा मांगने** के साथ समाप्त होता है।
अपरिग्रह (Aparigraha)	• यह **जैन धर्म** का एक सिद्धांत है। इसमें किसी भी प्रकार की संपत्ति एकत्रित न करने पर जोर दिया गया है। यह इच्छाओं और जरूरतों के बीच संतुलन बनाने तथा अपनी संपत्ति से अलगाव पर केंद्रित है। • यह पतंजलि के अष्टांग योग में सूचीबद्ध **यम या नैतिक व्यवहार संहिता** में से भी एक है।

6. विविध (Miscellaneous)

6.1. भारत में नौसेना की परंपराएं (Naval Traditions in India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **INS विक्रांत की कमीशनिंग के दौरान प्रधान मंत्री ने नौसेना के नए ध्वज प्रतीक (ensign)** का अनावरण किया।

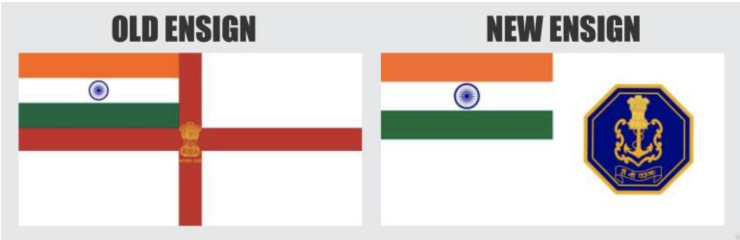

अन्य संबंधित तथ्य

- **नौसेना ध्वज ऐसा ध्वज है,** जिसे नौसेना के जहाजों और अन्य संरचनाओं पर अपनी राष्ट्रीयता को दर्शाने के लिए लगाया जाता है।
- भारतीय नौसेना के पुराने ध्वज में **'सेंट जॉर्ज क्रॉस'** प्रतीक था, जिसमें ऊपरी बाएं कोने पर तिरंगा होता था।
  - हालांकि, **यह पहली बार नहीं है कि नौसेना के ध्वज प्रतीक को बदला जा रहा है।** इससे पहले भी वर्ष 1950, 2001, 2004 तथा वर्ष 2014 में इसे बदला जा चुका है।
- नौसेना के नए ध्वज पर **छत्रपति शिवाजी महाराज की मुहर बनी है।**
- ध्वज के ऊपरी बाएं कोने पर तिरंगा बना हुआ है तथा **दाईं ओर नीले रंग की पृष्ठभूमि वाले अष्टकोण में एक लंगर (Anchor) के ऊपर सुनहरे रंग का अशोक चिह्न बना हुआ है। यह लंगर "दृढ़ता" का प्रतीक है।**
  - अष्टकोणीय आकार **आठ दिशाओं का संकेत** देता है। यह **भारतीय नौसेना की बहु-दिशात्मक पहुंच और बहु-कार्यात्मक परिचालन क्षमता का प्रतीक है।**
  - सुनहरे रंग में रंगे हुए **दोहरे अष्टकोणीय बॉर्डर छत्रपति शिवाजी महाराज की मुहर** से प्रेरित हैं।

इतिहास में नौसेना द्वारा निभाई गई भूमिका

- **व्यापारिक मार्गों का निर्माण:** मेसोपोटामिया के साथ सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) का समुद्री व्यापार मार्ग, पश्चिम एशिया के साथ गुप्त साम्राज्य का व्यापार मार्ग आदि।
- **बाह्य संपर्क स्थापित करना:** मौर्य साम्राज्य का श्रीलंका, मिस्र आदि के साथ संबंध (बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु मार्ग)।
- **समुद्री सीमा की रक्षा:** विशेष रूप से मौर्य, चोल और मराठा राजवंशों के पास नौसैनिक युद्ध क्षमता मौजूद थी, हालांकि यह क्षमता सीमित थी।
- **ज्ञान का आदान-प्रदान:** समुद्री मार्गों ने भौगोलिक समझ और ज्ञान का आदान-प्रदान संभव बनाया। उदाहरण के लिए, समुद्री यात्राओं के दौरान ही मानसूनी पवनों का ज्ञान भी विकसित हुआ था।

भारतीय नौसेना का क्रमिक विकास

- **सिंधु घाटी सभ्यता:**
  - माना जाता है कि विश्व के **पहले ज्वारीय बंदरगाह** का निर्माण हड़प्पा सभ्यता के दौरान **लोथल** में लगभग **2300 ई. पू. में किया गया था।** वर्तमान में यह स्थान गुजरात के तट पर **मंगरोल बंदरगाह** (Mangrol harbour) के निकट स्थित है।
  - इस दौरान, सिंधु घाटी सभ्यता के मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापारिक संबंध थे।

क्या आप जानते हैं?

- **वैदिक साहित्य में नावों, जहाजों और समुद्री यात्राओं** के अनेक संदर्भ दिए गए हैं।
- ऋग्वेद में **व्यापारियों** द्वारा व्यापार और धन अर्जन हेतु **जहाजों को महासागरों के पार विदेशों में ले जाने** का उल्लेख मिलता है। यहां तक कि पुराणों में भी समुद्री यात्राओं की कई कहानियां वर्णित हैं।

- **मौर्य राजवंश:**
  - **व्यापक समुद्री व्यापारिक गतिविधियों** के कारण इंडोनेशिया और आस-पास के अन्य द्वीपों में भारतीयों के जाने का मार्ग खुला था।
  - **मेगस्थनीज ने एक विशेष समिति** की उपस्थिति का वर्णन किया है। यह समिति **नौसैनिक युद्धों** के अलग-अलग पहलुओं को संभालती थी।

© Vision IAS

- **अर्थशास्त्र में नवाध्यक्ष (जहाजों के अधीक्षक)** नामक अधिकारी के अधीन **जलमार्ग विभाग** का विवरण मिलता है। ध्यातव्य है कि अर्थशास्त्र की रचना **चाणक्य** ने की थी।

- **सातवाहन राजवंश:**
  - सातवाहनों ने बंगाल की खाड़ी से सटे **भारत के पूर्वी तट पर नियंत्रण स्थापित किया था** और रोमन साम्राज्य के साथ इनके गहरे व्यापारिक संबंध थे। **समुद्री मार्ग के माध्यम से दक्षिण-पूर्वी एशिया के अलग-अलग हिस्सों के साथ भी इनका संपर्क था।**
  - **सातवाहन भारतीय मूल के प्रथम शासक थे, जिन्होंने अपने सिक्कों पर जहाजों को अंकित करवाया था।**
- **गुप्त वंश:**
  - **फाह्यान व ह्वेनसांग** जैसे चीनी यात्रियों ने **गुप्त काल के दौरान विस्तृत विदेशी व्यापार का विवरण दिया है।**
  - इस अवधि में भारत के पूर्व और पश्चिम में कई बंदरगाहों का निर्माण किया गया था। इनके माध्यम से **यूरोपीय और अफ्रीकी देशों के साथ बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार को दोबारा शुरू** किया गया था।

चोल राजवंश

- चोल राजवंश में **बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार होता था। साथ ही, आवास, भंडार गृहों एवं कार्यशाला वाले नए पत्तनों की भी स्थापना हुई थी।**
- जहाज़ों की मरम्मत के लिए पत्तन, घाट और प्रकाश गृह (लाइट हाउस) बनाए गए थे।
- चोलों का नौसैनिक वर्चस्व **राजेंद्र चोल के शासनकाल** में अपने चरमोत्कर्ष पर था।

- **दक्षिणी राजवंश:**
  - **चोल, चेर और पांड्य शासकों** ने सुमात्रा, जावा, मलय प्रायद्वीप, थाईलैंड तथा चीन के स्थानीय शासकों के साथ समुद्री व्यापारिक संबंध मजबूत किए थे।
  - वे अपना नौचालन अरब सागर में मिलने वाली विभिन्न नदियों के माध्यम से करते थे।
  - **यूनान और रोम के साथ चेर साम्राज्य के व्यापारिक संबंध बहुत अच्छे थे।**
  - **पांड्य शासकों** का भारत की दक्षिणी तटरेखा पर किए जाने वाले **मोती के उत्पादन पर भी नियंत्रण था।**

मुग़ल, मराठा और मैसूर तथा यूरोपीय लोगों का आगमन

- मुग़ल साम्राज्य **काफ़ी हद तक भूमि आधारित साम्राज्य** था। वे समुद्री संसाधनों पर अधिक ध्यान नहीं देते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि **हिंद महासागर के व्यापार पर अरब लोगों का एकाधिकार** स्थापित हो गया।
- भारत की प्रसिद्ध समृद्ध भूमि के बारे में सुनकर यूरोपीय, विशेषकर **पुर्तगालियों** ने सबसे पहले भारतीय तटों पर पहुंचकर अपनी व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार किया।
- अधिकांश भारतीय राज्यों ने **उनके आगमन का विरोध** किया। उनका सबसे कड़ा प्रतिरोध **टीपू सुल्तान** के नेतृत्व में **मैसूर तथा छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में मराठों द्वारा** किया गया था।

टीपू सुल्तान के नेतृत्व में मैसूर की नौसैनिक शक्ति

- उसने **कई युद्धपोत और परिवहन जहाज** निर्मित किए।
- उसने **एडमिरल्टी का एक बोर्ड गठित किया** और एक **विश्व स्तरीय समुद्री नौसेना की** योजना बनाई जिसमें **कई युद्धपोत** तथा बड़े फ्रिगेट शामिल थे।
- **जमालाबाद, वाजिदाबाद और मजीदाबाद में डॉकयार्ड थे।**
- ऐसा माना जाता है कि **उसकी नौसेना में 10,000 सिपाही थे और फ्रांसीसी उसके सलाहकार थे।**

मराठों का नौसैनिक कौशल क्यों विशेष था?

- **छत्रपति शिवाजी महाराज अपने युग के शासकों में ऐसे पहले शासक थे,** जिन्होंने **एक मजबूत नौसेना के महत्व** को पहचाना था। उन्होंने 17वीं शताब्दी में एक आधुनिक नौसैनिक बल की नींव रखी थी।
- **उन्होंने मराठा साम्राज्य के समुद्री व्यापार की सुरक्षा के लिए कोंकण तट पर एक मजबूत नौसैनिक बल की स्थापना की थी।**
  - **मराठों ने 40 से अधिक वर्षों तक पुर्तगालियों और अंग्रेजों दोनों पर नियंत्रण रखा था।** पुर्तगालियों ने समुद्र पर मराठों का अधिकार स्वीकार कर लिया था। ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मराठों को वार्षिक रूप से भुगतान करना पड़ता था।

मराठा नौसेना

- **संगठन:** नौसेना को दो 'सूबों' (विभाग) में विभाजित किया गया था। प्रत्येक सूबे में पांच घुराब (Gurabs) और पंद्रह गल्लिवत (Galbats) होते थे। प्रत्येक विभाग दो सेनानायकों नामतः ***दरिया सारंग और मायनायक भंडारी* के अधीन होता था।**
- **जहाज:** मराठा जहाज दो प्रकार के थे - युद्ध करने वाले जहाज और व्यापारिक जहाज। युद्ध करने वाले जहाजों में घुराब और गल्लिवत शामिल थे। व्यापारिक जहाजों में *मछ्वा, शिबर, तरंडी और पगार* शामिल थे।
- **क्षमता:** मराठा नौसेना एक मजबूत नौसेना के रूप में विकसित हुई थी। इसमें 500 से अधिक जहाज थे। **'संगमेश्वरी'** उनके युद्धपोतों में एक विशेष पोत था। इसे इस तरह से डिजाइन किया गया था कि यह उथले जल में भी युद्ध कर सकता था।
- **नौसेना अवसंरचना:** कई तटीय किलों का निर्माण किया गया था, जैसे कोंकण तट पर विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग एवं अन्य किले।

- शिवाजी ने पश्चिमी कोंकण तट को **सिद्दी नौसेना बेड़े के हमलों** से भी बचाया था।
- **मराठा इतिहास की प्रमुख नौसैनिक घटनाएं:**
  - **1665:** छत्रपति शिवाजी महाराज ने उत्तरी कन्नड़ तट पर एक समुद्री नौसैनिक अभियान चलाया था। उन्होंने कारवार, शिवेश्वर, मिराज, अंकोला आदि सहित बार्सलर (बसरूर) में भी लूट की थी।
  - **1679:** मराठों ने बंबई (वर्तमान मुंबई) के दक्षिण में स्थित खंडेरी द्वीप पर अधिकार कर लिया था।
  - **1690:** कान्होजी आंग्रे ने नई युद्ध तकनीकें प्रस्तुत की थीं। उन्होंने यूरोपीय तकनीकों को अपनाकर और तोपखाने को बेहतर बनाकर मराठा नौसेना की शक्ति को बढ़ाया था।
  - **1756:** विजयदुर्ग में तुलाजी आंग्रे के खिलाफ पेशवा और अंग्रेजों के संयुक्त कार्य बल के कारण **मराठा नौसैनिक वर्चस्व समाप्त हो गया था।**

6.2. भारत के राजकीय प्रतीक (National Symbols of India)

राजकीय प्रतीक

<table>
<tr>
<td>राष्ट्रीय ध्वज
 </td>
<td colspan="3">राष्ट्रीय चिन्ह
भारत का राजचिन्ह सारनाथ स्थित अशोक के सिंह स्तंभ की अनुकृति है, जो सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित है। इस प्रतीक को भारतीय गणराज्य की मुहर के रूप में प्रयोग किया जाता है।

</td>
</tr>
<tr>
<td>राष्ट्रगान
भारतीय राष्ट्रीय गान जन-गण-मन की रचना रवींद्रनाथ टैगोर ने मूल रूप से बंगाली भाषा में की थी। 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा ने इसके हिंदी संस्करण को भारत के राष्ट्रगान के रूप में अपनाया था।</td>
<td colspan="2">राष्ट्रीय गीत
वंदे मातरम की रचना बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा संस्कृत में की गई थी। यह गीत बंकिम चंद्र की रचना आनंद मठ (1882) का एक हिस्सा है।</td>
<td>राष्ट्रीय पंचांग
शक संवत पर आधारित राष्ट्रीय पंचांग को ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ 22 मार्च 1957 को अपनाया गया था। भारत में सभी आधिकारिक कार्यों के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसका पहला माह चैत्र से आरंभ होता है। इसका एक सामान्य वर्ष 365 दिनों का होता है।
यह कैलेंडर 78 ई. में राजा शालिवाहन के सिंहासन ग्रहण करने (राज्याभिषेक) पर आधारित है।</td>
</tr>
<tr>
<td>राष्ट्रीय पक्षी:
भारतीय मयूर (पावो क्रिस्टेटस)।
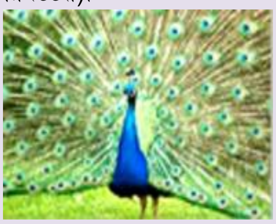</td>
<td>राष्ट्रीय पशु:
भारतीय बाघ
(पैंथेरा टाइग्रिस)।
 </td>
<td>राष्ट्रीय पुष्प:
कमल (नीलंबो न्यूसिफ़ेरा)।
 </td>
<td>राष्ट्रीय वृक्ष:
भारतीय बरगद (फाइकस बेंगालिंसेस)।
 </td>
</tr>
</table>

6.3. भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन (Amendments to Flag Code of India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्र सरकार ने भारतीय ध्वज संहिता (FCI)[7] में संशोधन किया है।

[7] Flag Code of India

© Vision IAS

अन्य संबंधित तथ्य

- नए संशोधन के अनुसार, राष्ट्रीय ध्वज को अब **खुले में या किसी नागरिक के घर पर दिन-रात फहराया जा सकता है।** इससे पहले, तिरंगे को केवल सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही फहराने की अनुमति थी।
    - भारतीय ध्वज संहिता को **दिसंबर 2021** में भी संशोधित किया गया था। इसमें **हाथ से काते गए व हाथ से बुने गए ऊनी/ सूती/ सिल्क/ पॉलिस्टर या खादी के कपड़े से बने ध्वज** के उपयोग की अनुमति दी गई थी।

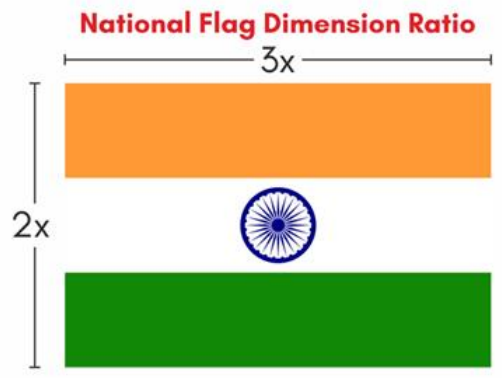

- नया संशोधन का उद्देश्य **सरकार के 'हर घर तिरंगा' अभियान को गति** प्रदान करना है।
    - 'हर घर तिरंगा' अभियान को '**आजादी के अमृत महोत्सव' के** अवसर पर शुरू किया गया है। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को **भारत की आजादी के 75वें वर्ष का उत्सव मनाने के लिए अपने घर पर तिरंगा फहराने** हेतु प्रोत्साहित करना है।
- **डाक विभाग को 'हर घर तिरंगा' अभियान** के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करके देश भर में अपनी पहुंच और कार्यबल का उपयोग करने का कार्य सौंपा गया था।

भारतीय ध्वज संहिता, 2002

- भारतीय ध्वज संहिता, **भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के उपयोग, प्रदर्शन और फहराने** के संदर्भ में **कानूनों, परंपराओं, प्रथाओं तथा निर्देशों का एक समूह** है। इसे **26 जनवरी 2002** को लागू किया गया था।
- यह निजी, सार्वजनिक और सरकारी संस्थानों में राष्ट्रीय ध्वज के **प्रदर्शन को शासित करता है।**
- **राष्ट्रीय ध्वज का आकार और माप:** यह **आयताकार** होगा। यह किसी भी आकार का हो सकता है, लेकिन **राष्ट्रीय ध्वज की लंबाई और ऊंचाई का अनुपात 3:2** होना चाहिए।
- **घर पर राष्ट्रीय ध्वज: सार्वजनिक या निजी संगठन या शैक्षणिक संस्थान** का कोई सदस्य राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा और सम्मान के अनुसार **सभी दिनों या अवसरों पर राष्ट्रीय ध्वज** को फहरा सकता है।

6.4. भारत का राजकीय प्रतीक (State Emblem of India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **राजकीय प्रतीक** का अनावरण किया है। इसे **नवनिर्मित संसद भवन के शीर्ष पर** स्थापित किया गया है।

राजकीय प्रतीक के पीछे का इतिहास

- मौर्य सम्राट अशोक ने **250 ईसा पूर्व में सिंह-शीर्ष स्तंभ** का निर्माण करवाया था। इसे उस स्थान (सारनाथ) को चिह्नित करने के लिए निर्मित करवाया गया था, जहां बुद्ध ने ज्ञान की प्राप्ति के उपरांत अपना पहला उपदेश दिया था। इस उपदेश में उन्होंने चार-महान सत्यों की व्याख्या की थी। इस घटना को **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहा जाता है।
- **राजकीय प्रतीक** सारनाथ के सिंह-शीर्ष स्तंभ का **चित्रात्मक रूपांकन** है। यह मूल रूप से सारनाथ में अशोक स्तंभ (सिंह स्तंभ) के शीर्ष पर स्थित है। इसके नीचे लिखा गया वाक्य **राष्ट्रीय आदर्श वाक्य** है।
- प्रसिद्ध कलाकार **नंदलाल बोस के पांच छात्रों** ने इस प्रतीक को बनाया है। इनमें **जगदीश मित्तल, कृपाल सिंह शेखावत, गौरी भांजा और दीनानाथ भार्गव** शामिल थे।

संविधान सभा ने सारनाथ के सिंह स्तंभ को ही राजकीय प्रतीक के रूप में क्यों अपनाया?

- यह महसूस किया गया था कि यह स्तंभ **स्वतंत्र राष्ट्र की शक्ति, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है।**
- यह प्रतीक **एक द्वि-आयामी मूर्तिकला को दर्शाता है।** इसमें निर्मित सिंहों के नीचे **देवनागरी लिपि में मुंडक उपनिषद** से लिया गया वाक्य '**सत्यमेव जयते' (केवल सत्य की ही जीत होती है)** उत्कीर्ण किया गया है।

राजकीय प्रतीक का डिज़ाइन

- पशु आकृति:
  - **गर्जना करते हुए चार राजसी सिंह और चार मुख्य दिशाओं की ओर उनके मुख शक्ति, साहस, गर्व व आत्मविश्वास को दर्शाते हैं।** ये सिंह समग्र रूप से **जीवन के सभी क्षेत्रों में समानता और न्याय** पर जोर देने के प्रतीक हैं।
  - चक्रों के बीच में चार पशुओं को **चारों दिशाओं के संरक्षक** के रूप में माना जाता है। ये पशु शीर्ष फलक (Abacus) में चक्रों को घुमाते हुए दिखाई देते हैं।
    - **हाथी** राजकुमार सिद्धार्थ के अपनी माता के **गर्भ में आने** को दर्शाता है।
    - **वृषभ** राजकुमार सिद्धार्थ की **युवावस्था** का प्रतिनिधित्व करता है।
    - **अश्व** के माध्यम से सिद्धार्थ को **ज्ञान की तलाश** में अपने शाही **जीवन को त्यागते** हुए दर्शाया गया है।
    - **सिंह** पीपल के वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को **ज्ञान प्राप्त करने और बुद्ध के रूप में उनके परिवर्तन** का चित्रण करता है।
- **धर्म चक्र या अशोक चक्र** 'कानून का पहिया' है, जो धर्म (सद्गुण) को दर्शाता है।
  - **चक्र की 24 तीलियाँ एक दिन में घंटों की संख्या** का प्रतिनिधित्व करती हैं, और समय बीतने को दर्शाती हैं। तीलियाँ **जीवन में आगे बढ़ने का संकेत** देती हैं और इस प्रकार **व्यक्ति मन-मस्तिष्क की स्थिरता से बच सकता है।**

6.5. भारतीय मुद्राशास्त्र की एतिहासिक पृष्ठभूमि (Numismatic History of India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, सिक्कों और बैंक नोटों पर देवी-देवताओं के चित्र छापने की चर्चा ने भारत के मुद्राशास्त्र के इतिहास में लोगों की रुचि को फिर से बढ़ा दिया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **करेंसी नोटों पर बने डिजाइन को कौन बदलता है?**
  - भारत में करेंसी नोट को डिजाइन करने का अधिकार **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और केंद्र सरकार** को प्रदान किया गया है।
  - **करेंसी के डिजाइन में किसी भी प्रकार के बदलाव के लिए RBI के केंद्रीय बोर्ड और केंद्र सरकार की स्वीकृति को अनिवार्य किया गया है।**
- **करेंसी नोट बदलने की प्रक्रिया क्या है?**
  - करेंसी नोटों के डिजाइन का दायित्व **RBI के मुद्रा प्रबंधन विभाग**[8] पर है।
  - यह विभाग **RBI को** करेंसी नोटों का **डिजाइन भेजता है।** इसके बाद **RBI अनुशंसा के लिए इसे केंद्र सरकार के पास भेजता है।**
  - करेंसी नोटों के **डिजाइन के लिए अंतिम स्वीकृति केंद्र सरकार प्रदान करती है।**

क्या आप जानते हैं?

- **सिक्का निर्माण अधिनियम, 2011** के अनुसार, सिक्के बनाने की जिम्मेदारी भारत सरकार की है। विभिन्न मूल्यवर्ग के सिक्कों की डिजाइनिंग और ढलाई भी भारत सरकार की जिम्मेदारी है।
- **आर.बी.आई. अधिनियम** के अनुसार, केवल रिजर्व बैंक की सहायता से सिक्कों को चलन में रखा जाता है।

भारत में मुद्राशास्त्र के अध्ययन की शुरुआत

- मुद्राशास्त्र उन सिक्कों, सांकेतिक मुद्राओं और अन्य सिक्कों जैसे वस्तु विनिमय साधनों का अध्ययन एवं संग्रह है, जिनका लोगों ने संपूर्ण इतिहास में मुद्राओं के रूप में उपयोग किया है। यह पदावली **मुद्रा और भुगतान की उन अन्य विधियों के अध्ययन** को भी संदर्भित कर सकती है, जिनका इस्तेमाल लोग वस्तुओं एवं सेवाओं के भुगतान तथा ऋणों की अदायगी के लिए करते हैं।

[8] Department of Currency Management

© Vision IAS

- **भारतीय मुद्राशास्त्र का इतिहास 1790 में कुछ रोमन सिक्कों की खोज** के साथ प्रारंभ हुआ था। अध्ययन और शोध के एक विषय के रूप में इसकी शुरुआत 1824 ई.में उस समय हुई जब कर्नल टॉड ने **ट्रांजैक्शन ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी** नामक जर्नल में कुछ **ग्रीक, पार्थियन और भारतीय सिक्कों** के बारे में लेख प्रकाशित किया था।
- **न्यूमिस्मैटिक सोसायटी ऑफ इंडिया** का गठन 1910 में इलाहाबाद में हुआ था। इसका उद्देश्य मुद्राशास्त्र से संबंधित **ज्ञान को** बढ़ावा देना **और भारतीय मुद्राशास्त्र के अध्ययन को विनियमित करने के लिए एक समन्वयक निकाय** के रूप में कार्य करना था।

आधुनिक भारत के सिक्के

- भारत में **रुपये का पहला सिक्का** 1950 में ढाला गया था।
  - आधुनिक भारत के सिक्कों में अन्य मूल्यवर्ग के सिक्के भी शामिल थे। इनमें आधा रुपया, चौथाई रुपया, दो आना, एक आना, आधा आना और एक पैसा शामिल थे। इन्हें आना श्रृंखला (Anna Series) या दशमलव पद्धति से पूर्व के सिक्के (Pre-decimal Coinage) भी कहा जाता है।
  - 1957 में भारत में दशमलव प्रणाली के सिक्कों को अपनाया गया था।
- कुछ स्मारकीय सिक्कों में **महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, भीम राव अम्बेडकर, राजीव गांधी, संत ज्ञानेश्वर, सरदार वल्लभभाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस** आदि को दर्शाने वाले सिक्के शामिल हैं।

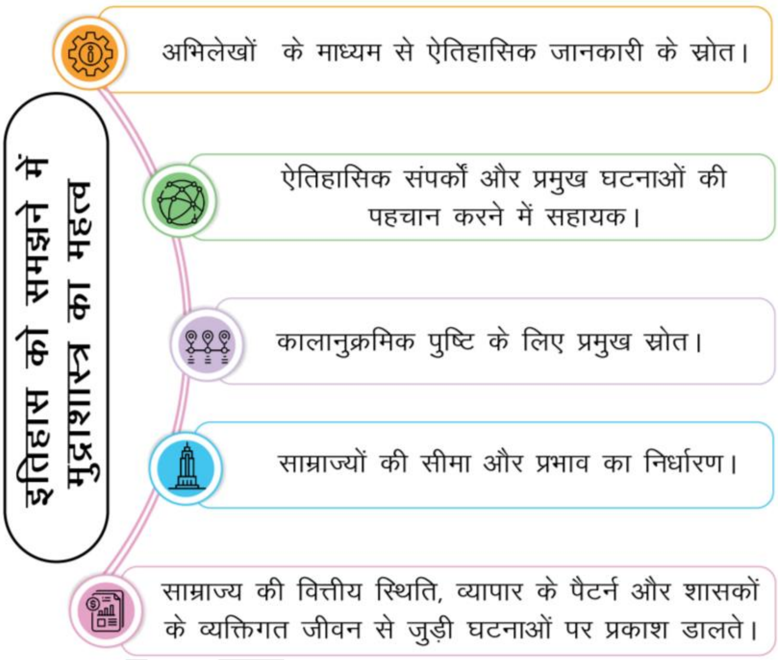

भारत का मुद्रा संबंधी इतिहास

प्राचीन भारत के सिक्के

प्रमुख विशेषताएं	चित्र (अग्रभाग और पृष्ठ भाग)		
आहत (पंच मार्क्ड) सिक्केः छठी–सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी के मध्य जारी किए गए। ⊛ **आहत सिक्कों को सबसे पहले ढाले गए सिक्कों** के रूप में जाना जाता है। इन सिक्कों को उनकी निर्माण तकनीक के कारण यह नाम दिया गया है, अर्थात् इन सिक्कों पर एक ठप्पे (आहत) से चिन्ह अंकित किए जाते थे। ⊛ **इन्हें मोटे तौर पर दो अवधियों में बांटा गया है:** पहली अवधि (**जनपदों या छोटे स्थानीय राज्यों का काल**) और दूसरी अवधि (**मौर्य साम्राज्य का काल**)।	सात चिन्ह		
	पांच चिन्ह		
	पांच चिन्ह		

राजवंश से संबंधित सिक्के

राजवंश	प्रमुख विशेषताएं	चित्र (अग्रभाग और पृष्ठ भाग)
इंडो-ग्रीक या हिंद-यूनानी	⊕ **हिंद-यूनानी वे प्रथम शासक थे, जिन्होंने राजाओं के नाम व चित्र वाले पहले सिक्के जारी किए थे।** इन शासकों ने दूसरी शताब्दी ई. पू. में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग पर शासन किया था। ⊕ **हिंदुकुश (ग्रीको-बैक्ट्रियन) के उत्तर में प्रचलित सिक्के:** ○ **स्वर्ण, रजत, ताम्र व निकेल** के बने होते थे। ○ **ऐटिक भार मानक** का अनुसरण किया जाता था। ⊕ सिक्कों के **अग्रभाग पर राजाओं के चित्र** तथा पृष्ठ भाग पर सामान्यतया **यूनानी देवताओं (जैसे- ज़्यूस, अपोलो व एथेना) के चित्र** होते थे। सिक्कों पर राजा का नाम व उपाधि भी होती थी। ⊕ **हिंदुकुश (हिंद-यूनानी) के दक्षिण में प्रचलित सिक्के:** ○ **रजत** व **ताम्र** के बने होते थे तथा प्रायः आकार में वर्गाकार होते थे। ○ सिक्कों पर द्विभाषी **(यूनानी व खरोष्ठी)** अभिलेख होते थे। **ब्राह्मी लिपि का दुर्लभ** ही प्रयोग किया जाता था। **भारतीय भार मानक** का अनुसरण किया जाता था। ○ सिक्कों के अग्रभाग पर **राजाओं के चित्र होते थे** तथा **पृष्ठ भाग पर यूनानी प्रेरकों की बजाए भारतीय धार्मिक रूपांकनों को उत्कीर्ण किया जाता था।**	
कुषाण	⊕ उन्होंने **सोने और तांबे** के सिक्के जारी किए। ⊕ आमतौर पर सिक्कों पर **ग्रीक, मेसोपोटामियाई, जोरास्ट्रियन और भारतीय पौराणिक कथाओं** से लिए गए चित्रांकनों को दर्शाया गया है। ⊕ **शिव, बुद्ध और कार्तिकेय** जैसे भारतीय देवताओं को प्रमुखता से चित्रित किया गया है।	
सातवाहन	⊕ **तांबे, चांदी, सीसा और पोटिन** से अलग-अलग आकार के सिक्के ढाले जाते थे। ⊕ सिक्कों पर **प्रतीकों, रूपांकनों, चित्रों और प्रसिद्ध नायकों** को दर्शाया जाता था। ⊕ **हाथियों, शेरों, बैलों, घोड़ों** जैसे जीवों को अक्सर **प्रकृति के रूपांकनों** (जैसे- पहाड़, वृक्ष आदि) के साथ दर्शाया जाता था।	
पश्चिमी क्षत्रप	⊕ सिक्कों पर सामान्यतः **ग्रीक और ब्राह्मी लिपि** में मुद्रालेख लिखे होते थे। सिक्कों पर **खरोष्ठी लिपि** का भी उपयोग किया जाता था। ⊕ **पश्चिमी क्षत्रप के सिक्के सबसे पुराने सिक्के** हैं, जिन पर **तिथियां अंकित** हैं।	
अन्य सिक्के (मौर्योत्तर और पूर्व गुप्त युग के मध्य का काल)	⊕ पंजाब में अलग-अलग **कबीलाई गणराज्यों और सिंधु-गंगा के मैदान में शासन करने वाले राजवंशों** ने सिक्के जारी किए थे। ⊕ **यौधेय** गणराज्य के सिक्के **कुषाणों के सिक्कों के डिजाइन** और रूपांकन से प्रभावित थे, जबकि **वजन में इंडो-बैक्ट्रियन** शासकों के सिक्कों के समान थे।	
गुप्तकालीन सिक्के	⊕ कुषाणों की परंपरा का पालन करते हुए **अग्रभाग पर राजा और पृष्ठभाग पर देवता का चित्र** अंकित किया जाता था। ये **देवता भारतीय** हैं और **ब्राह्मी लिपि** में मुद्रालेख लिखे गए हैं। ⊕ सिक्के अक्सर **राजवंशीय उत्तराधिकार** के साथ-साथ **महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों**, जैसे- विवाह गठबंधन, घोड़े की बलि (अश्वमेध यज्ञ) आदि का प्रमाण देते हैं।	
गुप्तोत्तर कालीन सिक्के	⊕ हिन्द-यूनानियों, कुषाणों और गुप्तों के अत्यधिक कलात्मक **सोने एवं चांदी के सिक्कों** के स्थान पर **चांदी, तांबे तथा मिश्र धातु के सिक्के** ढाले जाने लगे थे। ⊕ राजपूत वंशों में प्रचलित सिक्कों पर **एक तरफ बैठा हुआ सांड तथा दूसरी तरफ घुड़सवार** अंकित है।	
दक्षिण भारतीय सिक्के	⊕ सिक्कों पर राजवंशीय प्रतीकों को अंकित किया जाता था, जैसे- **वराह (चालुक्य), वृषभ (पल्लव), व्याघ्र (चोल), मत्स्य (पांड्य और अलूप), धनुष व बाण (चेर), शेर (होयसल)** आदि। ⊕ **देवगिरी के यादव शासकों** द्वारा जारी किए गए सिक्कों के अग्रभाग पर आठ पंखुड़ी वाले **कमल के साथ 'पद्मटंक'** का अंकन किया जाता था। **पृष्ठभाग रिक्त** रखा जाता था। ⊕ मध्यकालीन विजयनगर काल (14वीं-16वीं शताब्दी ईस्वी) के सिक्कों पर सजावटी विशेषताएं दुर्लभ हैं और **देवता लगभग अनुपस्थित** हैं।	

© Vision IAS

मध्यकालीन भारत के सिक्के

राजवंश/ साम्राज्य	प्रमुख विशेषताएं	चित्र
दिल्ली सल्तनत	**सोने, चांदी और तांबे** के सिक्के ढाले जाते थे। खिलजी शासकों ने **आडंबरपूर्ण उपाधियों वाले सिक्के** बहुतायत में जारी किए थे। **अलाउद्दीन खिलजी ने "सिकंदर अल सानी" (दूसरा सिकंदर)** की उपाधि वाले सिक्के जारी किए थे। **मुहम्मद बिन तुगलक** के शासनकाल में **दीनार नामक सोने के सिक्के** जारी किए गए थे। इसके बाद सोने की सिक्कों में कमी आने लगी थी। लोधियों के समय के अधिकांश सिक्के **तांबे और बिलन (चांदी या सोने और तांबे की मिश्र धातु)** के बनाए जाते थे।	गयासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई.) के सिक्के खिलजी कालीन सिक्के
विजयनगर साम्राज्य	विजयनगर साम्राज्य के **सिक्के अधिकतर सोने और तांबे** के बने होते थे। सोने के अधिकांश सिक्कों के अग्र भाग पर **एक पवित्र** चित्र और पृष्ठ भाग पर **राजकीय लेख** अंकित है। विजयनगर साम्राज्य के महत्वपूर्ण सोने के सिक्कों में **भगवान तिरुपति का चित्र** अंकित है, अर्थात **भगवान वेंकटेश्वर** या तो अकेले या अपनी दो पत्नियों के साथ दर्शाए गए हैं।	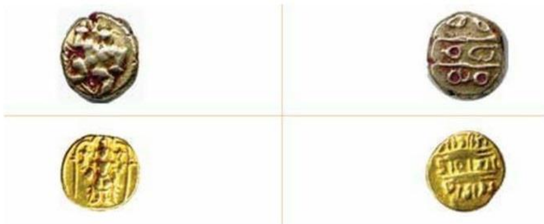
मुगल	मुगल कालीन सिक्के काफी हद तक एक अफगान शासक **शेरशाह सूरी की रचना** थी। इसने दिल्ली पर कुछ समय के लिए शासन किया था। शेरशाह ने **चांदी का सिक्का** जारी किया था। इसे **रुपया** कहा गया, जो **आधुनिक रुपये का अग्रदूत** है। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक यह **काफी हद तक अपरिवर्तित** रहा था। चांदी के रुपये के साथ **मोहर नामक सोने के सिक्के** और **दाम नामक तांबे के सिक्के** भी जारी किए गए थे। मुगलकालीन सिक्कों में **मौलिकता और अभिनव कौशल** दिखाई देता है।	एक रुपया – शेरशाह सूरी (अफगान) मोहर – औरंगज़ेब

ब्रिटिश भारतीय सिक्के

- सोने के **सिक्कों को कैरोलिना, चांदी के सिक्कों को एंग्लिना, तांबे के सिक्कों को कप्परून और टिन के सिक्कों को टिनी** कहा जाता था। **1835 के कॉइनेज़ एक्ट** के लागू होने के बाद एक समान सिक्के जारी किये जाने लगे थे।
- 1835 में नए डिजाइन के सिक्के जारी किए गए थे। इनके **अग्रभाग पर प्रिंस विलियम IV का चित्र तथा पृष्ठ भाग पर अंग्रेजी और फारसी** में सिक्के का मूल्य अंकित होता था। 1840 के बाद जारी किए गए सिक्कों में **महारानी विक्टोरिया का चित्र** अंकित होने लगा था।
- **भारतीय सिक्का निर्माण अधिनियम, 1906 से टकसालों की स्थापना**, जारी किए जाने वाले सिक्कों और उनके मानकों को भी शासित किया जाने लगा था।

6.6. पाणिनि कोड (Panini Code)

सुर्ख़ियों में क्यों?

एक भारतीय स्कॉलर ने पाणिनी के 2500 साल पुराने पाणिनि कोड को क्रैक किया है। दूसरे शब्दों में, भारतीय स्कॉलर ने ढाई हजार साल पुरानी अष्टाध्यायी में व्याकरण की समस्या को हल किया है।

पाणिनि कोड के बारे में

- **समान शक्ति के दो नियमों के बीच संघर्ष की स्थिति में पाणिनि ने एक "मेटारूल" सिखाया था।**
  - परंपरागत रूप से, विद्वानों ने "मेटारूल" के अर्थ की इस रूप में व्याख्या की है कि **दो नियमों में संघर्ष की स्थिति में व्याकरण के क्रम में बाद में आने वाले नियम का उपयोग किया जाता है।** हालांकि, यह व्याख्या **व्याकरण की दृष्टि से अक्सर गलत परिणाम देती थी।**

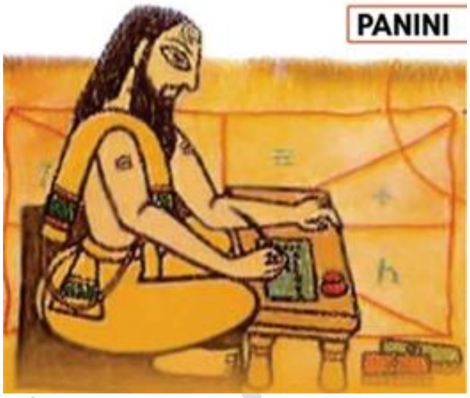

- नए शोध में तर्क दिया गया है कि इस तरह के संघर्षों में, पाणिनि चाहते थे कि **किसी शब्द के बाएं और दाएं पक्ष पर लगने वाले नियमों में हमें दाईं ओर लगने वाले नियम को चुनना चाहिए।**
- **शोध का महत्व:** यह शोध संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। साथ ही, कंप्यूटर द्वारा भी संस्कृत व्याकरण को पढ़ाया जा सकेगा।

पाणिनि और अष्टाध्यायी के बारे में:

- पाणिनि **संस्कृत व्याकरण के विद्वान** थे। उन्होंने **ध्वनि विज्ञान (Phonetics), स्वर विज्ञान (Phonology) और शब्द-संरचना (Morphology) का एक व्यापक तथा वैज्ञानिक सिद्धांत** दिया था।
- उन्हें एक **सूचनाविद्** के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि **उन्होंने सूचनाओं को डिकोड करने के लिए भाषा का इस्तेमाल** किया था।
- पाणिनि के व्याकरण ग्रंथ को **अष्टाध्यायी (या अष्टक)** के रूप में जाना जाता है। इसकी रचना **छठी या पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व** में की गई थी। संस्कृत भाषा के पीछे के विज्ञान को समझाने के लिए इस ग्रंथ में **4,000 सूत्र** हैं।
  - यह एक ऐसी प्रणाली पर निर्भर करता है, जो किसी शब्द के आधार (मूल) और प्रत्यय (suffix) को व्याकरणिक रूप से सही शब्दों एवं वाक्यों में बदलने के लिए **एल्गोरिदम की तरह कार्य** करती है।
  - इसकी तुलना **एलन एम. ट्यूरिंग की ट्यूरिंग मशीन से की जाती है,** क्योंकि शब्द बनाने के इसके नियम जटिल हैं।
- **अष्टाध्यायी का बाद में कई सहायक ग्रंथों द्वारा संवर्धन किया गया था। ये सहायक ग्रंथ हैं- शिवसूत्र** (ध्वनियों का विशेष क्रम); **धातुपाठ** (मूल शब्दों की सूची); **गणपाठ** (संज्ञाओं के अलग-अलग समूह) और **लिंगानुशासन** (लिंग निर्धारण की प्रणाली) आदि।

6.7. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सुरक्षा के लिए अभिसमय {Convention for Safeguarding of Intangible Cultural Heritage (ICH)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत को यूनेस्को के **'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सुरक्षा के लिए अभिसमय-2003' की** अंतर सरकारी समिति के लिए चुना गया है।

समिति के बारे में

- इस **समिति में 24 सदस्य** होते हैं। इन सदस्यों को समान भौगोलिक प्रतिनिधित्व और रोटेशन पद्धति के अनुसार चुना जाता है।
  - भारत **वर्ष 2022-2026 अवधि के लिए** चुना गया है। भारत का कुल मिलाकर तीसरी बार चयन किया गया है।
  - इससे पहले, भारत **यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति** (2021-2025) के लिए भी चुना गया था।
- **समिति के कुछ मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:**
  - अभिसमय (कन्वेंशन) के **उद्देश्यों को बढ़ावा** देना,
  - सर्वोत्तम प्रथाओं पर **मार्गदर्शन** प्रदान करना, और
  - अमूर्त सांस्कृतिक **विरासत की सुरक्षा** के लिए सिफारिशें करना।
- यह समिति अमूर्त विरासत की सूची में किसी नयी **विरासत को शामिल करने के अनुरोधों की भी जांच** करती है। इस समिति को **अंतर्राष्ट्रीय सहायता प्रदान** करने का कार्य भी सौंपा गया है।

यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए अभिसमय, 2003 के बारे में:

- इसका उद्देश्य **परंपराओं और जीवंत अभिव्यक्ति के साथ-साथ अमूर्त विरासत की सुरक्षा भी** करना है।
- **इसके निम्नलिखित 4 प्राथमिक लक्ष्य हैं:**
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना,
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के लिए सम्मान सुनिश्चित करना,
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना तथा
    - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता प्रदान करना।
- वर्ष 2003 के अभिसमय के बाद, **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची को पांच व्यापक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है:**
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के वाहक के रूप में भाषा सहित मौखिक परंपराएं और अभिव्यक्तियां,
    - निष्पादन (प्रदर्शन) कलाएं,
    - सामाजिक प्रथाएं, अनुष्ठान और उत्सव कार्यक्रम,
    - प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान एवं अभ्यास तथा
    - पारंपरिक शिल्प कौशल।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बारे में

- इसका अर्थ है **अभ्यास, प्रदर्शन,** अभिव्यक्ति, ज्ञान, कौशल तथा इनसे जुड़े **उपकरण, वस्तु, कलाकृतियां और उनसे जुड़े सांस्कृतिक क्षेत्र;** जिन्हें समुदाय, समूह एवं व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत के एक हिस्से के रूप में पहचानते हैं।
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारित होने वाली संजीदा परंपराओं को संरक्षित करना **'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की सुरक्षा के लिए अभिसमय-2003'** की आधारशिला है।
    - **भारत इस अभिसमय का एक हस्ताक्षरकर्ता है।**

- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में **14 भारतीय विरासत** शामिल हैं। इनमें **दुर्गा पूजा (2021), कुंभ मेला (2017) तथा योग (2016)** सबसे बाद में जोड़े गए हैं।

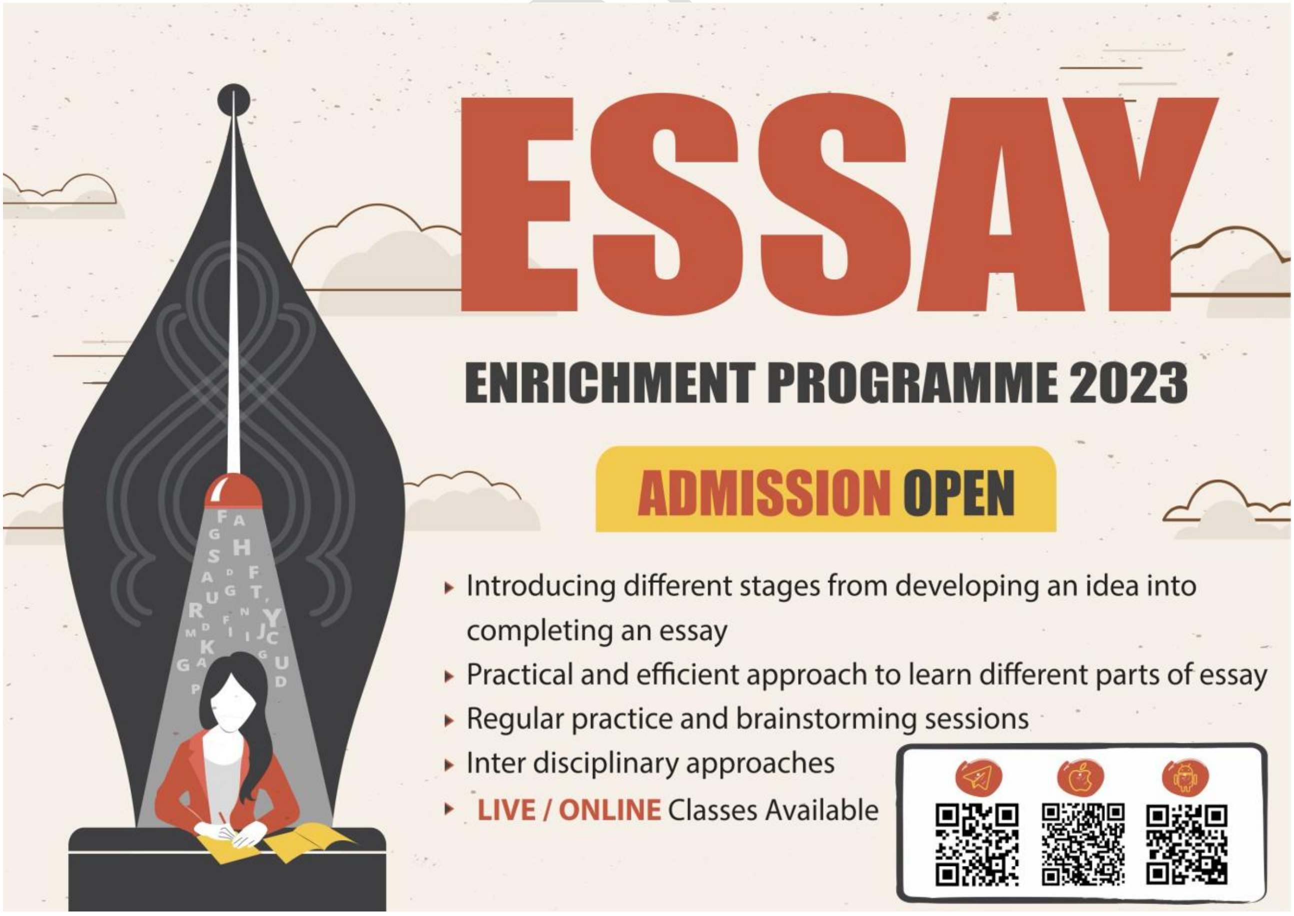

6.8. स्वदेश दर्शन योजना (Swadesh Darshan Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

पर्यटन मंत्रालय ने अपनी स्वदेश दर्शन योजना को स्वदेश दर्शन 2.0 (SD2.0) के रूप में नया स्वरूप प्रदान किया है। **SD2.0** एक समग्र मिशन के रूप में भारत में संधारणीय और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों को विकसित करेगा।

स्वदेश दर्शन 2.0

QUICK FACTS महत्वपूर्ण तथ्य

- **योजना का प्रकारः** केंद्रीय क्षेत्रक की एक योजना।
- **उद्देश्यः** देश में संधारणीय और उत्तरदायी पर्यटन गंतव्यों का विकास करना।
- **लाभार्थीः** अलग–अलग सर्किट्स की अवसंरचना के विकास के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को केंद्रीय वित्तीय सहायता दी जाती है।
- **कार्यान्वयन एजेंसीः** राज्य अथवा केंद्र सरकार द्वारा नामित।

उद्देश्य

- पर्यटन और संबद्ध अवसंरचना, पर्यटन सेवाओं आदि को शामिल करते हुए संधारणीय तथा जिम्मेदार पर्यटन स्थलों का विकास करना।
- स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में पर्यटन के योगदान को बढ़ाना।
- पर्यटन क्षेत्र में रोजगार सृजित करना, कौशल बढ़ाना और निजी क्षेत्र का निवेश बढ़ाना।
- स्थानीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित व प्रोत्साहित करना।

प्रमुख विशेषताएं

पृष्ठभूमि

स्वदेश दर्शन योजना 2015 में शुरू की गई थी। इस योजना के तहत अब तक 76 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

योजना के अंतर्गत पालन किए जाने वाले सिद्धांत

प्रमुख सिद्धांतः
- प्रमुख पर्यटन थीम्स के लिए बेंचमार्क और मानक विकसित करना
- संधारणीय और जिम्मेदार पर्यटन
- गंतव्य और पर्यटक केंद्रित दृष्टिकोण
- नीतिगत और संस्थागत सुधार
- घरेलू पर्यटन पर फोकस
- पर्यटन स्थल का एकीकृत विकास
- संधारणीय आधार पर परिचालन और रखरखाव
- अन्य केंद्रीय और राज्य योजनाओं के साथ तालमेल

पर्यटन के लिए प्रमुख थीम्स

पर्यटन थीम
- संस्कृति और विरासत
- साहसिक पर्यटन
- पारिस्थितिकी पर्यटन

PT 365 - संस्कृति

© Vision IAS

पर्यटन के लिए प्रमुख थीम्स

- कल्याण पर्यटन
- MICE (बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनियां) पर्यटन
- ग्रामीण पर्यटन
- समुद्र तट पर्यटन
- क्रूज़ – महासागर और अंतर्देशीय

राज्य परिप्रेक्ष्य योजनाएं

उसी राज्य द्वारा तैयार की जाएंगी, जो **अलग–अलग गंतव्यों की पर्यटन क्षमता का विश्लेषण** कर रहा है।

संभावित पर्यटन स्थल तय करने के लिए प्रमुख कारक:

- प्रमुख पर्यटन आकर्षण, प्रस्ताव/सुविधाएं और थीम
- स्थानीय परिवहन सहित हवाई, रेल और सड़क मार्ग से कनेक्टिविटी
- किसी भी पर्यटक सर्किट से कनेक्टिविटी
- गंतव्य पर वर्तमान पर्यटन पारिस्थितिकी–तंत्र
- गंतव्य पर भविष्य की पर्यटन क्षमता
- गंतव्य के लिए राज्य का समर्थन

डेस्टिनेशन मास्टर प्लान

प्रत्येक चयनित गंतव्य के संबंध में तैयार किया जाएगा, जिसका आधार **बेंचमार्किंग और व्याप्त कमियों का विश्लेषण** होगा:

मुख्य हस्तक्षेप

कठोर हस्तक्षेप

- कोर पर्यटन उत्पाद
- पर्यटन गतिविधियां
- स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वच्छता
- स्थल पर अवसंरचना
- सर्कुलेशन एवं ट्रैफिक

साधारण हस्तक्षेप

- पर्यटन सेवा
- विपणन और प्रोत्साहन
- क्षमता निर्माण
- डिजिटलीकरण/ GIS मैपिंग

गैर–स्वीकार्य परियोजना

इस तरह की परियोजनाओं को **इस योजना के तहत वित्त–पोषित नहीं किया जाएगा,** लेकिन किसी अन्य योजना के तहत राज्य द्वारा समर्थित किया जा सकता है।

गैर–स्वीकार्य परियोजना:

- विकास के लिए भूमि अधिग्रहण
- पुनर्स्थापन और पुनर्वास पैकेज
- निजी संस्थाओं के स्वामित्व वाली संपत्तियों/संरचनाओं में सुधार/निवेश
- जल निकायों (मानव निर्मित और प्राकृतिक दोनों) की मेढ़ों/बंधों का कायाकल्प/तलमार्जन/विकास

6.9. भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication: GI)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **सरकार ने देश भर के 9 उत्पादों को GI टैग (भौगोलिक संकेतक का दर्जा)** प्रदान किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इसके साथ ही भारत के GI टैग उत्पादों की कुल संख्या 432 हो गई है।
    - सबसे अधिक GI टैग प्राप्त शीर्ष 5 राज्य **कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र** हैं।

सुर्खियों में रहे GI टैग

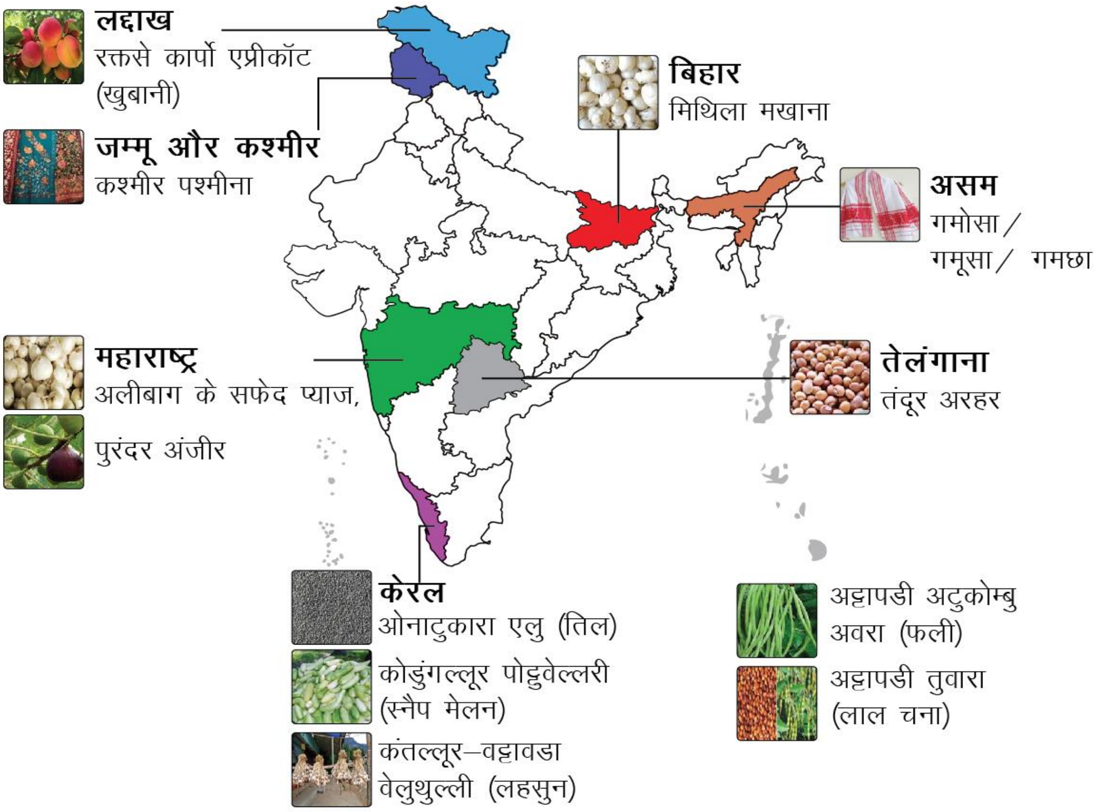

भौगोलिक संकेतक (GI) टैग

- यह एक प्रकार का ऐसा संकेतक है, जो किसी उत्पाद की पहचान उसकी विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति से जोड़ता है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) के **सदस्यों के अधिकार क्षेत्र या उनके राज्यों/ प्रांतों के भीतर किसी स्थानीय इलाके के उत्पादों को GI टैग दिया** जा सकता है।
- **बौद्धिक संपदा अधिकार के व्यापार संबंधी पहलू (ट्रिप्स/TRIPS)** में परिभाषित है।
- **एक भौगोलिक संकेतक 10 वर्ष की अवधि के लिए पंजीकृत होता है।** पंजीकरण अवधि को समय-समय पर एक बार में आगे 10 वर्ष की अवधि के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है।

महत्त्व

- इसके धारक को **किसी तीसरे पक्ष के गैर–मानकीकृत उत्पाद के लिए उक्त संकेतक का इस्तेमाल करने से रोकने में सक्षम बनाता है।**
- **एक संरक्षित भौगोलिक संकेतक धारक को किसी अन्य व्यक्ति को उसी तकनीक का उपयोग करके उत्पाद बनाने से रोकने में सक्षम नहीं बनाता है,** जिसका निर्धारण उस संकेतक के मानकों में किया गया है।

भारत में संबंधित कानून

- माल का भौगोलिक संकेतक (रजिस्ट्रीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999
- माल के भौगोलिक संकेतक (विनियमन और संरक्षण) नियम, 2002

तंत्र

- **उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)** के तहत पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्रार:
    - यह रजिस्ट्रार भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) के कामकाज की निगरानी करता है।
    - GIR चेन्नई में है और इसका क्षेत्राधिकार अखिल भारतीय है।

© Vision IAS

हाल ही में प्राप्त हुए भौगोलिक संकेतक टैग के बारे में

उत्पाद	राज्य	विवरण
गमोसा	असम	• गमोसा/ गमूसा/ गमछा **सफेद रंग का हाथ से बुना हुआ वस्त्र का एक आयताकार टुकड़ा है।** इस वस्त्र के किनारे लाल रंग के होते हैं। • यह एक **पारंपरिक वस्त्र है जिसका असम के लोगों के लिए काफी महत्त्व है।** • गमोसा को **'बिहुवान'** के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह असम के बिहू त्योहार का एक अनिवार्य हिस्सा है।
अलीबाग के सफेद प्याज	महाराष्ट्र	• यह सफेद प्याज की एक पारंपरिक किस्म है। यह महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले की अलीबाग तहसील में उगाई जाती है। ○ **अलीबाग तालुका की मिट्टी में सल्फर की मात्रा कम** है। यहां की **भू-जलवायु परिस्थितियां** इसे अन्य सफेद प्याज उत्पादक क्षेत्रों से विशिष्ट बनाती हैं। • इस प्याज में आमतौर पर बाजार में मिलने वाले मानक प्याज की तरह **तेज गंध नहीं होती है।** • इसका **स्वाद मीठा होता है, जो अन्य प्याज से अलग है।**
तंदूर अरहर (Tandur Redgram) 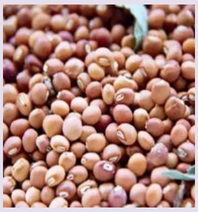	तेलंगाना	• यह **तेलंगाना के वर्षा आधारित क्षेत्र में उगाई जाने वाली एक पारंपरिक** फसल है। • इसमें प्रोटीन की मात्रा लगभग 22-24% होती है, जो अनाज से लगभग तीन गुना अधिक है। • शोधकर्ताओं के अनुसार, **विशेष रूप से तंदूर क्षेत्र में मृत्तिका खनिजों से युक्त उपजाऊ गहरी काली मृदा और चूना पत्थर के विशाल भंडार को तंदूर अरहर की विशिष्ट गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया** जा सकता है।
लद्दाख रक्तसे कार्पो एप्रीकॉट (खुबानी) (Ladakh Raktsey Karpo Apricot)	लद्दाख	• **खुबानी** कुल का 'रक्तसे कार्पो' फल **विटामिन और सोर्बिटोल से समृद्ध तथा निम्न कैलोरी वाला** होता है। सोर्बिटोल ग्लूकोज का एक प्राकृतिक विकल्प है, जिसका सेवन मधुमेह रोगियों द्वारा किया जा सकता है। • इन खुबानियों को किसी भी रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल किए बिना **जैविक तरीके से उगाया** जा सकता है। • **रक्तसे कार्पो फल के बीजों में सफेद रंग की बीज गुठली** होती है। हालांकि, दुनिया भर में खुबानी फलों में भूरे रंग की बीज गुठली होती हैं।
अट्टापडी तुवारा/ Attappady Thuvara (लाल चना)	केरल	• अट्टापडी तुवारा **केरल के पलक्कड़ जिले के अट्टापडी जनजातीय क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण पारंपरिक** फसल है। ○ यह एक काष्ठीय झाड़ी है, जिसे आम तौर पर वार्षिक फसल के रूप में उगाया जाता है। • अट्टापडी तुवारा के **बीज सफेद आवरण** वाले होते हैं। ○ अन्य लाल चनों की तुलना में, अट्टापडी तुवारा के बीज आकार में बड़े और वजनदार होते हैं। ○ यह **प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, कैल्शियम और मैग्नीशियम से भरपूर** है।
ओनाट्टुकारा एलु/ Onattukara Ellu (तिल)	केरल	• यह एक प्राचीन और पारंपरिक वार्षिक **तिलहन फसल** है। • इसमें अपेक्षाकृत **उच्च एंटीऑक्सीडेंट** गुण पाए जाते हैं। • यह शरीर की कोशिकाओं को नष्ट करने वाले **फ्री रेडिकल्स से लड़ने में हमारी मदद करता है।** • यह असंतृप्त वसा से भी युक्त है। इस कारण यह हृदय रोगियों के लिए फायदेमंद है।

कोडुंगल्लूर पोट्टुवेल्लरी/ Kodungalloor Pottuvellari (स्नैप मेलन)	केरल	• इसकी खेती पूरी तरह से **परिपक्व फल के लिए** की जाती है। जिसका **उपयोग जूस बनाने** के लिए किया जाता है। • कुछ राज्यों में इसका उपयोग **सब्जी** के रूप में किया जाता है। • इसमें **उच्च मात्रा में विटामिन C पाया** जाता है। • अन्य कुकुरबिट्स (लौकी कुल) की तुलना में, **कोडुंगल्लूर पोट्टुवेल्लरी में कैल्शियम, मैग्नीशियम, फाइबर और वसा की मात्रा अधिक** होती है।
अट्टापडी अट्टुकोम्बु अवरा/ Attappady Attukombu Avara (फली)	केरल	• इसकी खेती पलक्कड़ जिले के अट्टापडी क्षेत्र में की जाती है। • अन्य **डोलिकोस बीन्स की तुलना में इसमें उच्च एंथोसायनिन सामग्री** पाई जाती है, जो इसके तने और फलों को **बैंगनी रंग** प्रदान करती है। • एंथोसायनिन में मधुमेह निवारक गुण पाए जाते हैं। यह **हृदय रोगों से बचाता** है। ○ इसके अलावा, **इसमें कैल्शियम, प्रोटीन और फाइबर की भी उच्च मात्रा होती है।** • अट्टापडी अट्टुकोम्बु अवरा की उच्च फेनोलिक सामग्री कीट और रोगों के खिलाफ प्रतिरोध क्षमता प्रदान करती है। इससे फसल जैविक खेती के लिए उपयुक्त हो जाती है।
कंतल्लूर-वट्टावडा वेलुथुल्ली/ Kanthalloor-Vattavada Veluthulli (लहसुन)	केरल	• **इसकी खेती इडुक्की में की जाती है। इसमें उच्च मात्रा में सल्फाइड, फ्लेवोनोइड्स और प्रोटीन मौजूद होता है।** • यह **एलिसिन** से भरपूर है, जो सूक्ष्मजीवों से होने वाले संक्रमण, ब्लड शुगर, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोगों और रक्त वाहिकाओं की क्षति आदि के खिलाफ प्रभावी है।

6.10. सुर्ख़ियों में रहे अन्य GI टैग (Other GI tag in News)

बनारसी पश्मीना	• **खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)** ने वाराणसी में बनारसी पश्मीना लॉन्च किया। • यह **पहली बार है, जब पश्मीना उत्पादों** का उत्पादन **लेह-लद्दाख और जम्मू-कश्मीर के क्षेत्र के बाहर किया जा रहा है।** • **चांगथांगी या पश्मीना बकरियों को** अत्यधिक महीन **कश्मीरी ऊन** के लिए पाला जाता है। इसे एक बार बुने जाने के बाद **पश्मीना** के नाम से जाना जाता है। ○ चांगथांगी या पश्मीना बकरी **लद्दाख के बहुत अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों की स्थानिक विशेष बकरी प्रजाति है।** इसका **चांगपा** नामक घुमंतू समुदायों द्वारा पालन किया जाता है। • कश्मीर पश्मीना को **भौगोलिक संकेतक (GI) दर्जा प्राप्त है।**

मिथिला मखाना	• हाल ही में, **केंद्र सरकार ने बिहार के 'मिथिला मखाना' को GI टैग** प्रदान किया है। इससे किसानों को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य प्राप्त होगा।
	• मिथिला मखाना को बिहार मखाना के नाम से भी जाना जाता है। **यह जलीय मखाने की एक किस्म है।**
	  ○ **ये प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होते हैं। इसके अलावा, इनमें मैग्नीशियम, कैल्शियम, फॉस्फोरस और आयरन जैसे विभिन्न सूक्ष्म पोषक तत्व भी पाए जाते हैं।**
	  ○ **प्रसिद्ध रूप से मैथिली ब्राह्मणों द्वारा कोजगरा पूजा** के दौरान इसका सेवन किया जाता है।
	  ○ इसकी खेती, **बिहार के मिथिला क्षेत्र और नेपाल** के कुछ हिस्सों में की जाती है।

पुरंदर अंजीर (Purandhar Figs)	• **पुणे जिले के पुरंदर तालुका से पहली बार** ताजे अंजीर का **निर्यात** किया गया। • **पुरंदर की शुष्क दोमट मृदा अंजीर की खेती के लिए आदर्श** होती है। • पुरंदर में **पर्याप्त धूप तथा हवा और मृदा में मध्यम नमी के साथ शुष्क या अर्ध-शुष्क स्थितियां** होती हैं जो इसे

© Vision IAS

	अंजीर की खेती के लिए आदर्श बनाती हैं। • **पुरंदर अंजीर की विशेषता:** इसमें लगभग 80 प्रतिशत पल्प होता है। यह स्वाद में मीठा, कम अम्लीय और उच्च TSS (कुल घुलनशील सुगर) वाला होता है। • हालांकि, अंजीर की **कम शेल्फ-लाइफ** इसकी निर्यात क्षमता को बाधित करती थी।
काला नमक चावल 	• **भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI)** ने काला नमक चावल की **दो बौनी किस्मों** को सफलतापूर्वक विकसित किया है। इनका नाम है- ○ **पूसा नरेंद्र काला नमक 1638 और पूसा नरेंद्र काला नमक 1652** ○ ये किस्में **लॉजिंग की समस्या का समाधान करती** हैं। ▪ **लॉजिंग** खेत में अत्यधिक जलभराव व तेज हवा के कारण तने के टूटने से फसल का झुक जाना या गिर जाना है। • **काला नमक चावल के बारे में:** ○ इसे **बुद्ध चावल के रूप में भी जाना** जाता है। **काला नमक एक सुगंधित,** एक असामान्य काले भूसी के साथ बेहतरीन और छोटे दाने वाले चावलों में से एक है। ○ यह **आयरन और जिंक जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर** है। **चावल की यह किस्म अल्जाइमर को रोकने में भी मदद** कर सकती है। ○ **वर्ष 2013 में इसे भौगोलिक संकेतक (GI) दर्जा प्रदान** किया गया था।
निकोबारी होदी (Nicobari hodi) 	• अंडमान और निकोबार ने पहली बार अपने किसी शिल्प के लिए भौगोलिक संकेतक (GI Tag) दर्जा प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है। यह आवेदन निकोबारी होदी शिल्प के लिए किया गया है। • **निकोबारी होदी के बारे में** ○ होदी **निकोबारी जनजाति का पारंपरिक शिल्प है।** ○ **यह एक छोटी हल्की नौका (ओट्रिगर डोंगी) है।** यह निकोबार द्वीप समूह में सामान्य रूप से प्रचलित है। ○ होदी को या तो स्थानीय रूप से उपलब्ध वृक्षों या आसपास के द्वीप से लाये गए वृक्षों की लकड़ी से बनाया जाता है। इसका डिजाइन एक द्वीप से दूसरे द्वीप में थोड़ा अलग होता है। • इसका उपयोग **लोगों और सामानों को एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक ले जाने, दौड़ प्रतियोगिता आदि के लिए** किया जाता है।
'निहोन्शु' (Nihonshu) 	• जापानी दूतावास ने एक मादक पेय **'निहोन्शु'** के लिए GI टैग प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है। यह चावल के किण्वन द्वारा निर्मित एक मादक पेय पदार्थ है। • भारत ने **वस्तु के भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999** को लागू किया है। यह अधिनियम **अभिसमय से जुड़े देशों (Convention countries)** के नागरिकों को GI टैग के पंजीकरण हेतु आवेदन करने की अनुमति प्रदान करता है। अधिनियम के अंतर्गत **अभिसमय देश** वे हैं, जो किसी अंतर्राष्ट्रीय संधि अथवा संगठन के सदस्य हैं तथा उन्होंने GI टैग के संबंध में भारतीय नागरिकों को भी विशेषाधिकार प्रदान किए हैं।

6.11. त्योहार (Festivals)

6.11.1. बाली यात्रा (Baliyatra)

सुर्ख़ियों में क्यों?

G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधान मंत्री ने बाली यात्रा का उल्लेख किया। यह भारत के सबसे बड़े मुक्ताकाश मेलों (Open-air fairs) में से एक है।

बाली यात्रा के बारे में

- बाली यात्रा का आयोजन **हर साल** किया जाता है। इसे **प्राचीन कलिंग** (वर्तमान ओडिशा) और **बाली तथा दक्षिण व दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य क्षेत्रों के बीच** समुद्री एवं सांस्कृतिक संपर्कों का उत्सव मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य क्षेत्रों, जैसे कि **जावा, सुमात्रा,**

बाली और कलिंग के बीच संबंध के प्रमाण

- बाली और ओडिशा दोनों जगहों पर **सामाजिक-सांस्कृतिक केंद्र के रूप में मंदिर** महत्वपूर्ण रूप से समानता रखते हैं।
- उत्तर पूर्वी बाली में स्थित सेम्बिरन में और ओडिशा के माणिकपटना, तामलुक स्थलों में **समान प्रकार के रूले (roulette) देखे गए हैं।**
- **बाली से 14वीं शताब्दी ईस्वी का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो उड़िया भाषा में है। इसके अलावा, दसवीं शताब्दी ईस्वी में बाली में प्रयुक्त लिपियों का कलिंग** में भी उपयोग किया गया था।
- बाली में ब्राह्मणों के एक वर्ग ने स्वयं को **ब्राह्मण-बुद्ध-कलिंग** के रूप में प्रस्तुत किया है।

बोर्नियो, बर्मा (म्यांमार) और सीलोन (श्रीलंका) के साथ भी प्राचीन कलिंग के संबंध रहे हैं।

- यह यात्रा उत्सव **महानदी नदी के तट पर** मनाया जाता है। इसकी शुरुआत **कार्तिक पूर्णिमा (अक्टूबर-नवंबर में पूर्णिमा के दिन)** से होती है।
- यह उत्सव बाली के **"मसकपन के तुकड़"** त्योहार के समान है।

कलिंग साम्राज्य के समुद्री गतिविधि संबंधी इतिहास के बारे में

- कालिदास ने **रघुवंश** काव्य में कलिंग के राजा का **'सागर के स्वामी' (महोदधिपति)** के रूप में उल्लेख किया है। यह संबोधन समुद्री मार्गों पर कलिंग के प्रभुत्व का सूचक है।
- भौगोलिक अवस्थिति के कारण चौथी और पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में **कलिंग में कई बंदरगाहों का विकास** हुआ था।
  - **कुछ प्रसिद्ध बंदरगाह थे:** ताम्रलिप्ति, माणिकपटना, चेलिटालो, पलूर, पिथुंडा, दंतपुरा, कलिंग नगर आदि।
- कलिंगों ने **'बोइता' (Boita) नामक बड़ी नावों का निर्माण** किया था।
- दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के अलावा, **पूर्वी अफ्रीकी तथा कुछ अरब देशों के साथ भी व्यापारिक संबंध** थे।
- **मुगल और ब्रिटिश शासन के दौरान व्यापार में गिरावट** आ गई थी।

6.11.2. न्यू इयर मैप ऑफ़ इंडिया (New Year Map of India)

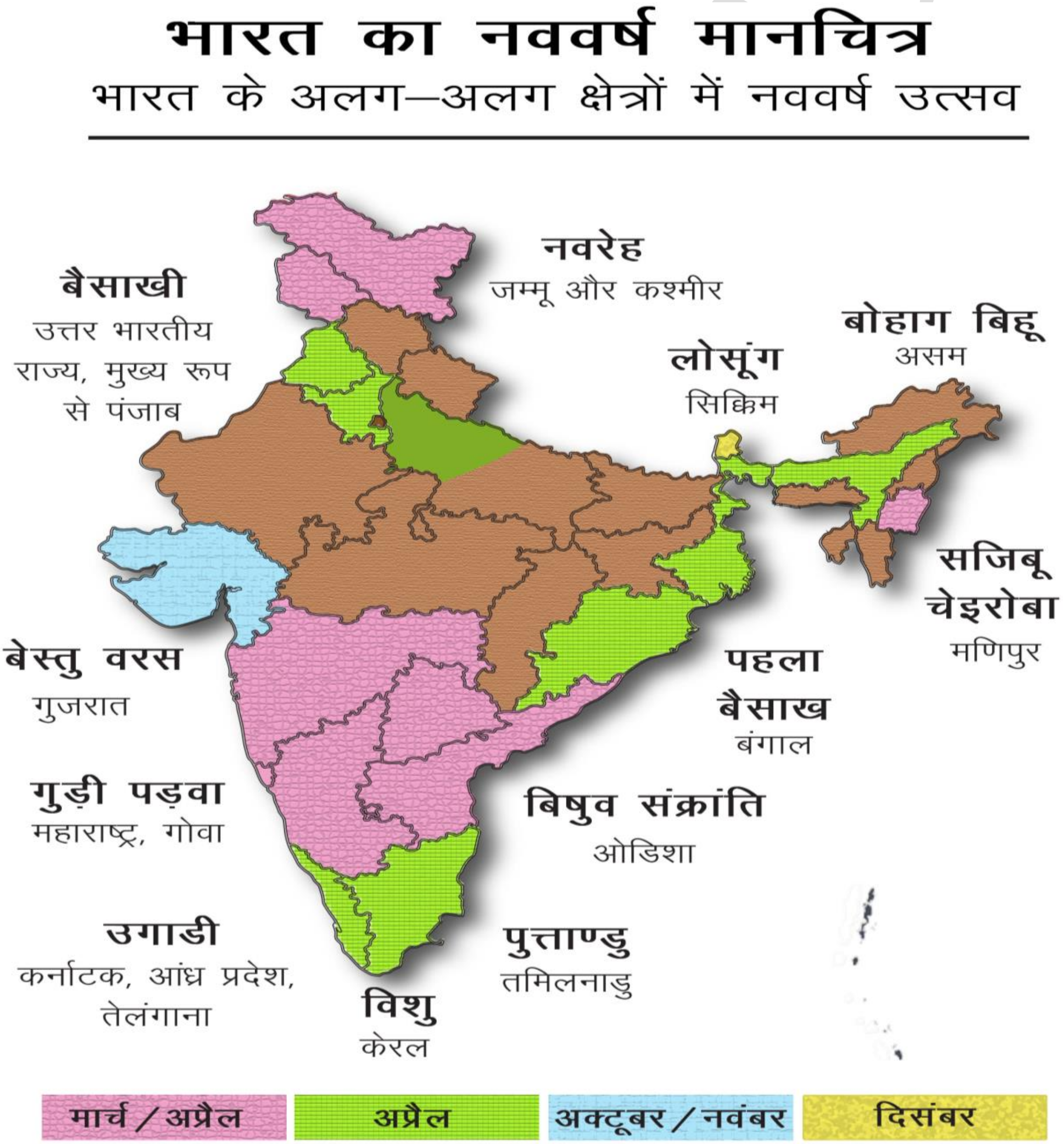

6.11.3. अन्य महत्वपूर्ण त्योहार (Other Important Festivals)

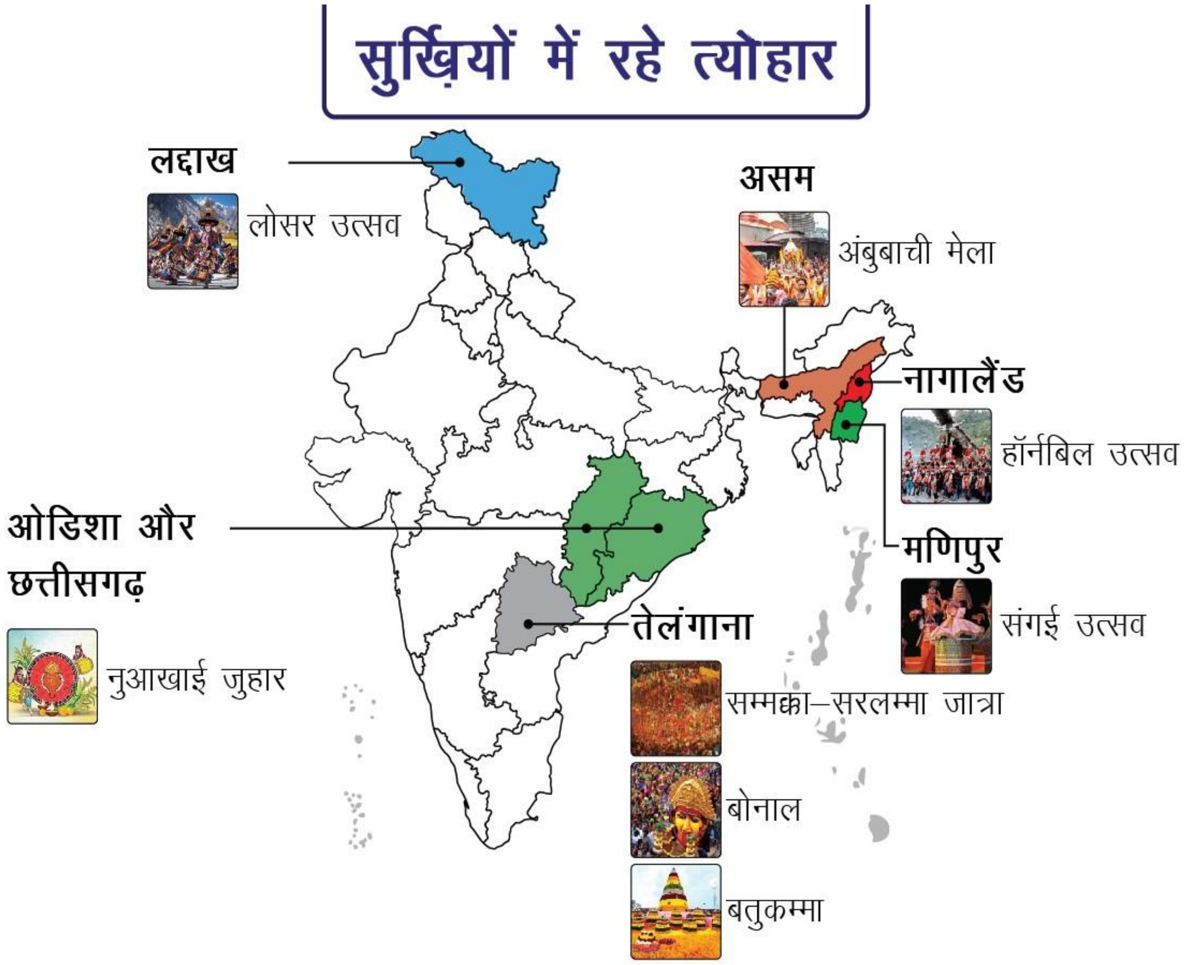

महोत्सव/त्योहार	विवरण
हॉर्नबिल महोत्सव (Hornbill Festival)	• यह नागालैंड में आयोजित किए जाने वाला एक महोत्सव है। • **हॉर्नबिल महोत्सव के बारे में** ○ इसे पहली बार **वर्ष 2000 में आयोजित** किया गया था। इसे **प्रतिवर्ष** मनाया जाता है। ○ यह नागालैंड की **देशज योद्धा जनजातियों के सबसे बड़े समारोहों में से एक** है। इस त्योहार का उद्देश्य **नागालैंड की समृद्ध संस्कृति को पुनर्जीवित करना और उसकी रक्षा** करना है। ○ इसका नाम हॉर्नबिल के नाम पर रखा गया है। **हॉर्नबिल एक उष्णकटिबंधीय पक्षी है।** यह आदिवासी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, गीतों और नृत्यों में परिलक्षित होता है।
सम्मक्का-सरलम्मा जात्रा	• सम्मक्का-सरलम्मा जात्रा को **मेदारम जात्रा** के नाम से भी जाना जाता है। यह एक जनजातीय त्योहार है। इसका आयोजन **तेलंगाना में प्रत्येक दो वर्षों** में किया जाता है। ○ यह तत्कालीन काकतीय वंश के शासकों के खिलाफ मां और बेटी की जोड़ी यानी सम्मक्का और सरलम्मा की बहादुरी की याद में मनाया जाता है। इन दोनों ने **गंभीर सूखे की स्थिति में भूमि कर की वसूली का विरोध किया था।** • कुंभ मेले के बाद यह **भारत का दूसरा सबसे बड़ा मेला** है। इसे **तेलंगाना के दूसरे सबसे बड़े समुदाय कोया जनजाति** द्वारा मनाया जाता है। ○ कोया एक **योद्धा जनजाति** है। यह **पूर्वी घाट के राज्यों जैसे- ओडिशा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना** आदि में निवास करती है। यह जनजाति पारंपरिक आजीविका के रूप में **पशुचारण और झूम खेती** में संलग्न है।

अंबुबाची मेला	• **असम के गुवाहाटी में स्थित कामाख्या मंदिर** में चार दिवसीय अंबुबाची मेले का शुभारम्भ हो गया है। इस मेले का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। ○ यह **देवी कामाख्या** (शक्तिपीठ) के **वार्षिक मासिक धर्म को चिह्नित** करने के लिए मनाया जाता है। ○ यह मेला **मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में जागरूकता को बढ़ावा** देने के उत्सव के रूप में भी लोकप्रिय है। • **कामाख्या मंदिर के बारे में:** ○ मंदिर **गुवाहाटी में नीलांचल पहाड़ियों** पर स्थित है। यह 52 शक्तिपीठों या शक्ति अनुयायियों के प्रमुख केंद्रों में से एक है। ○ इसे **तांत्रिक अनुष्ठानों के प्रमुख केंद्रों में से एक** माना जाता है।
लोसर उत्सव	• **प्रधान मंत्री** ने लोसर के अवसर पर **देशवासियों को शुभकामनाएं** दी हैं। • **लोसर लद्दाख का एक महत्वपूर्ण त्योहार** है। यह **तिब्बती बौद्ध धर्म के पारंपरिक शेड्यूल में तिब्बती नव वर्ष की शुरुआत** के अवसर पर मनाया जाता है। • इसका आयोजन **तिब्बत में पूर्व-बौद्ध युग** से किया जा रहा है। उस समय तिब्बत में **बोन धर्म** का अनुसरण किया जाता था। • उत्सव में **देवता और देवी के नाम पर प्रार्थना** की जाती है। इसके अलावा, **आइबेक्स के सम्मान में नृत्य और गीत तथा कैलाश पर्वत की तीर्थ यात्रा** शामिल है। आइबेक्स एक पहाड़ी बकरी है।
नुआखाई जुहार	• प्रधान मंत्री ने **नुआखाई जुहार पर्व के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दी हैं।** • यह चावल के नए सीजन के स्वागत के लिए एक त्योहार है। इसे **नुआखाई परब या नुआखाई भेटघाट** भी कहा जाता है। यह **ओडिशा, छत्तीसगढ़ और इनके पड़ोसी राज्यों** के कुछ क्षेत्रों में मनाया जाता है। • यह गणेश चतुर्थी त्योहार के अगले दिन **अगस्त-सितंबर माह के चंद्र पखवाड़े के पांचवें दिन** मनाया जाता है।
संगई महोत्सव (Sangai Festival)	• प्रधान मंत्री ने वीडियो संदेश के जरिए **मणिपुर संगाई महोत्सव** को संबोधित किया। • **संगई महोत्सव के बारे में** ○ इस महोत्सव का नाम **राजकीय पशु संगई के नाम पर** रखा गया है। यह **केवल मणिपुर** में पाया जाने वाला **ब्रो-एंटलर्ड डांसिंग डिअर है।** ○ संगई हिरण **केबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान** में पाया जाता है। इसे तैरते हुए **बायोमास पर देखा जाता** है, जिसे **'फुमदी'** कहा जाता है। ○ यह मणिपुर का सबसे बड़ा **वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव** है। इसका आयोजन प्रतिवर्ष **नवंबर** माह में किया जाता है। ○ **इस महोत्सव के दौरान स्थानीय लोग स्थानीय खेलों में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं, जैसे-** ▪ मणिपुर की प्रसिद्ध **मार्शल आर्ट: थांग टा** (भाला और तलवार कौशल का संयोजन); ▪ **सगोल कांगजेई:** पोलो का एक स्वदेशी रूप आदि।
नवरोज (पारसी नव वर्ष)	• **ज़रथुष्ट्र (Zoroastrian) पंचांग के प्रथम माह अर्थात फरवर्डिन के पहले दिन को नवरोज (नए के लिए 'नव' और दिवस के लिए 'रोज़') के रूप में मनाया जाता है। इसे पटेटी के रूप में भी जाना जाता है।** • **ईरानी पंचांग के अनुसार, इसे प्रत्येक वर्ष वसंत ऋतु के विषुव (21 मार्च) के दिन मनाया जाता है। परन्तु शहंशाही पंचांग (जिसे भारत में अपनाया गया है) के अनुसार, इसे जुलाई-अगस्त (इस वर्ष 16 अगस्त) में मनाया जाता है।** ○ **शहंशाही पंचांग की शुरुआत करने वाले फारसी शासक जमशेद की स्मृति में इसे जमशेद-ए-नवरोज़ के नाम से भी जाना जाता है।** • **यह यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल है।**
काशी तमिल संगमम	• हाल ही में, **शिक्षा मंत्रालय** ने एक माह तक चलने वाले **'काशी तमिल संगमम' कार्यक्रम** के आयोजन की घोषणा की है। यह कार्यक्रम वाराणसी और तमिलनाडु के बीच **सदियों पुराने ज्ञान के बंधन तथा प्राचीन सभ्यतागत संबंधों की पुनः खोज करेगा।** ○ इसका उद्देश्य **वाराणसी और तमिलनाडु के बीच गहरे शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करना है।** ○ **भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय** (BHU) इसके आयोजन के लिए एक **ज्ञान भागीदार** के रूप में कार्य करेंगे। • वाराणसी और तमिलनाडु दोनों **शिव मंदिरों** से भी जुडे हुए हैं, जैसे **तेनकासी (तमिलनाडु) में काशी विश्वनाथ मंदिर।** ○ इसे **पराक्रम पांडियन ने द्रविड़ शैली में** बनवाया था। इसे उन भक्तों के लिए बनाया गया था, जो काशी की यात्रा नहीं कर सकते थे। ○ यह स्वयंभू रूप में भगवान शिव को समर्पित है।

© Vision IAS

	○ तेनकासी को **दक्षिण की काशी** भी कहा जाता है। ○ यहां की **चित्तर नदी** को गंगा के समान पवित्र माना जाता है।

6.12. पुरस्कार एवं अवार्ड्स (Prizes and Awards)

संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी पुरस्कार (Sangeet Natak Akademi, Lalit Kala Akademi Awards)	• **संगीत नाटक अकादमी** ○ संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार **राष्ट्रीय सम्मान** हैं। इन्हें निष्पादन कला के क्षेत्र में प्रदर्शन करने वाले कलाकारों, शिक्षकों और विद्वानों को सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। ○ संगीत नाटक अकादमी देश में **निष्पादन कला** के क्षेत्र में सर्वोच्च संस्था के रूप में कार्यरत है। अकादमी को **वर्ष 1953** में स्थापित किया गया था। यह संगीत, नृत्य और नाटक के रूपों में व्यक्त भारत की विविध संस्कृति की समृद्ध अमूर्त विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन पर लक्षित है। • **ललित कला अकादमी** ○ **विजुअल आर्ट्स (दृश्य कला)** के क्षेत्र में उपलब्धियों को पहचानने के लिए ये पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ○ इसकी स्थापना नई दिल्ली में **वर्ष 1954** में की गई थी। ○ ललित कला अकादमी प्राचीन, आधुनिक और समकालीन भारतीय कलाओं के विभिन्न जटिल, मार्मिक एवं बहुस्तरीय रूपों को बड़े पैमाने पर स्थापित, संरक्षित व उनका दस्तावेजीकरण करती है। इस प्रकार उनके संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता प्रकट करती है
नोबेल शांति पुरस्कार, 2022 (Nobel Peace Prize 2022)	• **नॉर्वेजियन नोबेल समिति** वर्ष 2022 का नोबेल शांति पुरस्कार **एक व्यक्ति और दो संगठनों** को प्रदान करेगी। इन पुरस्कार विजेताओं में- ○ बेलारूस के मानवाधिकार अधिवक्ता **'एलेस बियालियात्स्की';** ○ रूसी मानवाधिकार संगठन **'मेमोरियल'** तथा ○ यूक्रेन का मानवाधिकार संगठन **'सेंटर फॉर सिविल लिबर्टीज'** शामिल हैं। • इन्हें **मानवतावादी मूल्यों, सैन्यवाद विरोधी और कानून के सिद्धांतों के पक्ष में इनके निरंतर प्रयासों** के लिए सम्मानित किया जा रहा है। • नोबेल शांति पुरस्कार **नॉर्वे की संसद द्वारा चुनी गई एक समिति प्रदान करती है।**
साहित्य में नोबेल पुरस्कार 2022 (Nobel Prize in Literature 2022)	• फ्रांसीसी लेखक **'एनी एर्नाक्स'** (Annie Ernaux) को उनकी एक रचना के लिए 2022 का **साहित्य का नोबेल पुरस्कार** दिया जाएगा। उनकी यह रचना **स्मृति, परिवार और समाज के अस्पष्ट पक्षों** पर प्रकाश डालती है। • साहित्य में नोबेल पुरस्कार **स्वीडिश अकादमी, स्टॉकहोम (स्वीडन)** द्वारा प्रदान किया जाता है। • **रवींद्रनाथ टैगोर 1913 में साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय और गैर-यूरोपीय थे।**
UNHCR नानसेन शरणार्थी पुरस्कार 2022 (UNHCR Nansen Refugee Award 2022)	• जर्मनी की पूर्व चांसलर **एंजेला मर्केल को UNHCR नानसेन शरणार्थी पुरस्कार 2022** से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार सीरियाई संकट के दौरान **शरणार्थियों की सुरक्षा हेतु** किए गए उनके कार्यों के लिए प्रदान किया जाएगा। • इस पुरस्कार को 1954 में स्थापित किया गया था। यह पुरस्कार शरणार्थियों और आंतरिक रूप से विस्थापित या राज्य विहीन लोगों की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाले **व्यक्तियों, समूहों या संगठनों** को दिया जाता है। ○ इसका नाम नॉर्वेजियन अन्वेषक, वैज्ञानिक, राजनयिक और मानवतावादी **'फ्रिडजॉफ नानसेन'** के नाम पर रखा गया है। ○ वह **लीग ऑफ नेशंस में शरणार्थियों के लिए पहले उच्चायुक्त** थे। उन्हें 1922 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ○ **प्रथम पुरस्कार विजेता:** एलेनोर रूजवेल्ट। वे **संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग** की प्रथम अध्यक्ष थीं।
यूनेस्को फेलिक्स हौफौएट-बोग्नी शांति पुरस्कार (UNESCO Felix Houphouet-	• जर्मनी की पूर्व चांसलर एंजेला मर्केल को **'शरणार्थियों के स्वागत के प्रयासों'** के लिए **यूनेस्को फेलिक्स हौफौएट-बोग्नी शांति पुरस्कार, 2022** से सम्मानित किया गया है।

Boigny Peace Prize)	• यह पुरस्कार **जीवित व्यक्तियों और सक्रिय सार्वजनिक या निजी निकायों या संस्थानों** को सम्मानित करता है।
	  ○ यह पुरस्कार उन लोगों या संस्थानों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र के चार्टर और यूनेस्को के संविधान के अनुरूप '**शांति' को बढ़ावा देने, खोजने, रक्षोपाय करने या बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान** दिया है।
	  ○ इस पुरस्कार की शुरुआत वर्ष 1989 में हुई थी।
	  ○ **प्रथम फेलिक्स हौफौएट-बोग्नी शांति पुरस्कार** वर्ष 1991 में 'नेल्सन मंडेला' और 'फ्रेडरिक डब्ल्यू डी क्लार्क' को दिया गया था

यूनेस्को-मदनजीत सिंह पुरस्कार (UNESCO-Madanjeet Singh Prize)	• यह पुरस्कार कैमरून के **फ्रांका मा-इह सुलेम योंग** को प्रदान किया गया है। • यह पुरस्कार **सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा** देने के लिए दिया जाता है। **यह व्यक्तियों या संस्थानों को कला, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान और संचार के माध्यम** से उनके असाधारण योगदान के लिए **हर दो साल** में दिया जाता है। ○ पुरस्कार का नाम **इसके संरक्षक, पूर्व भारतीय कलाकार, लेखक और राजनयिक,** मदनजीत सिंह (1924-2013) के नाम पर रखा गया है, जो **यूनेस्को के गुडविल एम्बेसडर भी थे। यह पुरस्कार यूनेस्को द्वारा प्रबंधित किया जाता है।**

इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार (Indira Gandhi Prize For Peace, Disarmament and Development)	• **वर्ष 2021** का इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत एक गैर-सरकारी संगठन **'प्रथम'** को दिया गया है।
	  ○ 'प्रथम' को यह यह पुरस्कार **विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के कार्य के लिए दिया गया है।** है।
	• इस पुरस्कार को **पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की स्मृति में** स्थापित किया गया है। इस पुरस्कार में एक **प्रशस्ति-पत्र के साथ 25 लाख रुपये की राशि** दी जाती है।
	  ○ यह पुरस्कार इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट **व्यक्तियों या संगठनों को प्रतिवर्ष** प्रदान करता है।

गांधी मंडेला पुरस्कार	• वर्ष 2022 का गांधी मंडेला पुरस्कार **14वें दलाई लामा को प्रदान किया गया है।**
	• इस पुरस्कार को **गांधी मंडेला फाउंडेशन** ने स्थापित किया है। यह पुरस्कार महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला के मूल्यों एवं आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार **शांति, समाज कल्याण, संस्कृति, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, खेल तथा नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों के लिए प्रदान** किया जाता है।
	  ○ गांधी मंडेला फाउंडेशन **भारत सरकार द्वारा पंजीकृत ट्रस्ट और एक गैर-लाभकारी संगठन है।**
	  ○ इस फाउंडेशन ने **महात्मा गांधी की 150वीं जयंती** पर इस पुरस्कार की स्थापना की थी।

थॉमस कप (Thomas Cup)	• **भारत ने** फाइनल में **इंडोनेशिया** को 3-0 से हराकर **अपना पहला थॉमस कप खिताब जीत लिया है।** • थॉमस कप एक **अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता** है। इसकी शुरुआत वर्ष 1948 में हुई थी। इसमें प्रतिस्पर्धा करने वाली 16 टीमें बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन (BWF) के सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। • इसकी **शुरुआत** इंग्लैंड के दिग्गज बैडमिंटन खिलाड़ी **सर जॉर्ज एलन थॉमस ने** की थी। • सबसे ज्यादा खिताब जीतने वाली तीन टीमें **इंडोनेशिया (14), चीन (10) और मलेशिया (5) हैं।** ○ **डेनमार्क** थॉमस कप जीतने वाला **पहला गैर-एशियाई देश था।**
लॉरियस वर्ल्ड स्पोर्ट्स अवार्ड (Laureus World Sports Award)	• **मैक्स वेरस्टैपेन** (फॉर्मूला वन) और **एलेन थॉम्पसन-हेरा** (एथलेटिक्स) को क्रमशः **लॉरियस वर्ल्ड स्पोर्ट्समैन और स्पोर्ट्सवुमेन ऑफ द ईयर (2021)** नामित किया गया है। • इस पुरस्कार की शुरुआत वर्ष 2000 में की गई थी। इसके वार्षिक आयोजन में **वर्ष के दौरान खेलों में सबसे बड़ी और सबसे प्रेरणादायक जीत को सम्मान प्रदान किया जाता है।** यह पुरस्कार लॉरियस स्पोर्ट फॉर गुड के कार्य को प्रदर्शित करता है। ○ **यह पुरस्कार छह श्रेणियों** (स्पोर्ट्स वीमेन, स्पोर्ट्स मैन, टीम, ब्रेकथ्रू, कमबैक और एक्शन) में दिया जाता है।

	• अमेरिकी गोल्फर **टाइगर वुड्स वर्ष 2000 में इसके प्रथम विजेता थे।** • विजेता सूची में **टेनिस खिलाड़ी (11 बार),** एथलीट (4) और फॉर्मूला वन ड्राइवर (4) का **वर्चस्व रहा है।** • यह पुरस्कार **अधिकतम (6) बार रोजर फेडरर को मिला है।**

6.13. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News)

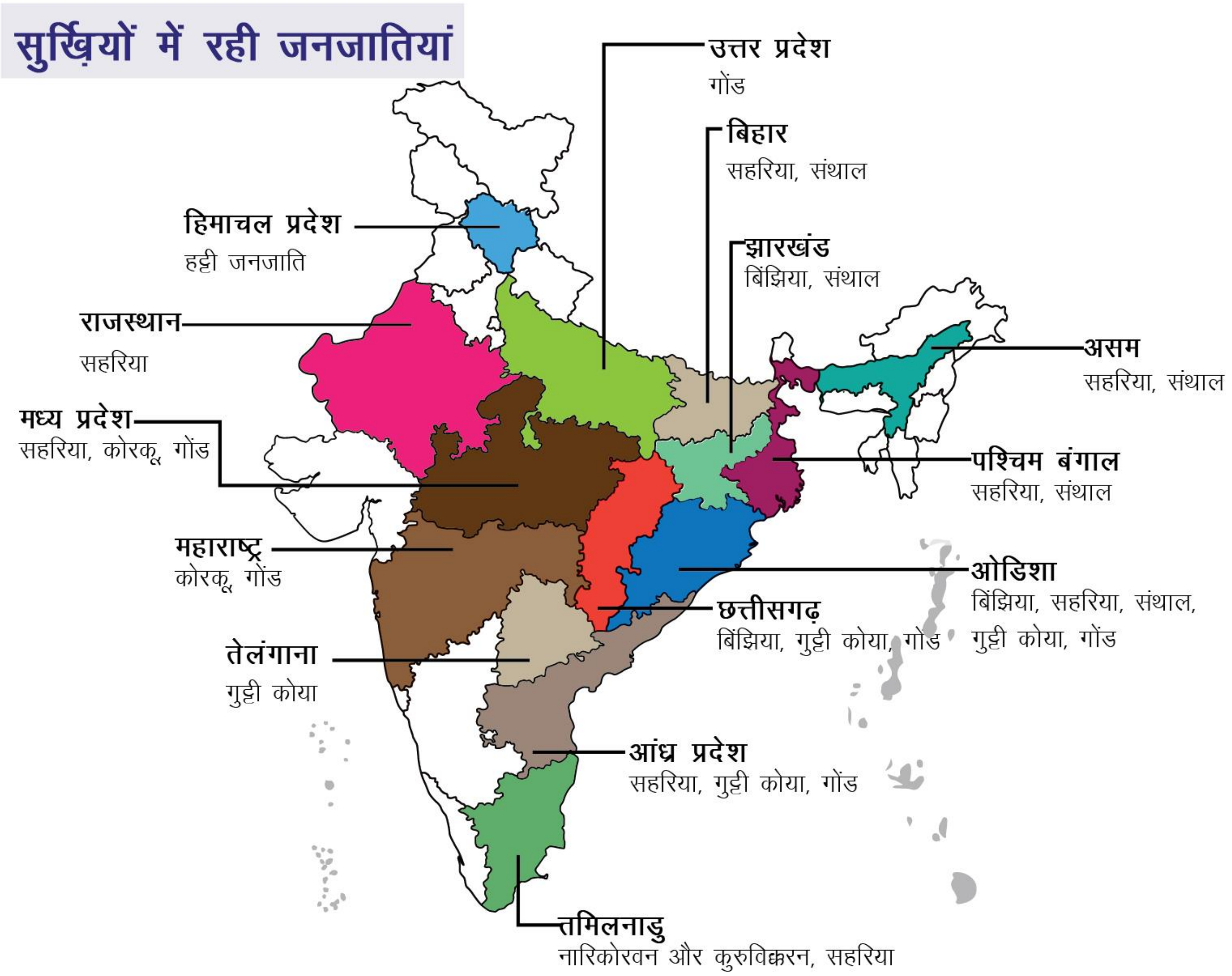

अनुसूचित जनजाति सूची में संशोधन {Revisions in Schedule Tribes (STS) Lists}	• हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (संशोधन) विधेयक, 2022 को मंजूरी दी है। इस विधेयक ने **चार जनजातियों को अनुसूचित जनजाति (ST) सूची** में शामिल किया है।
	• अनुसूचित जनजाति (ST) सूची में शामिल नई जनजातियां हैं: **हिमाचल प्रदेश** के ट्रांस-गिरी क्षेत्र की **हट्टी जनजाति, तमिलनाडु** के पर्वतीय इलाकों में रहने वाली **नारिकोरावन और कुरुविक्करन जनजाति और छत्तीसगढ़ का बिंझिया समुदाय।**
	  ○ हट्टी एक **घनिष्ठ समुदाय** है। इस समुदाय ने कस्बों में 'हाट' नामक छोटे बाजारों में घरेलू सब्जियां, फसल, मांस और ऊन आदि बेचने की अपनी परंपरा से अपना नाम प्राप्त किया है।
	  ○ **नारिकोरावन (सियार पकड़ने वाले) और कुरुविक्करन (पक्षी खाने वाले) घुमंतू** आदिवासी समुदाय हैं।
	  ○ **बिंझिया, ओडिशा और झारखंड** में पाए जाने वाला नृजातीय समुदाय है। इस समुदाय में परंपरा और संस्कृति की समृद्ध विरासत देखने को मिलती है।

सहरिया जनजाति	• **खाद्य पदार्थों की महंगाई ने सहरिया जनजाति को अत्यधिक सुभेद्य बना दिया है।** • **सहरिआ, सहर, सेहरिया, या सहरिया मध्य प्रदेश राज्य में एक नृजातीय समूह है।**

	○ इन्हें **विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)** के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह जनजाति **राजस्थान, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल व असम** में निवास करती है। • **ये मुंडा भाषा बोलते हैं, जो ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा परिवार से संबंधित है।** • ये पहाड़ी ढलानों पर कृषि में **"स्लेश एंड बर्न (कटाई एवं दहन)" पद्धति** का उपयोग करती हैं। ○ मुख्य फसलों में **लौकी, बाजरा, ज्वार और जंगली चावल** शामिल हैं।
संथाल जनजाति	• नवनिर्वाचित **राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का संबंध संथाल जनजाति** से है। • **संथाल जनजाति के बारे में** ○ यह देश में **तीसरा सबसे बड़ा अनुसूचित जनजाति** समुदाय है। ○ इनकी ज्यादातर आबादी **ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल** राज्यों में निवास करती है। ○ संथाल जनजाति के लोग **संथाली भाषा बोलते** हैं। यह भाषा ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा परिवार से संबंधित है। ○ **त्योहार:** करम उत्सव, माघे, बाबा बोंगा, सहराई, एरो, असरिया एवं नमः और दिसुमेंद्र। ○ संथालों ने **वर्ष 1855-56 में ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध संथाल विद्रोह (हुल) किया था।** ○ **ओलचिकी** संथालों की **अपनी लिपि है।** इसे वर्ष 1925 में **डॉ रघुनाथ मुर्मू** ने विकसित किया था।
गुट्टी कोया आदिवासी (Gutti Koya Tribals)	• **गुट्टी कोया आदिवासियों के एक समूह ने** एक वन रेंज अधिकारी की हत्या कर दी है। • **गुट्टी कोया आदिवासी समुदाय के बारे में -** ○ कोया एक भारतीय आदिवासी समुदाय है। यह **आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और ओडिशा राज्यों में पाया जाता है।** ○ ये समुदाय **कोया भाषा** बोलते हैं। कोया भाषा **गोंडी से संबंधित एक द्रविड़ भाषा है।** • 1880 ई. में ब्रिटिश काल के दौरान, एक **कोया युवा 'तामा डोरा' के नेतृत्व में कोया विद्रोह हुआ था।**
कोरकू जनजाति	• कोरकू जनजाति ने **झरोखा में कोरकू आदिवासी लोक नृत्य** का प्रदर्शन किया। झरोखा भारतीय हस्तकला, हथकरघा, कला और संस्कृति का संग्रह है। • कोरकू **मध्य भारत** की एक **जनजाति** है। यह जनजाति **मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र** राज्य में निवास करती है। • **सामाजिक संरचना:** कोरकू जनजातीय समुदाय चार क्षेत्रीय समूहों में विभाजित है। इसमें प्रत्येक उप-समूह एक **जनजातीय ग्राम परिषद** द्वारा शासित है, जिसका प्रमुख **पटेल (ग्राम मुखिया)** होता है। ○ **जय-पटेल, पटेल** से ऊपर एक मुखिया होता है। इसका अधिकार-क्षेत्र कई **कोरकू गांवों** तक होता है। • इस जनजाति के लोग त्योहारों पर **प्रकृति की पूजा करते** हैं। इनकी धार्मिक मान्यताओं पर हिंदू धर्म का प्रभाव दिखाई पड़ता है। • ये **लोग कोरकू भाषा बोलते हैं। यह भाषा भारत में 196 लुप्तप्राय भाषाओं** में से एक है।
गोंड जनजाति	• राज्य सभा ने **उत्तर प्रदेश के चार जिलों में 'गोंड समुदाय' को अनुसूचित जाति की सूची से अनुसूचित जनजाति की सूची में स्थानांतरित करने संबंधी विधेयक को स्वीकृति** प्रदान कर दी है। • गोंड **मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में रहने वाले सबसे बड़े जनजातीय समूहों** में से एक हैं। ये महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में भी निवास करते हैं। • ये **ज्यादातर किसान और प्रकृति पूजक** हैं। • इस जनजाति के **लोग गोंडी भाषा** बोलते हैं। यह **द्रविड़ भाषा परिवार** से संबंधित है।

6.14. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

चापेकर बंधुओं का मामला	• **22 जून, 1897** को चापेकर बंधुओं ने महाराष्ट्र के पुणे में ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू.सी. रैंड और उनकी सैन्य सुरक्षा में तैनात लेफ्टिनेंट आयर्स्ट की हत्या कर दी थी। • **दामोदर हरि चापेकर, बालकृष्ण हरि चापेकर और वासुदेव हरि चापेकर** को **चापेकर बंधुओं** के नाम से जाना जाता था। ये 19वीं सदी के उत्तरार्ध में **डब्ल्यू.सी. रैंड की हत्या** में शामिल भारतीय क्रांतिकारी थे। ○ इस हत्याकांड में **महादेव विनायक रानाडे** भी उनके सहयोगी थे। ○ 1857 के विद्रोह के बाद **भारत में उग्रवादी राष्ट्रवाद का यह पहला मामला** था। • 1896-97 के दौरान पुणे (पूना) में **बुबोनिक प्लेग** फैला था। इसे **पूना प्लेग** भी कहा जाता है।

© Vision IAS

	○ सरकार ने प्लेग के खतरे से निपटने और बीमारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1897 में एक **विशेष प्लेग समिति** की स्थापना की थी। **चार्ल्स वाल्टर रैंड (डब्ल्यू.सी. रैंड) इस समिति के अध्यक्ष थे।** ○ रैंड आयोग के निरंतर उत्पीड़न ने चापेकर बंधुओं और क्रांतिकारी **"चापेकर क्लब"** के अन्य सदस्यों को रैंड के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया। • चापेकर बंधुओं ने **शारीरिक और सैन्य प्रशिक्षण के लिए "चापेकर क्लब"** नामक एक क्रांतिकारी संगठन गठित किया था।
केंद्रीय पुरातत्व सलाहकार बोर्ड (Central Advisory Board On Archaeology: CABA)	• हाल ही में, **केंद्रीय पुरातत्व सलाहकार बोर्ड (CABA)** का **पुनर्गठन किया गया है।** • **इसके निम्नलिखित कार्य होंगे:** ○ पुरातत्व से संबंधित मामलों पर **केंद्र सरकार को सलाह देना,** ○ पुरातत्व अनुसंधान का संचालन करने वाले भारतीय विश्वविद्यालयों एवं पुरातात्विक अध्ययन करने वाले अन्य संस्थानों तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के **बीच घनिष्ठ संपर्क को बढ़ावा देना,** ○ **भविष्य के पुरातत्वविदों को प्रशिक्षण देना,** ○ ASI गतिविधियों के साथ **राज्य सरकारों को व्यापक सहयोग देना।** • **संस्कृति मंत्री इसके अध्यक्ष होंगे।** अन्य सदस्यों में संस्कृति मंत्रालय और ASI के अधिकारी, सांसद, राज्य सरकारों द्वारा नामित प्रतिनिधि आदि शामिल होंगे। • बोर्ड की **बैठक वर्ष में एक बार** आयोजित होगी।
धरोहर उप-नियम (Heritage By-Laws: HBL)	• NMA ने कोविड अवधि (वर्ष 2019 के बाद से) के दौरान **101 धरोहर उप-नियम (HBL) बनाए हैं।** इनमें केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित कुल 126 स्मारकों को शामिल किया गया है। • **प्राचीन संस्मारक एवं पुरातात्विक स्थल और अवशेष (AMASR) (संशोधन और सत्यापन) अधिनियम, 2010** ने केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित सभी स्मारकों के लिए अपने स्वयं के HBL होना अनिवार्य कर दिया है। ○ HBL **स्मारकों के आसपास संपत्ति और व्यक्तिगत संवृद्धि को विनियमित** करने में मदद करेगा। • **AMASR अधिनियम के तहत संरक्षित स्मारकों के 100 मीटर के दायरे में केवल मरम्मत कार्यों की अनुमति दी जाती है।** • **100 मीटर से 300 मीटर के बीच के क्षेत्र में निर्माण कार्यों को विनियमित करने के लिए HBLs लागू करने चाहिए।** ○ **HBLs स्मारकों के आसपास संपत्ति और अन्य विकास को विनियमित करने में मदद करेंगे।** ○ **HBLs का काम 2012 तक पूरा होना था।**
प्रोजेक्ट वाणी (Project Vanni)	• **गूगल इंडिया** ने इस पहल के लिए **भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc)** के साथ मिलकर काम किया है। • इसका उद्देश्य **संपूर्ण भारत के 773 जिलों से वहां बोली जाने वाली भाषाओं के नमूने एकत्र करने के लिए एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता/ मशीन लर्निंग (AI/ML) मॉडल** का निर्माण करना है। ○ यह **AI-आधारित भाषा मॉडल** होगा, जो विविध भारतीय भाषाओं और बोलियों को समझ सकता है। ○ ऐसे डेटासेट का संभावित उपयोग **स्वास्थ्य, कृषि और वित्तीय समावेशन** जैसे क्षेत्रकों में एप्स बनाने के लिए किया जा सकता है।
मुंबई समाचार (Mumbai Samachar)	• प्रधान मंत्री ने मुंबई में 'मुंबई समाचार' के **'द्विशताब्दी महोत्सव'** में भाग लिया। उन्होंने इस अवसर पर **एक डाक टिकट भी जारी** किया। • **मुंबई समाचार (जिसे पहले बॉम्बे समाचार कहा जाता था) के बारे में:** ○ यह एक **गुजराती अखबार** है। इसका कार्यालय मुंबई के फोर्ट क्षेत्र में स्थित है। इसे **पहली बार 1822 ई. में प्रकाशित** किया गया था। ○ इसकी स्थापना एक पारसी विद्वान **'फरदूनजी मुराज़बान'** ने की थी। ○ यह एक **साप्ताहिक संस्करण** के रूप में शुरू हुआ था। यह मुख्य रूप से **समुद्र पार माल की आवाजाही** और अन्य **व्यावसायिक ख़बरों** को प्रकाशित करता है। ○ यह अखबार **200 वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा है।**

हुंडी	• आंध्र प्रदेश के तिरुपति में स्थित **भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर में चालू वित्त वर्ष में हुंडियां 1,000 करोड़ की संख्या को पार** कर गई हैं। • हुंडी एक तरह के ड्रॉपबॉक्स हैं, जहां उपासक देवी-देवताओं के लिए **भौतिक भेंट के प्रतीक के रूप में धन** डालते हैं। • भारतीय उपमहाद्वीप में हुंडी का इस्तेमाल पहले व्यापार और ऋण के लेन-देन में **वित्तीय साधन के रूप में** किया जाता था। ○ **इनका इस्तेमाल विप्रेषण** के साधन, **ऋण या व्यापार लेन-देन** के लिए (विनिमय विपत्र के रूप में) भी किया जाता था।
हरिजन सेवक संघ (HSS)	• हाल ही में, **हरिजन सेवक संघ का 90वां स्थापना दिवस** मनाया गया है। • HSS को अखिल भारतीय **अस्पृश्यता विरोधी लीग** के रूप में भी जाना जाता है। इसकी स्थापना **महात्मा गांधी ने वर्ष 1932 में अस्पृश्यता उन्मूलन** के लिए की थी। • इसके संस्थापक **अध्यक्ष घनश्यामदास बिड़ला और सचिव अमृतलाल ठक्कर** थे। • हरिजन सेवक संघ का उद्देश्य **सत्य और अहिंसक तरीकों से हिंदू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता का उन्मूलन** करना था।
मेइती या मैतेई माएक लिपि (Meetei Mayek Script)	• मणिपुर के समाचार-पत्रों को **बंगाली लिपि का उपयोग करने की बजाय मैतेई मायेक लिपि** का इस्तेमाल करने के लिए कहा गया है। • साहित्य अकादमी के अनुसार, मैतेई मायेक लिपि **छठी शताब्दी से प्रचलित** थी। इस **लिपि का इस्तेमाल 18वीं शताब्दी तक** किया जाता था। • 18वीं शताब्दी में मणिपुर पर शासन करने वाले **निंगथौ पम्हेइबा** के आदेश पर मैतेई लिपि में लिखी सभी पुस्तकों को सामूहिक रूप से जला दिया गया था। **इसके परिणामस्वरूप यह लिपि लगभग विलुप्त हो** गई थी।

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

8 IN TOP 10 SELECTIONS IN CSE 2021

from various programs of VisionIAS

2 AIR ANKITA AGARWAL

3 AIR GAMINI SINGLA

4 AIR AISHWARYA VERMA

5 AIR UTKARSH DWIVEDI

6 AIR YAKSH CHAUDHARY

CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

1 AIR SHUBHAM KUMAR

7 AIR SAMYAK S JAIN

8 AIR ISHITA RATHI

9 AIR PREETAM KUMAR

YOU CAN BE NEXT

ABHYAAS 2023
ALL INDIA PRELIMS
(GS+CSAT)
MOCK TEST SERIES

3 TEST

TEST-1	TEST-2	TEST-3
2 APRIL	23 APRIL	7 MAY

- All India Ranking
- Comprehensive Evaluation, Feedback & Corrective Measures
- Available In ENGLISH / हिन्दी

Register @ www.visionias.in/abhyaas

OFFLINE* IN 170+ CITIES

AGARTALA | AGRA | AHMADNAGAR | AHMEDABAD | AIZAWL | AJMER | ALIGARH | ALMORA | ALWAR | AMARAVATI (ANDHRA PRADESH) | AMBALA | AMBIKAPUR | AMRAVATI (MAHARASHTRA) | AMRITSAR | ANANTHAPURU | ASANSOL | AURANGABAD (MAHARASHTRA) | AYODHYA | BALLIA | BANDA | BAREILLY | BATHINDA | BEGUSARAI BENGALURU | BHAGALPUR | BHAVNAGAR | BHILAI | BHILWARA | BHOPAL | BHUBANESWAR | BIKANER | BILASPUR | BOKARO | BULANDSHAHR | CHANDIGARH | CHANDRAPUR CHENNAI | CHHATARPUR (MP) | CHITTOOR | COIMBATORE | CUTTACK | DAVANAGERE | DEHRADUN | DELHI-MUKHERJEE NAGAR | DELHI-RAJINDER NAGAR | DHANBAD DHARAMSHALA | DHARWAD | DHULE | DIBRUGARH | DIMAPUR | DURGAPUR | ETAWAH | FARIDABAD | FATEHPUR | GANGTOK | GAYA | GHAZIABAD | GORAKHPUR | GR NOIDA GUNTUR | GURDASPUR | GURUGRAM (GURGAON) | GUWAHATI | GWALIOR | HALDWANI | HARIDWAR | HAZARIBAGH | HISAR | HOWRAH | HYDERABAD | IMPHAL | INDORE ITANAGAR | JABALPUR | JAIPUR | JAISALMER | JALANDHAR | JAMMU | JAMNAGAR | JAMSHEDPUR | JAUNPUR | JHAJJAR | JHANSI | JODHPUR | JORHAT | KAKINADA KALBURGI (GULBARGA) | KANNUR | KANPUR | KARIMNAGAR | KARNAL | KASHIPUR | KOCHI | KOHIMA | KOLHAPUR | KOLKATA | KORBA | KOTA | KOTTAYAM | KOZHIKODE (CALICUT) | KURNOOL | KURUKSHETRA | LATUR | LEH | LUCKNOW | LUDHIANA | MADURAI (TAMIL NADU) | MANDI | MANGALURU | MATHURA | MEERUT | MIRZAPUR MORADABAD | MUMBAI | MUNGER | MUZAFFARPUR | MYSURU | NAGPUR | NALANDA | NASIK | NAVI MUMBAI | NELLORE | NIZAMABAD | NOIDA | ORAI | PALAKKAD | PANAJI (GOA) | PANIPAT | PATIALA | PATNA | PRAYAGRAJ (ALLAHABAD) | PUDUCHERRY | PUNE | PURNIA | RAIPUR | RAJKOT | RANCHI | RATLAM | REWA | ROHTAK | ROORKEE ROURKELA | RUDRAPUR | SAGAR | SAMBALPUR | SATARA | SAWAI | MADHOPUR | SECUNDERABAD | SHILLONG | SHIMLA | SILIGURI | SIWAN | SOLAPUR | SONIPAT SRINAGAR | SURAT | THANE | THANJAVUR | THIRUVANANTHAPURAM | THRISSUR | TIRUCHIRAPALLI | TIRUNELVELI | TIRUPATI | UDAIPUR | UJJAIN | VADODRA | VARANASI VELLORE | VIJAYAWADA | VISAKHAPATNAM | WARANGAL

HEAD OFFICE Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate 6, Karol Bagh Metro Station

8468022022 WWW.VISIONIAS.IN

JAIPUR | HYDERABAD | BHOPAL | GUWAHATI | RANCHI | LUCKNOW | PUNE | AHMEDABAD | CHANDIGARH | PRAYAGRAJ